प्राकृत काव्य-मंजरी

डा. प्रेम सुमन जैन

राजस्थान
प्राकृत भारती संस्थान
जयपुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत भारती पुष्प—१३

प्राकृत काव्य-मंजरी

लेखक एवं सम्पादक
डॉ० प्रेम सुमन जैन
सह-आचार्य एवं अध्यक्ष
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
उदयपुर विश्वविद्यालय

राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान
जयपुर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :

देवेन्द्रराज मेहता

सचिव, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान,

जयपुर

O

प्रथम संस्करण 1982

O

मूल्य : १६-०० रुपये

O

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

O

प्राप्ति स्थान :

राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान

यति श्यामलालजी का उपाश्रय

मोतीसिंह भोमियों का रास्ता

जयपुर-302 003 [राजस्थान]

O

मुद्रक :

ऋषभ मुद्रणालय

धानमण्डी, उदयपुर

PRAKRIT KAVYA-MANJARI

(Grammar & Text Book)

by

Prem Suman Jain/Jaipur/1982

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा एवं साहित्य के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन एवं प्राकृत भाषा का प्रचार तथा प्रसार करना प्राकृत भारती संस्थान के प्रमुख कार्य हैं। इसी दिशा में संस्थान से डॉ. प्रेम सुमन जैन द्वारा लिखित 'प्राकृत स्वयं-शिक्षक खण्ड १' नामक पुस्तक 1979 में प्रकाशित की गयी थी। 1982 में इस पुस्तक का पुनर्मुद्रित संस्करण भी निकल चुका है। यह पुस्तक प्राकृत के जिज्ञासु पाठकों और विश्वविद्यालयों में समादृत हुई है। संस्थान का उद्देश्य है कि प्राकृत का शिक्षण स्कूली शिक्षा से भी प्रारम्भ हो। संयोग से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर ने प्राकृत भाषा को वैकल्पिक विषय के रूप में अपने सैकण्डरी पाठ्यक्रम में स्वीकृत किया है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों को प्राकृत की पुस्तकें उपलब्ध हो सकें इसके लिए इस संस्थान ने डॉ. प्रेम सुमन जैन से 'प्राकृत काव्य-मंजरी' एवं 'प्राकृत गद्य-सोपान' ये दो पुस्तकें तैयार कर देने का आग्रह किया था। हमें प्रसन्नता है कि डॉ. जैन की प्राकृत काव्य-मंजरी हम पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्राकृत काव्य-मंजरी अजमेर बोर्ड के कक्षा 9 एवं 10 के प्राकृत-पाठ्यक्रम के अनुसार तो है ही, साथ ही यह प्राकृत का शिक्षण करने-कराने वाले किसी भी संस्थान अथवा परीक्षा-बोर्ड के लिए भी उपयोगी पुस्तक सिद्ध होगी। एक ओर यह पुस्तक प्राकृत भाषा एवं काव्य साहित्य का ज्ञान कराती है तो दूसरी ओर इसके विषय विद्यार्थियों में नैतिक आचरण एवं अनुशासित जीवन की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। अत यह पुस्तक प्रत्येक प्राकृत-प्रेमी के लिए ग्राह्य और उपयोगी होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। प्राकृत के प्रचार-प्रसार की दिशा में इस पुस्तक के लेखक व सम्पादक डॉ. प्रेम सुमन जैन जो प्रयत्न कर रहे हैं उसके लिए उन्हें बधाई है। प्रस्तुत पुस्तक के मुद्रण में भी लेखक ने जो श्रम किया है, उसके लिए संस्थान उनका आभारी है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक के इस प्रकाशन-कार्य में संस्थान के संयुक्त सचिव एवं जैन साहित्य के मनीषी महोपाध्याय श्री विनय सागर जी ने जो प्रयत्न किया है, उसके लिए संस्थान उनका भी आभारी है।

पुस्तक के शीघ्र एवं सुन्दर मुद्रण-कार्य हेतु संस्थान ऋषभ मुद्रणालय, उदयपुर के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करता है।

देवेन्द्रराज मेहता
सचिव
राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान
जयपुर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

प्राकृत भाषा एवं साहित्य का पठन-पाठन कुछ वर्षों से विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों में भी प्रारम्भ हुआ है। सामाजिक संस्थानों के परीक्षा-बोर्डों में भी प्राकृत का शिक्षण एक प्रमुख विषय है। किंतु प्राकृत सीखने के लिये प्रारम्भिक स्तर पर आधुनिक शैली की प्राकृत की कोई पाठ्यपुस्तक उपलब्ध नहीं थी। विद्वानों ने कुछ पुस्तकें बहुत पहले तैयार की थीं। वे अप्राप्य हो गयी थीं। अतः इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्राकृत पद्य एवं गद्य की दो पाठ्यपुस्तकें तैयार करने की योजना बनायी गयी। इसी बीच में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर की प्राकृत-पाठ्यक्रम समिति ने कक्षा ९ एवं १० के लिए प्राकृत का एक पाठ्यक्रम तैयार किया। बोर्ड ने उसे राजस्थान के स्कूलों में लागू करने के लिए अपनी अनुशंसा की है। आशा है कि शीघ्र ही प्राकृत विषय माध्यमिक स्तर पर प्रारम्भ किया जा सकेगा। बोर्ड के इस प्राकृत के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए हमने **प्राकृत काव्य-मंजरी** एवं **प्राकृत गद्य-सोपान** ये दो पुस्तकें तैयार की हैं। उनमें से प्रथम पुस्तक पाठकों के हाथों में है।

प्रस्तुतिकरण

- इस प्राकृत काव्य-मंजरी में प्राकृत के प्रतिनिधि पद्यग्रंथों में से सामग्री का चयन नवीनता, स्तर की अनुकूलता एवं विषय वैविध्य की दृष्टि से किया गया है।

- पद्य के पाठ ऐसे चुने गये हैं, जो कि सरल, सार्वभौमिक, और शिक्षा-परक हैं। उनसे विद्यार्थियों के सदाचरण के निर्माण में मदद मिलती है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

- प्राकृत साहित्य कथाओं का भण्डार है। अतः प्रस्तुत संकलन में अधिकांश कथात्मक पद्यांश चुने गये हैं। कुछ मुक्तक-काव्य दिये गये हैं तथा राजस्थान के प्राकृत के शिलालेख से भी विद्यार्थियों को परिचित कराया गया है।

- प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ में पाठ-परिचय में ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार के सम्बन्ध में विवरण देकर पाठ की विषयवस्तु को स्पष्ट किया गया है।

- प्राकृत-शिक्षण की यह प्रारम्भिक पुस्तक होने के कारण प्रारम्भ में प्राकृत-व्याकरण को अभ्यास के द्वारा समझाया गया है।

- व्याकरण-ज्ञान के नियम अभ्यास के बाद दिये गये हैं, ताकि विद्यार्थियों में रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर प्रयोग की प्रवृत्ति विकसित हो सके।

- कारकों (विभक्तियों) का ज्ञान कराने के लिये प्राकृत-गद्य में छोटे-छोटे पाठ तैयार कर दिये गये हैं। इन पाठों से विद्यार्थी विभक्ति-ज्ञान के साथ-साथ दैनिक व्यवहार के आचरण से भी परिचित हो सकेंगे।

- संधि-समास, कृदन्त, सामान्य कर्मणि-प्रयोगों के लिए अलग पाठ दिये गये हैं।

- मूल-पाठों (११ से ३१) के साथ अभ्यास में व्याकरण ज्ञान के साथ वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्न देकर विद्यार्थियों की बुद्धि-परीक्षण का प्रयत्न किया गया है।

- प्राकृत भाषा एवं प्राकृत काव्य-साहित्य के इतिहास की जानकारी के लिये संक्षेप में मूल पाठों के बाद एक विवरण दे दिया गया है।

- उसके के बाद परिशिष्ट में सर्वनाम, संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त की चारिकाएं दी गयी हैं।

- प्राकृत पाठों का अर्थ स्वतन्त्र रूप से और सही किया जाय इस दृष्टि से पाठों का हिन्दी अनुवाद भी दे दिया गया है। प्राकृत के शब्दकोश एवं अन्य सहायक-सामग्री उपलब्ध न होने से यह अनुवाद विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए उपयोगी होगा। अनुवाद को मूलानुगामी बनाने का प्रयत्न किया गया है। अन्य शब्द कोष्ठक में दे दिये गये हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

- पुस्तक के अन्त में कुछ अपठित पद्यांश भी दे दिये गये हैं, जो विद्यार्थियों के प्राकृत के ज्ञान-परीक्षण के लिए उपयोगी हैं।

इस तरह 'प्राकृत काव्य-मंजरी' को सरल, रोचक और विषय की दृष्टि से ज्ञानवर्द्धक बनाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक अजमेर बोर्ड के प्राकृत पाठ्यक्रम की आवश्यकता की तो पूर्ति करती ही है। किंतु इसे अन्य परीक्षा बोर्डों में भी प्राकृत-शिक्षण के लिए निर्धारित किया जा सकता है।

पुस्तक के कुछ पाठों में अर्धमागधी एवं शौरसेनी प्राकृत के भी प्रयोग हैं। शब्दरूपों आदि में वैकल्पिक प्रयोग भी हुए हैं। प्राकृत शिलालेख के मौलिक स्वरूप को सुरक्षित रखने की दृष्टि से उसके अशुद्ध पाठ को यथावत रखा है। कुछ मुद्रण की भी अशुद्धियां सावधानी रखते हुए भी रह गयी हैं। इन सब समस्याओं का हल और अशुद्धियों का संशोधन शिक्षक अपने विवेक और प्राकृत-व्याकरण के उपयोग से करके विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे, ऐसी उनसे अपेक्षा की जाती है।

आभार

प्राकृत काव्य-मंजरी में जिन ग्रन्थकारों, सम्पादकों एवं ग्रंथों से मूल पाठ्य सामग्री ली गई है, उनका यथास्थान संदर्भ दिया गया है। इन सब प्राचीन एवं नवीन ग्रन्थकारों एवं सम्पादकों का लेखक आभारी है। पुस्तक को तैयार करने की रूपरेखा बनाने में प्रारम्भ से अन्त तक उदयपुर विश्वविद्यालय में दर्शन के प्रोफेसर एवं प्राकृत के विद्वान् डा० कमल चन्द सोगाणी का जो मार्ग-दर्शन प्राप्त रहा है, उसके लिए मैं अत्यन्त आभारी हूँ। गुजरात विश्वविद्यालय में पालि एवं प्राकृत विभाग के अध्यक्ष मेरे मित्र डॉ. के. आर. चन्द्रा एवं संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्राकृत एवं जैनागम विभाग के अध्यक्ष डॉ गोकुलचन्द्र जैन ने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि देखकर जो सुझाव दिये उनके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। विभाग के सहकर्मी प्राध्यापक डॉ. उदयचन्द शास्त्री एवं श्री एच. सी. जैन तथा विद्यार्थियों के सहयोग के लिए उनका धन्यवाद-ज्ञापन करता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था एवं मुद्रण आदि में राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान के उत्साही एवं कर्मठ सचिव श्रीमान् देवेन्द्रराज मेहता, संयुक्त सचिव महोपा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ध्याय श्री विनय सागर एवं ऋषभ मुद्रणालय, उदयपुर के श्री महावीर जैन तथा उनके स्टाफ का और चौधरी प्रिंटर्स के संचालक श्री राजेन्द्र सिंह चौधरी का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ

अग्रिम आभार उन जिज्ञासु पाठकों, विद्वानों, संस्थानों एवं परीक्षा-बोर्डों के प्रबंधकों के प्रति भी है, जो इस पुस्तक के पठन-पाठन में सहयोगी होकर प्राकृत-शिक्षण को गति प्रदान करेंगे एवं अपने सुझाव देकर इस पुस्तक के संशोधन-परिवर्द्धन में सहभागी होंगे।

प्रेम सुमन जैन

'समय'
२९, उत्तरी सुन्दरवास,
उदयपुर (राजस्थान)
२, अक्टूबर, १९८२

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

(क) प्राकृत व्याकरण की रूपरेखा — पृष्ठ १-४५

पाठ १ : सर्वनाम (प्रथमा) — (क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष (पु) (घ) अ. पु स्त्रीलिंग (ङ) मिश्रित प्रयोग, अभ्यास, नियम (सर्वनाम)। — १-७

पाठ २ : संज्ञा शब्द (प्रथमा) — (क) पुल्लिंग ख) स्त्रीलिंग (ग) नपुंसकलिंग (घ) मिश्रित सर्वनाम एवं संज्ञाए, नियम, मिश्रित प्रयोग, अभ्यास। — ८-१४

पाठ ३ : क्रियारूप — (क) वर्तमानकाल (ख) भूतकाल (ग) भविष्यकाल (घ आज्ञा/इच्छा (ङ) आकारान्त आदि क्रियाएँ, नियम (क्रिया), अभ्यास। — १५-२१

पाठ ४ : कृदन्त — १. सम्बन्ध २. हेत्वर्थ ३. वर्तमान कृ. ४. भूतकालिक कृ. ५. भविष्य कृ. ६.योग्यता-सूचक, नियम (कृदन्त), अभ्यास। — २२-२५

पाठ ५ : कारक
१. गिह-उववनं (षष्ठी विभक्ति) — २
२. विज्जालयं (षष्ठी ”) — २७
३. कुटुम्बं (द्वितीया ”) — २८
४. पभायवेला (द्वितीया ”) — २९
५ गुण-गरिमा (सप्तमी ”) — ३०
६. दिणचरिया (तृतीया ”) — ३१
७. सरोवरं (चतुर्थी ”) — ३२
८. लोअ-सरूवं (पंचमी ”) — ३३
नियम (कारक) — ३४-३६

पाठ ६ : वत्तालावं (अव्यय प्रयोग) — ३७

पाठ ७ : जीवलोओ (मिश्रित प्रयोग) — ३८-३९

पाठ ८ : अम्हाणपुज्जणीआ (मिश्रित प्रयोग) — ४०-४१

पाठ ९ : संधि एवं समास-प्रयोग — ४२-४३

पाठ १०: कर्मणि-प्रयोग (नियम) — ४४-४५

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) प्राकृत पद्य-संग्रह — पृष्ठ ४६-१२७

पाठ ११.	पाइय कव्वं	संकलित	४६–४७
१२.	सिक्खा-विवेओ	आख्यानमणिकोश	४८–५१
१३.	कुमाराण बुद्धि-परिक्खणं	अभयक्खाणयं	५२–५५
१४.	सज्जण-सरूवो	वज्जालग्ग	५६–५९
१५.	सहलं-मणुजम्मं	कुम्मापुत्तचरियं	६०–६३
१६.	माणुसस्स कयग्घआ	मुणिपइचरियं	६४–६७
१७.	णयर-वण्णणं	सुरसुंदरीचरियं	६८–७१
१८.	समुद्द-गमणं	पाइयकहा-संगहो	७२–७५
१९	गुरूवएसो	कुवलयमालाकहा	७६–७९
२०.	सिक्खानीई	समणसुत्तं-चयनिका	८०–८४
२१.	कुसलो पुत्तो	आख्यानमणिकोश	८५–८७
२२.	साहसी अगडदत्तो	प्राकृतकथा-संग्रह	८८–९१
२३.	अहिंसा-खमा	संकलित	९२–९५
२४.	अहिंसओ बाहुबली	पउमचरियं	९६–९९
२५.	कहा-वण्णणं	लीलावईकहा	१००–१०३
२६	जीवण-मुल्लं	वज्जालग्ग में जीवन-मूल्य	१०४–१०७
२७.	गाहामाहुरी	गाहासत्तसई	१०८–१११
२८.	बुद्धिमंतो रोहओ	आख्यानमणिकोश	११२–११५
२९.	जीवण-ववहारो	अर्हत्प्रवचन	११६–११९
३०.	कवि-अणुभूई	वाक्पतिराज की लोकानुभूति	१२०–१२
३१.	पाइय-अहिलेहो	घटयाल अभिलेख	१२४–१२७

(ग) प्राकृत भाषा एवं साहित्य — पृष्ठ १२८-१४३

(घ) परिशिष्ट — पृष्ठ १४४-१९०

१.	प्राकृत व्याकरण-चार्ट (सर्वनाम संज्ञा, क्रिया, कृदन्त)	१४४–१४७
२.	प्राकृत पद्य-संग्रह का अनुवाद	१४८–१८५
३.	अपठित प्राकृत गाथाएं	१८६–१८८
४.	सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची	१८९–१९०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १ : सर्वनाम

[क] सर्वनाम (उत्तम पुरुष) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य : **अहं = मैं**

एकवचन

अहं पातो जग्गामि	=	मैं प्रातःकाल जागता/जागती हूँ।
अहं पइदिणं पढामि	=	मैं प्रतिदिन पढ़ता/पढ़ती हूँ।
अहं सया खेलामि	=	मैं सदा खेलता/खेलती हूँ।
अहं अईव हसामि	=	मैं बहुत हँसता/हँसती हूँ।
अहं खिप्पं चलामि	=	मैं शीघ्र चलता/चलती हूँ।
अहं सइ जिमामि	=	मैं एक बार जीमता/जीमती हूँ।
अहं अप्पं बोल्लामि	=	मैं थोड़ा बोलता/बोलती हूँ।
अहं मुहु पुच्छामि	=	मैं बार-बार पूछता/पूछती हूँ।
अहं सम्मं जाणामि	=	मैं भली प्रकार जानता/जानती हूँ।
अहं सुहं सयामि	=	मैं सुखपूर्वक सोता/सोती हूँ।

अम्हे=हम दोनों/हम सब

बहुवचन

अम्हे पातो जग्गामो	=	हम दोनों/हम सब प्रातःकाल जागते हैं।
अम्हे पइदिणं पढामो	=	हम सब प्रतिदिन पढ़ते/पढ़ती हैं।
अम्हे सया खेलामो	=	हम सब सदा खेलते/खेलती हैं।
अम्हे अईव हसामो	=	हम सब बहुत हँसते/हँसती हैं।
अम्हे खिप्पं चलामो	=	हम दोनों शीघ्र चलते हैं।
अम्हे सइ जिमामो	=	हम सब एक बार जीमते हैं।
अम्हे अप्पं बोल्लामो	=	हम सब थोड़ा बोलते हैं।
अम्हे मुहु पुच्छामो	=	हम दोनों बार-बार पूछते हैं।
अम्हे सम्मं जाणामो	=	हम सब भली प्रकार जानते हैं।
अम्हे सुहं सयामो	=	हम सब सुखपूर्वक सोते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ख] सर्वनाम (मध्यम पुरुष) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य :

तुमं=तुम/तू

एकवचन

तुमं पातो जग्गसि	=	तुम प्रातःकाल जागते/जागती हो।
तुमं पइदिणं पढसि	=	तुम प्रतिदिन पढ़ते/पढ़ती हो।
तुमं सया खेलसि	=	तुम सदा खेलते/खेलती हो।
तुमं अईव हससि	=	तुम बहुत हँसते/हँसती हो।
तुमं खिप्पं चलसि	=	तुम शीघ्र चलते/चलती हो।
तुमं सइ जिमसि	=	तुम एक बार जीमते/जीमती हो।
तुमं अप्पं बोल्लसि	=	तू थोड़ा बोलता/बोलती है।
तुमं मुहु पुच्छसि	=	तू बार-बार पूछता/पूछती है।
तुमं सम्मं जाणसि	=	तुम भली प्रकार जानते हो।
तुमं सुहं सयसि	=	तुम सुखपूर्वक सोते/सोती हो।

तुम्हे=तुम दोनों/तुम सब

बहुवचन

तुम्हे पातो जग्गित्था	=	तुम दोनों प्रातःकाल जागते हो।
तुम्हे पइदिणं पढित्था	=	तुम सब प्रतिदिन पढ़ती हो।
तुम्हे सया खेलित्था	=	तुम दोनों सदा खेलते/खेलती हो।
तुम्हे अईव हसित्था	=	तुम सब बहुत हँसते हो।
तुम्हे खिप्पं चलित्था	=	तुम सब शीघ्र चलते/चलती हो।
तुम्हे सइ जिमित्था	=	तुम दोनों एक बार जीमते हो।
तुम्हे अप्पं बोल्लित्था	=	तुम सब थोड़ा बोलते/बोलती हो।
तुम्हे मुहु पुच्छित्था	=	तुम सब बार-बार पूछते हो।
तुम्हे सम्मं जाणित्था	=	तुम दोनों भली प्रकार जानते हो।
तुम्हे सुहं सयित्था	=	तुम सब सुखपूर्वक सोते हो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ग] सर्वनाम (अन्य पुरुष पुर्लिग) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य : **सो** = वह, **इमो** = यह, **को** = कौन

एकवचन

सो पातो जग्गइ	=	वह प्रातःकाल जागता है।
सो पइदिणं पढइ	=	वह प्रतिदिन पढ़ता है।
सो सया खेलइ	=	वह सदा खेलता है।
इमो अईव हसइ	=	यह बहुत हँसता है।
इमो खिप्पं चलइ	=	यह शीघ्र चलता है।
इमो सइ जिमइ	=	यह एक बार जीमता/खाता है।
को अप्पं बोल्लइ	=	कौन थोड़ा बोलता है ?
को मुहु पुच्छइ	=	कौन बार-बार पूछता है ?
को सम्मं जाणइ	=	कौन भली प्रकार जानता है ?
सो सुहं सयइ	=	वह सुखपूर्वक सोता है।

ते = वे, **इमे** = ये, **के** = कौन

बहुवचन

ते पातो जग्गन्ति	=	वे प्रातःकाल जागते हैं।
ते पइदिणं पढन्ति	=	वे प्रतिदिन पढ़ती हैं।
ते सया खेलन्ति	=	वे सदा खेलते हैं।
इमे अईव हसन्ति	=	ये बहुत हँसते हैं।
इमे खिप्पं चलन्ति	=	ये शीघ्र चलते हैं।
इमे सइ जिमन्ति	=	ये एक बार जीमते हैं।
के अप्पं बोल्लन्ति	=	कौन थोड़ा बोलते हैं ?
के मुहु पुच्छन्ति	=	कौन बार-बार पूछते हैं ?
के सम्मं जाणन्ति	=	कौन भली प्रकार जानते हैं ?
ते सुहं सयन्ति	=	वे सुखपूर्वक सोते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[घ] सर्वनाम (अन्य पुरुष स्त्रीलिंग) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य : **सा**=यह, **इमा**=वह, **का**=कौन

एकवचन

सा पातो जग्गइ	=	वह प्रातःकाल जागती है।
सा पइदिणं पढइ	=	वह प्रतिदिन पढ़ती है।
सा सया खेलइ	=	वह सदा खेलती है।
इमा अईव हसइ	=	यह बहुत हँसती है।
इमा खिप्पं चलइ	=	यह शीघ्र चलती है।
इमा सइ जिमइ	=	यह एक बार जीमती है।
का अप्पं बोल्लइ	=	कौन थोड़ा बोलती है?
का मुहु पुच्छइ	=	कौन बार-बार पूछती है?
का सम्मं जाणइ	=	कौन भली प्रकार जानती है?
सा सुहं सयइ	=	वह सुखपूर्वक सोती है।

ताओ=वे, **इमाओ**=ये, **काओ**=कौन

बहुवचन

ताओ पातो जग्गन्ति	=	वे (स्त्रियां) प्रातःकाल जागती हैं।
ताओ पइदिणं पढन्ति	=	वे प्रतिदिन पढ़ती हैं।
ताओ सया खेलन्ति	=	वे सदा खेलती हैं।
इमाओ अईव हसन्ति	=	ये बहुत हँसती हैं।
इमाओ खिप्पं चलन्ति	=	ये शीघ्र चलती हैं।
इमाओ सइ जिमन्ति	=	ये एक बार जीमती हैं।
काओ अप्पं बोल्लन्ति	=	कौन थोड़ा बोलती हैं?
काओ मुहु पुच्छन्ति	=	कौन बार-बार पूछती हैं?
काओ सम्मं जाणन्ति	=	कौन भली प्रकार जानती हैं?
ताओ सुहं सयन्ति	=	वे सुखपूर्वक सोती हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ङ] मिश्रित प्रयोग (सर्वनाम पाठ)

अहं छत्तो अत्थि	=	मैं छात्र हूँ।
अहं अत्थ पढामि	=	मैं यहाँ पढ़ता हूँ।
तुमं बाला अत्थि	=	तुम बालिका हो।
तुमं तत्थ खेलसि	=	तुम वहाँ खेलती हो।
तुमं अत्थ सेवसि	=	तुम यहाँ सेवा करते हो।
सो आयरियो अत्थि	=	वह आचार्य है।
सो तत्थ लिहइ	=	वह वहाँ लिखता है।
सो सया पढइ	=	वह सदा पढ़ता है।
सा माआ अत्थि	=	वह माता है।
सा पइदिणं सेवइ	=	वह प्रतिदिन सेवा करती है।
सो अप्पं बोल्लइ	=	वह थोड़ा बोलती है।
इमो सीसो पढइ	=	यह शिष्य पढ़ता है।
इमो पुरिसो नमइ	=	यह आदमी नमन करता है।
इमो छत्तो खेलइ	=	यह छात्र खेलता है।
को जणो गच्छइ	=	कौन व्यक्ति जाता है ?
को नरो पुच्छइ	=	कौन आदमी पूछता है ?
को बालओ नमइ	=	कौन बालक नमन करता है ?
इमा बाला नमइ	=	यह बालिका नमन करती है।
इमा छत्ता पढइ	=	यह छात्रा पढ़ती है।
इमा कन्ना खेलइ	=	यह कन्या खेलती है।
अम्हे तत्थ पढामो	=	हम वहाँ पढ़ते हैं।
तुम्हे अत्थ खेलित्था	=	तुम सब यहाँ खेलते हो।
ते सया हसन्ति	=	वे सदा हँसते हैं।
ताओ खिप्पं चलन्ति	=	वे सब (स्त्रियां) शीघ्र चलती हैं।
इमाओ अप्पं बोल्लन्ति	=	ये सब (स्त्रियां) थोड़ा बोलती हैं।
काओ ण पढन्ति	=	कौन (स्त्रियां) नहीं पढ़ती हैं ?

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

(क) सर्वनाम लिखो :

.... जग्गामि ।
.... हसइ ।
.... चलित्था ।
.... बोल्लन्ति ।
.... सयामो ।
.... पुच्छसि ।

(ख) क्रियारूप लिखो :

सा .... (पढ)
अहं .... (जिम)
ते .... (खेल)
तुम्हे .... (जाण)
तुमं .... (पुच्छ)
अम्हे .... (चल)

(ग) अव्यय लिखो :

अहं .... तत्थ बोल्लामि ।
अम्हे .... सयामो ।
तुमं .... हससि ।
तुम्हे .... पुच्छित्था ।
सो .... खेलइ ।
ते .... पढन्ति ।
सा .... चलइ ।
काओ .... जाणन्ति ?
इमो .... गच्छइ ।
को .... जिमइ ?

(घ) प्राकृतरूप लिखो :

वह .... सो .... (त) पु.
तुम .... (तुम्ह)
मैं .... (अम्ह)
वे .... (त) पु.
हम सब .... (अम्ह)
तुम दोनों .... (तुम्ह)
वह .... (ता) (स्त्री.)
तुम सब .... (तुम्ह)
यह .... (इम) पु.
कौन .... (का) स्त्री.

(ङ) प्राकृत में अनुवाद करो :

हम सदा पढ़ते हैं। वह सुखपूर्वक सोता है। तुम एक बार जीमते हो। मैं थोड़ा बोलता हूँ। तुम सब बहुत हँसते हो। वह छात्र नमन करता है। यह कन्या पढ़ती है। कौन छात्र खेलता है? हम दोनों वहाँ जाते हैं। वे दोनों यहाँ खेलते हैं। वे स्त्रियाँ वहाँ जाती हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नियम : सर्वनाम (पु०, स्त्री०) प्रथमा विभक्ति

सर्वनाम (पु०, स्त्री०) :

नियम १ : प्राकृत में **अम्ह** (मैं) एवं **तुम्ह** (तुम) सर्वनाम के रूप पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग में प्रथमा विभक्ति में इस प्रकार बनते हैं :-

एकवचन- **अहं, तुमं** बहुवचन- **अम्हे, तुम्हे**

सर्वनाम (पु०) :

नियम २ : **त** (वह) सर्वनाम का प्रथमा विभक्ति एकवचन में **सो** तथा बहुवचन में **ते** रूप बन जाता है।

नियम ३ : **इम** (यह) तथा **क** (कौन) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति के एकवचन में **ओ** तथा बहुवचन में **ए** प्रत्यय लगाकर ये रूप बनते हैं :-

इमो, इमे; को, के।

सर्वनाम (स्त्री०) :

नियम ४ : **ता** (वह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **सा** रूप तथा बहुवचन में **ओ** प्रत्यय लगाकर **ताओ** रूप बनता है।

नियम ५ : **इमा** (यह) एवं **का** (कौन) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन और बहुवचन में ये रूप बनते हैं :-

इमा, इमाओ; का, काओ।

निर्देश : पिछले उदाहरण-वाक्यों के पाठों में जो आपने सर्वनाम के रूप पढ़े हैं उन्हें इस प्रकार याद कर लें:-

वचन	प्रथम पु.	मध्यम पु.	अन्य पुरुष	
			पु.	स्त्री.
ए० व० –	अहं	तुमं	सो, इमो, को	सा, इमा, का
ब० व० –	अम्हे	तुम्हे	ते, इमे, के	ताओ, इमाओ, काओ

नवीन शब्द :- अव्यय

ऊपर आपने निम्नांकित अव्यय पढ़े हैं, जिनमें कुछ परिवर्तन नहीं होता है :-

पातो=प्रातः	पइदिणं=प्रतिदिन	सया=सदा
अईव=अधिक	खिप्पं =शीघ्र	सइ =एक बार
मुहु =बार-बार	सम्मं =अच्छी तरह	सुहं =सुखपूर्वक
अप्पं=थोड़ा	अत्थ =यहाँ	तत्थ=वहाँ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २ : संज्ञा शब्द

[क] संज्ञा शब्द (पुल्लिग) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य : बाल, सुहि, गुरु

एकवचन

बालो कत्थ पढइ	=	बालक कहाँ पढ़ता है ?
बालो अत्थ पढइ	=	बालक यहाँ पढ़ता है।
बालो कया खेलइ	=	बालक कब खेलता है ?
बालो दाणिं खेलइ	=	बालक इस समय खेलता है।
सुही तत्थ बोल्लइ	=	मित्र वहाँ बोलता है।
सुही ण सयइ	=	मित्र नहीं सोता है।
सुही किं जाणइ	=	मित्र क्या जानता है ?
गुरू सव्वं जाणइ	=	गुरु सब जानता है।
गुरू खिप्पं चलइ	=	गुरु शीघ्र चलता है।
गुरू तत्थ लिहइ	=	गुरु वहाँ लिखता है।

बहुवचन

बाला कत्थ पढन्ति	=	बालक कहाँ पढ़ते हैं ?
बाला अत्थ पढन्ति	=	बालक यहाँ पढ़ते हैं ?
बाला कया खेलन्ति	=	बालक कब खेलते हैं ?
बाला दाणिं खेलन्ति	=	बालक इस समय खेलते हैं।
सुहिणो तत्थ बोल्लन्ति	=	मित्र वहाँ बोलते हैं।
सुहिणो ण सयन्ति	=	मित्र नहीं सोते हैं।
सुहिणो किं जाणन्ति	=	मित्र क्या जानते हैं ?
गुरुणो सव्वं जाणन्ति	=	गुरु सब जानते हैं।
गुरुणो खिप्पं चलन्ति	=	गुरु शीघ्र चलते हैं।
गुरुणो तत्थ लिहन्ति	=	गुरु वहाँ लिखते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ख] संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य : बाला, जुवइ, बहू

एकवचन

बाला पातो जग्गइ	=	बालिका प्रातःकाल जागती है।
बाला सया पढइ	=	बालिका सदा पढ़ती है।
बाला किं पुच्छइ	=	बालिका क्या पूछती है ?
जुवई अत्थ हसइ	=	युवति यहाँ हँसती है।
जुवई तत्थ जिमइ	=	युवति वहाँ जीमती है।
जुवई अप्पं बोल्लइ	=	युवति थोड़ा बोलती है।
बहू ण खेलइ	=	बहू नहीं खेलती है।
बहू अईव जाणइ	=	बहू बहुत जानती है।
बहू कया सयइ	=	बहू कब सोती है ?
बाला खिप्पं चलइ	=	बालिका शीघ्र चलती है।

बहुवचन

बालाओ पातो जग्गन्ति	=	बालिकाएँ प्रातःकाल जागती हैं।
बालाओ सया पढन्ति	=	बालिकाएँ सदा पढ़ती हैं।
बालाओ किं पुच्छन्ति	=	बालिकाएँ क्या पूछती हैं ?
जुवईओ अत्थ हसन्ति	=	युवतियाँ यहाँ हँसती हैं।
जुवईओ तत्थ जिमन्ति	=	युवतियाँ वहाँ जीमती हैं।
जुवईओ अप्पं बोल्लन्ति	=	युवतियाँ थोड़ा बोलती हैं।
बहूओ ण खेलन्ति	=	बहुएँ नहीं खेलती हैं।
बहूओ अईव जाणन्ति	=	बहुएँ बहुत जानती हैं।
बहूओ कया सयन्ति	=	बहुएँ कब सोती हैं ?
बालाओ खिप्पं चलन्ति	=	बालिकाएँ शीघ्र चलती हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ग] संज्ञा एवं सर्वनाम (नपुं०) प्रथमा विभक्ति

उदाहरण वाक्य : मित्त, घर, पोत्थअ, वारि, वत्थु

एकवचन

मित्तं कत्थ अत्थि	=	मित्र कहाँ है ?
घरं तत्थ अत्थि	=	घर वहाँ है।
पोत्थअं अत्थ अत्थि	=	पुस्तक यहाँ है।
वारिं कत्थ अत्थि	=	पानी कहाँ है ?
वत्थुं ण अत्थि	=	वस्तु नहीं है।

बहुवचन

मित्ताणि कत्थ सन्ति	=	मित्र कहाँ हैं ?
घराणि तत्थ सन्ति	=	घर वहाँ हैं।
पोत्थआणि अत्थ सन्ति	=	पुस्तकें यहाँ हैं।
वारीणि कत्थ सन्ति	=	पानी कहाँ हैं।
वत्थूणि ण सन्ति	=	वस्तुएँ नहीं हैं।

त, इम, क (नपुं०)

एकवचन

तं मित्तं अत्थि	=	वह मित्र है।
तं घरं अत्थि	=	वह घर है।
इमं पोत्थअं अत्थि	=	यह पुस्तक है।
इमं वत्थुं अत्थि	=	यह वस्तु है।
किं मित्तं अत्थि	=	कौन मित्र है ?

बहुवचन

ताणि मित्ताणि सन्ति	=	वे मित्र हैं।
ताणि घराणि सन्ति	=	वे घर हैं।
इमाणि पोत्थआणि सन्ति	=	ये पुस्तकें हैं।
इमाणि वत्थूणि सन्ति	=	ये वस्तुएँ हैं।
काणि मित्ताणि सन्ति	=	कौन मित्र हैं ?

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[घ] मिश्रित प्रयोग (सर्वनाम एवं संज्ञाएँ)

उदाहरण वाक्य : सर्वनाम एवं संज्ञाएँ (पु०, स्त्री०, नपुं०)

एकवचन

सो बालो पढइ	=	वह बालक पढ़ता है।
इमो सुही खेलइ	=	यह मित्र खेलता है।
को गुरू पुच्छइ	=	कौन गुरु पूछता है ?
सा बाला जग्गइ	=	वह बालिका जागती है।
इमा जुवई सयइ	=	यह युवति सोती है।
का बहू हसइ	=	कौन बहू हँसती है ?
तं मित्तं बोल्लइ	=	वह मित्र बोलता है।
इमं मित्तं खेलइ	=	यह मित्र खेलता है।
किं मित्तं पढइ	=	कौन मित्र पढ़ता है ?
किं पोत्थअं तत्थ अत्थि	=	कौन पुस्तक वहाँ है ?

बहुवचन

ते बाला पढन्ति	=	वे बालक पढ़ते हैं।
इमे सुहिणो खेलन्ति	=	ये मित्र खेलते हैं।
के गुरुणो पुच्छन्ति	=	कौन गुरु पूछते हैं ?
ताओ बालाओ जग्गन्ति	=	वे बालिकाएँ जागती हैं।
इमाओ जुवईओ सयन्ति	=	ये युवतियाँ सोती हैं।
काओ बहूओ हसन्ति	=	कौन बहुएँ हँसती हैं ?
ताणि मित्ताणि बोल्लन्ति	=	वे मित्र बोलते हैं।
इमाणि मित्ताणि खेलन्ति	=	ये मित्र खेलते हैं।
काणि मित्ताणि पढन्ति	=	कौन मित्र पढ़ते हैं ?
काणि पोत्थआणि तत्थ सन्ति	=	कौन पुस्तकें वहाँ हैं ?

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नियम : संज्ञा शब्द (पु०, स्त्री०, नपुं०) प्रथमा विभक्ति

पुल्लिंग शब्द :

नियम ६ : पुरुषवाचक संज्ञा शब्दों में अकारान्त शब्दों के आगे प्रथमा विभक्ति के एकवचन में **ओ** तथा बहुवचन में **आ** प्रत्यय लगता है। जैसे :—

बाल + ओ = **बालो**	(ए०व०)	बाल + आ = **बाला**	(ब०व०)
पुरिस + ओ = **पुरिसो**	(")	पुरिस + आ = **पुरिसा**	(")
देव + ओ = **देवो**	(")	देव + आ = **देवा**	(")

नियम ७ : इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों के इ एवं उ प्रथमा विभक्ति के एकवचन में दीर्घ हो जाते हैं तथा बहुवचन में मूल शब्दों में **णो** प्रत्यय जुड़ जाता है। जैसे :—

इकारान्त		उकारान्त	
ए०व०	ब०व०	ए०व०	ब०व०
सुहि = **सुही**	सुहि**णो**	गुरु = **गुरू**	गुरु**णो**
कवि = **कवी**	कवि**णो**	सिसु = **सिसू**	सिसु**णो**
हत्थि = **हत्थी**	हत्थि**णो**	साहु = **साहू**	साहु**णो**

स्त्रीलिंग शब्द :

नियम ८ : स्त्रीलिंग आकारान्त शब्द प्रथमा विभक्ति के एकवचन में यथावत् रहते हैं तथा बहुवचन में उनमें **ओ** प्रत्यय जुड़ जाता है। जैसे :—

बाला = **बाला**	(ए०व०)	बाला + ओ = **बालाओ**	(ब०व०)
माला = **माला**	(")	माला + ओ = **मालाओ**	(")

नियम ९ : इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों के इ एवं उ प्रथमा विभक्ति के एकवचन में दीर्घ हो जाते हैं। दीर्घ ई ऊ दीर्घ ही रहते हैं तथा बहुवचन में मूल शब्द में दीर्घ होने के बाद **ओ** प्रत्यय जुड़ जाता है।

नपुंसकलिंग शब्द :

नियम १० : नपुंसकलिंग संज्ञा एवं सर्वनामों के आगे प्रथमा विभक्ति के एकवचन में अनुस्वार (ं) प्रत्यय लगता हैं तथा बहुवचन में अ, इ, उ दीर्घ होने के बाद **णि** प्रत्यय लगता है। क सर्व० एकवचन में **किं** होता है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ङ] मिश्रित प्रयोग (संज्ञा पाठ)

एकवचन

बालो खिप्पं चलइ	=	बालक शीघ्र चलता है।
सुही किं ण जाणइ	=	मित्र क्या नहीं जानता है ?
गुरू कत्थ गच्छइ	=	गुरु कहाँ जाता है ?
बाला सया पढइ	=	बालिका सदा पढ़ती है।
जुवई किं पुच्छइ	=	युवति क्या पूछती है ?
बहू तत्थ गच्छइ	=	बहू वहाँ जाती है।
मित्तं अत्थ लिहइ	=	मित्र यहाँ लिखता है।
घरं तत्थ अत्थि	=	घर वहाँ है।
इमं पोत्थअं अत्थि	=	यह पुस्तक है।
तं मित्तं अत्थि	=	वह मित्र है।

बहुवचन

छत्ता तत्थ पढन्ति	=	छात्र वहाँ पढ़ते हैं।
सुहिणो अत्थ बोल्लन्ति	=	मित्र यहाँ बोलते हैं।
गुरुणो सव्वं जाणन्ति	=	गुरु सब जानते हैं।
बालाओ अप्पं बोल्लन्ति	=	बालिकाएँ थोड़ा बोलती हैं।
जुवईओ पातो जग्गन्ति	=	युवतियाँ प्रातः जागती हैं।
मित्ताणि ण गच्छन्ति	=	मित्र नहीं जाते हैं।
वत्थूणि कत्थ सन्ति	=	वस्तुएँ कहाँ हैं ?
ताणि घराणि सन्ति	=	वे घर हैं।
के नरा गच्छन्ति	=	कौन मनुष्य जाते हैं ?
बहूओ अत्थ नमन्ति	=	बहुएँ यहाँ नमन करती हैं।

नये शब्द सीखें :

छत्त	=	छात्र	**सिक्ख**	=	सीखना	**सीह**	= सिंह
कुलवइ	=	कुलपति	**उवदिस**	=	उपदेश देना	**बहिणी**	= बहिन
सिसु	=	बच्चा	**सोह**	=	शोभित होना	**धेणु**	= गाय
मोर	=	मोर	**लज्ज**	=	लजाना	**कया**	= कब

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद करो :

छत्तो किं पुच्छइ ? बालो सिक्खइ। कवी लिहइ। कुलवई उवदिसइ। सिसू तत्थ खेलइ। हत्थी गच्छइ। मोरो णच्चइ। सीहो गज्जइ। बहिणी किं करइ ? कमलं अत्थ अत्थि।

(ख) संज्ञा शब्द लिखो :

(सोह) ··· सीहो ··· चलइ
(सिसु) ············ हसइ
(बाल) ············ गच्छइ
(कवि) ·· ········ गच्छन्ति
(जुवइ) ·········· जग्गन्ति
(सासू) ········ पालन्ति

(ग) क्रियारूप लिखो :

कवी ········ गच्छइ ········ (गच्छ)
निवो ··················· (हस)
बाला ··················· (सोह)
बहूओ ················ (लज्ज)
गुरुणो ···· · ············ (पढ)
मित्ताणि ·· ············ (पुच्छ)

(घ) शब्द छांटकर लिखो :

(पु.अ.) बाल ···· ············
(पु.इ.) सुहि ········ ············
(पु.उ.) गुरु ···· ············
(नपुं.अ.) मित्त ··· ··· ········
(स्त्री.आ.) बाला ········ ············
(स्त्री. इ.) जुवइ ········ ············
(स्त्री. उ.) धेणु ········ ············
(स्त्री. ऊ.) सासू ········ ··· ········

(ङ) क्रियाएँ लिखो :

चल = चलना ······· ···· = ············ ············ = ··· ········
···· ·· = ···· ···· ···· = ···· ······· ············ = ············
········ = ········ ············ = ···· · ···· ············ = ············

(च) प्राकृत में अनुवाद करो :

छात्र कहाँ पढ़ता है ? बालक यहाँ लिखता है। मोर वहाँ जाता है। गुरु कब बोलता है ? युवति कब पढ़ती है ? मित्र कहाँ रहता है ? कमल यहाँ है। पुस्तक वहाँ है। वे घर कहाँ हैं ? कवि वहाँ जाते हैं। वस्तुएँ कहाँ हैं ? बहू थोड़ा जीमती है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 3 : क्रियाएँ

[क] क्रियारूप (वर्तमान काल)

उदाहरण वाक्य : पढ (क्रिया) + प्रत्यय

उत्तम पुरुष :		एकवचन	
	अहं पढामि	=	मैं पढ़ता हूँ।
	अहं खेलामि	=	मैं खेलता हूँ।
	अहं चलामि	=	मैं चलता हूँ।
		बहुवचन	
	अम्हे पढामो	=	हम पढ़ते हैं।
	अम्हे खेलामो	=	हम खेलते हैं।
	अम्हे चलामो	=	हम चलते हैं।
मध्यम पुरुष :		एकवचन	
	तुमं पढसि	=	तुम पढ़ते हो।
	तुमं खेलसि	=	तुम खेलते हो।
	तुमं चलसि	=	तुम चलते हो।
		बहुवचन	
	तुम्हे पढित्था	=	तुम सब पढ़ते हो।
	तुम्हे खेलित्था	=	तुम सब खेलते हो।
	तुम्हे चलित्था	=	तुम सब चलते हो।
अन्य पुरुष :		एकवचन	
	सा पढइ	=	वह पढ़ती है।
	मित्तं पढइ	=	मित्र पढ़ता है।
	बालो पढइ	=	बालक पढ़ता है।
		बहुवचन	
	ताओ पढन्ति	=	वे पढ़ती हैं।
	मित्ताणि पढन्ति	=	मित्र पढ़ते हैं।
	बाला पढन्ति	=	बालक पढ़ते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ख] क्रियारूप (भूतकाल)

उदाहरण वाक्य : **पढ (क्रिया) + ईअ = पढीअ**

उत्तम पुरुष :

एकवचन

अहं पढीअ	=	मैंने पढ़ा ।
अहं खेलीअ	=	मैंने खेला ।
अहं चलीअ	=	मैं चला ।

बहुवचन

अम्हे पढीअ	=	हमने पढ़ा ।
अम्हे खेलीअ	=	हमने खेला ।
अम्हे चलीअ	=	हम चले ।

मध्यम पुरुष :

एकवचन

तुमं पढीअ	=	तुमने पढ़ा ।
तुमं खेलीअ	=	तुमने खेला/तुम खेले ।
तुमं चलीअ	=	तुम चले ।

बहुवचन

तुम्हे पढीअ	=	तुम सबने पढ़ा ।
तुम्हे खेलीअ	=	तुम सबने खेला ।
तुम्हे चलीअ	=	तुम सब चले ।

अन्य पुरुष :

एकवचन

सा पढीअ	=	उस [स्त्री] ने पढ़ा ।
मित्तं पढीअ	=	मित्र ने पढ़ा ।
बालो पढीअ	=	बालक ने पढ़ा ।

बहुवचन

ताओ पढीअ	=	उन [स्त्रियों] ने पढ़ा ।
मित्ताणि पढीअ	=	मित्रों ने पढ़ा ।
बाला पढीअ	=	बालकों ने पढ़ा ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ग] क्रियारूप (भविष्य काल)

उदाहरण वाक्य : पढ+इ+हि+प्रत्यय

उत्तम पुरुष :

एकवचन

अहं पढिहिमि	=	मैं पढ़ूँगा।
अहं खेलिहिमि	=	मैं खेलूँगा।
अहं चलिहिमि	=	मैं चलूँगा।

बहुवचन

अम्हे पढिहामो	=	हम पढ़ेंगे।
अम्हे खेलिहामो	=	हम खेलेंगे।
अम्हे चलिहामो	=	हम चलेंगे।

मध्यम पुरुष :

एकवचन

तुमं पढिहिसि	=	तुम पढ़ोगे।
तुमं खेलिहिसि	=	तुम खेलोगे।
तुमं चलिहिसि	=	तुम चलोगे।

बहुवचन

तुम्हे पढिहित्था	=	तुम सब पढ़ोगे।
तुम्हे खेलिहित्था	=	तुम सब खेलोगे।
तुम्हे चलिहित्था	=	तुम सब चलोगे।

अन्य पुरुष :

एकवचन

सा पढिहिइ	=	वह (स्त्री०) पढ़ेगी।
मित्तं पढिहिइ	=	मित्र पढ़ेगा।
बालो पढिहिइ	=	बालक पढ़ेगा।

बहुवचन

ताओ पढिहिन्ति	=	वे (स्त्रियां) पढ़ेंगी।
मित्ताणि पढिहिन्ति	=	मित्र पढ़ेंगे।
बाला पढिहिन्ति	=	बालक पढ़ेंगे।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[घ] क्रियारूप (आज्ञा/इच्छा)

उदाहरण वाक्य : **पढ+प्रत्यय**

उत्तम पुरुष :

एकवचन

अहं पढमु	=	मैं पढ़ूँ।
अहं खेलमु	=	मैं खेलूँ।
अहं चलमु	=	मैं चलूँ।

बहुवचन

अम्हे पढमो	=	हम सब पढ़ें।
अम्हे खेलमो	=	हम सब खेलें।
अम्हे चलमो	=	हम सब चलें।

मध्यम पुरुष :

एकवचन

तुमं पढहि	=	तुम पढो।
तुमं खेलहि	=	तुम खेलो।
तुमं चलहि	=	तुम चलो।

बहुवचन

तुम्हे पढह	=	तुम सब पढ़ो।
तुम्हे खेलह	=	तुम सब खेलो।
तुम्हे चलह	=	तुम सब चलो।

अन्य पुरुष :

एकवचन

सा पढउ	=	वह (स्त्री) पढ़े।
मित्तं पढउ	=	मित्र पढ़े।
बालो पढउ	=	बालक पढ़े।

बहुवचन

ताओ पढन्तु	=	वे (स्त्रियां) पढ़ें।
मित्ताणि पढन्तु	=	मित्र पढ़ें।
बाला पढन्तु	=	बालक पढ़ें।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ङ] आ० ए० एवं ओकारान्त क्रियाएँ

उदाहरण वाक्य : गा, णे, हो + प्रत्यय

एकवचन		*वर्तमान काल*	बहुवचन
अहं गामि	=	मैं गाता हूँ ।	अम्हे गामो
तुमं गासि	=	तुम गाते हो ।	तुम्हे गाइत्था
सो गाइ	=	वह गाता है ।	ते गान्ति
		भूतकाल	
अहं गाही	=	मैंने गाया ।	अम्हे गाही
तुमं गाही	=	तुमने गाया ।	तुम्हे गाही
सो गाही	=	उसने गाया ।	ते गाही
		भविष्य काल	
अहं गाहिमि	=	मैं गाऊँगा ।	अम्हे गाहामो
तुमं गाहिसि	=	तुम गाओगे ।	तुम्हे गाहित्था
सो गाहिइ	=	वह गायेगा ।	ते गाहिन्ति
		आज्ञा/इच्छा	
कि अहं गामु	=	क्या मैं गाऊँ ?	अम्हे तत्थ गामो
तुमं गाहि	=	तुम गाओ ।	तुम्हे गाह
सो गाउ	=	वह गाये ।	ते गान्तु
		मिश्रित प्रयोग	
अहं णेमि	=	मैं लाता हूँ ।	अम्हे णेमो
तुमं णेसि	=	तुम लाते हो ।	तुम्हे णेइत्था
सो णेइ	=	वह लेता है ।	ते णेन्ति
तत्थ किं होइ	=	वहाँ क्या होता है ?	तत्थ णच्चाणि होन्ति
सो पाहिइ	=	वह पियेगा ।	ते पाहिन्ति
सो ठाउ	=	वह ठहरे ।	ते ठान्तु
तुमं खासि	=	तुम खाते हो ।	तुम्हे खाइत्था
तुमं किं णेहिसि	=	तुम क्या लाओगे ?	तुम्हे किं णेहित्था

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नियम : क्रियारूप

क्रियारूप :

नियम ११ : प्रत्येक काल की क्रियाओं के अलग-अलग प्रत्यय होते हैं, जो मूल क्रिया में जुड़कर उस काल का बोध कराते हैं। प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ मूल क्रियाओं के स्वरों में भी परिवर्तन हो जाता है।

वर्तमान काल :

प्र० पु०	मि=पढ+मि (ए.व.)	मो	=पढ+मो (ब.व.)
म० पु०	सि=पढ+सि "	इत्था	=पढ+इत्था "
अ० पु०	इ =पढ+इ "	न्ति	=पढ+न्ति "

नियम १२ : प्रथम पुरुष के प्रत्यय **मि, मो** अकरान्त क्रिया में जुड़ने के पूर्व क्रिया का **अ** दीर्घ **आ** हो जाता है। जैसे :-

पढ+मि=**पढामि** पढ+मो=**पढामो**

भूतकाल :

नियम १३ : अकारान्त क्रियाओं के सभी रूपों में क्रिया में **ईअ** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे:-

पढ+ईअ=**पढीअ** चल+ईअ=**चलीअ**

नियम १४ : आकारान्त आदि क्रियाओं में भूतकाल में **ही** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—

गा+ही=**गाही, णेही, होही** आदि।

भविष्य काल :

प्र०पु०	हिमि=पढ+हिमि (ए.व.)	हामो=पढ+हामो (ब.व.)	
म०पु०	हिसि=पढ+हिसि "	हित्था=पढ+हित्था "	
अ०पु०	हिइ =पढ+हिइ "	हिन्ति=पढ+हिन्ति "	

नियम १५ : भविष्यकाल के प्रत्यय जुड़ने के पूर्व क्रिया के **अ** को **इ** हो जाता है। जैसे :— पढिहिमि, पढिहिसि आदि।

इच्छा/आज्ञा :

प्र० पु०	मु =पढ+मु (ए.व.)	मो=पढ+मो (ब.व.)	
म० पु०	हि=पढ+हि "	ह =पढ+ह "	
अ० पु०	उ =पढ+उ "	न्तु=पढ+न्तु "	

नियम १६ : आकारान्त आदि क्रियाओं में भी इन कालों के यही प्रत्यय जुड़ते हैं। किन्तु उनमें दीर्घ या स्वरों का परिवर्तन नहीं होता है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

(क) *क्रियाओं के अर्थ याद करो :*

भण	= कहना	पेस	= भेजना	कंद	= रोना
चिट्ठ	= बैठना	उट्ठ	= खड़े होना	गच्छ	= जाना
आगच्छ	= आना	बोल्ल	= बोलना	सिक्ख	= सीखना
कीण	= खरीदना	उड्ढे	= उड़ना	तर	= तैरना
कलह	= झगड़ना	गज्ज	= गर्जना	धर	= पकड़ना
मुंच	= छोड़ना	चल	= चलना	नम	= नमन करना

(ख) *क्रियारूपों से पूर्ति कीजिए (अकारान्त) :*

सर्वनाम	वर्तमानकाल	मू. क्रिया	भूतकाल	भविष्यकाल	आज्ञा
सो	पढइ	(पढ)	पढीअ	पढिहिइ	पढउ
अहं	.....	(चल)	.....	.....	.....
तुमं	.....	(गच्छ)	.....	.....	.....
अम्हे	.....	(खेल)	.....	.....	.....
ते	.....	(लिह)	.....	.....	.....
तुम्हे	.....	(नम)	.....	.....	.....

(ग) *आकारान्त आदि क्रियारूपों से पूर्ति करें :*

सो	पाइ	(पा)	पाही	पाहिइ	पाउ
अहं	.....	(ठा)	.....	.....	.....
तुमं	.....	(गा)	.....	.....	.....
ते	.....	(णे)	.....	.....	.....
तत्थ किं	.....	(हो)	.....	.....	.....

(घ) *प्राकृत में अनुवाद करो :*

तुम वहाँ कहते हो। मैं वहाँ भेजूँगा। वह क्यों रोता है ? तुम सब यहाँ बैठो। वे सब यहाँ कब आये ? उन्होंने क्या सीखा ? हमने झगड़ा नहीं किया। क्या मैं बोलूँ ? तुम न रोओ। वह न तैरे। तुम कब सीखोगे ? हम नहीं तैरेंगे। वे कहाँ उड़ेंगे ? वे नमन करेंगे। हम नहीं चलेंगे। बालक पढ़ेगा। बालिका गायेगी।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ४ : कृदन्त

सम्बन्ध कृदन्त

अहं पढिऊण खेलामि	=	मैं पढ़कर खेलता हूँ।
तुमं खेलिऊण पढसि	=	तुम खेलकर पढ़ते हो।
सो हसिऊण पुच्छइ	=	वह हँसकर पूछता है।
सा सयिऊण जग्गइ	=	वह सोकर जागती है।
मित्तं जग्गिऊण पढइ	=	मित्र जागकर पढ़ता है।
बालो पुच्छिऊण जाणइ	=	बालक पूछकर जानता है।
बाला बोल्लिऊण हसइ	=	बालिका बोलकर हँसती है।
अम्हे पढिऊण खेलिहामो	=	हम सब पढ़कर खेलेंगे।

हेत्वर्थ कृदन्त

अहं पढिउं जग्गामि	=	मैं पढ़ने के लिए जागता हूँ।
तुमं खेलिउं पुच्छसि	=	तुम खेलने के लिए पूछते हो।
सो हसिउं पढसि	=	वह हँसने के लिए पढ़ता है।
सा सयिउं पुच्छइ	=	वह सोने के लिए पूछती है।
मित्तं जग्गिउं पढइ	=	मित्र जगने के लिए पढ़ता है।
बालो नमिउं गच्छइ	=	बालक नमन करने के लिए जाता है।
बाला बोल्लिउं पुच्छइ	=	बालिका बोलने के लिए पूछती है।
अम्हे पढिउं जग्गिहामो	=	हम सब पढ़ने के लिए जागेंगे।

वर्तमान कृदन्त

पढन्तो बालओ गच्छइ	=	पढ़ता हुआ बालक जाता है।
पढन्ती जुवई नमइ	=	पढ़ती हुई युवति नमन करती है।
पढन्तं मित्तं हसइ	=	पढ़ता हुआ मित्र हँसता है।
हसमाणो छत्तो खेलइ	=	हँसता हुआ छात्र खेलता है।
हसमाणी बाला गच्छइ	=	हँसती हुई बालिका जाती है।
हसमाणं मित्तं पढइ	=	हँसता हुआ मित्र पढ़ता है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भूतकालिक कृदन्त

(क)

संतुट्ठो णिवो धणं देइ	=	संतुष्ट राजा धन देता है।
संतुट्ठा नारी लज्जइ	=	संतुष्ट नारी लज्जा करती है।
संतुट्ठं मित्तं कज्जं करइ	=	संतुष्ट मित्र कार्य करता है।

(ख)

सो गओ	=	वह गया।
सा गआ	=	वह गयी।
मित्तं गअं	=	मित्र गया।
स दिट्ठो	=	वह देखा गया।
सा दिट्ठा	=	वह देखी गयी।
तं दिट्ठं	=	वह देखा गया।

भविष्यकालिक कृदन्त

पढिस्संतो गंथो	=	पढ़ा जाने वाला ग्रन्थ।
पढिस्संता गाहा	=	पढ़ी जाने वाली गाथा।
पढिस्संतं पत्तं	=	पढ़ा जाने वाला पत्र।

योग्यतासूचक कृदन्त

(क)

कहणीओ वित्तान्तो अत्थि	=	कहने योग्य वृतान्त है।
कहणीआ कहा अत्थि	=	कहने योग्य कथा है।
कहणीअं चरित्तं अत्थि	=	कहने योग्य चरित्र है।

(ख)

मुणेअव्वो धम्मो अत्थि	=	जानने योग्य धर्म है।
मुणेअव्वा आणा अत्थि	=	जानने योग्य आज्ञा है।
मुणेअव्वं जीवणं अत्थि	=	जानने योग्य जीवन है।

(ग)

गंथो पढिअव्वो	=	ग्रन्थ पढ़ा जाना चाहिए।
गाहा पढिअव्वा	=	गाथा पढ़ी जानी चाहिए।
पत्तं पढिअव्वं	=	पत्र पढ़ा जाना चाहिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नियम : कृदन्त

नियम १७ : क्रिया से **सम्बन्ध कृदन्त** रूप बनाने के लिए क्रिया में तुं तूण, य आदि आठ प्रत्यय लगते हैं। यहाँ केवल **तूण** (ऊण) प्रत्यय लगाकर प्रयोग दिखाया गया है। ऊण प्रत्यय लगाने के पूर्व अकारान्त क्रिया के **अ** को **इ** हो जाता है। जैसे :—

पढ+इ+ऊण=**पढिऊण**, दा+ऊण=**दाऊण**, हो+ऊण=**होऊण**।

नियम १८ : **हेत्वर्थ कृदन्त** बनाने के लिए क्रिया में **तुं** (उं) प्रत्यय जुड़ जाता है एवं अकारान्त क्रियाओं के **अ** को **इ** हो जाता है। जैसे :—

पढ+इ+उं=**पढिउं**; **दाउं**, **होउं**।

नियम १९ : **वर्तमानकालिक कृदन्त** मूल क्रिया में **न्त**, **माण** प्रत्यय जुड़ने पर बनते हैं। उसके बाद लिंग के प्रत्यय जुड़ते हैं। जैसे :—

(क) पढ+न्त=**पढन्त**+ओ=**पढन्तो**, ई=**पढन्ती**, ं=**पढन्तं**।

(ख) पढ+माण=**पढमाण**+ओ=**पढमाणो**, **पढमाणी**, **पढमाणं**।

नियम २० : **भूतकालिक कृदन्त** के रूप मूल क्रिया में **अ** प्रत्यय जुड़ने पर तथा क्रिया के **अ** को विकल्प से **इ** होने पर बनते हैं। जैसे :—

(क) पढ+इ+अ=**पढिअ** = पढ़ा हुआ।

(ख) संतुट्ठ+अ=**संतुट्ठ** = संतुष्ट हुआ (इ न होने पर)।

नियम २१ : **भविष्यकालिक कृदन्त** के रूप मूल क्रिया के **अ** को **इ** होने पर **स्संत** प्रत्यय लगने पर बनते हैं। जैसे :—

पढ+इ+स्संत = **पढिस्संत**।

नियम २२ : **योग्यता-सूचक कृदन्त** (विधि) मूल क्रिया में **अणीअ** एवं **अव्व** प्रत्यय लगने पर बनते हैं। जैसे :—

(क) कह+अणीअ=**कहणीअ**।

(ख) **अव्व** प्रत्यय लगाने पर तथा क्रिया के **अ** को **ए** होने पर। जैसे—
मुण+ए+अव्व=**मुणेअव्व**।

(ग) इनका प्रयोग चाहिए अर्थ में भी होता है।

नियम २३ : वर्तमान, भूत, भविष्य एवं योग्यता-सूचक कृदन्तों का प्रयोग विशेषण के रूप में भी होता है, तब विशेष्य के अनुसार उनके रूप बनते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. *रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :*

	मूल क्रिया	कृदन्त	प्रत्यय	कृदन्तरूप	लिंग/निर्देश
(क)	पढ	सम्बन्ध	इ+ऊण	पढिऊण	पढकर
	हस	,,	.....	.....	.....
(ख)	पढ	हेत्वर्थ	इ+उं	पढिउं	पढने के लिए
	जाण	,,	.....	.....	.....
	नम	,,	.....	.....	.....
(ग)	पढ	वर्तमान	न्त	पढन्त	पढन्तो (पु०)
	जाण	,,	.....	.....	.....(स्त्री०)
	नम	,,	.....	.....	.....(नपु०)
	पुच्छ	,,	माण	.....	..... (पु०)
	भण	,,	.....	.....	.....(स्त्री०)
(घ)	पढ	भूतकाल	इ+अ	पढिअ	पढिओ (पु०)
	नम	,,	.....	.....	.....(नपुं०)
	दिट्ठ	,,	अ	दिट्ठ	दिट्ठो (पु०)
	कअ	,,	अ	कअ	कअं (नपुं०)
(ङ)	पढ	भविष्य	इ+स्संत	पढिस्संत	पढिस्संतो (पु०)
	लिह	,,	.....	.....	..... (नपुं०)
(च)	पढ	योग्यता	अणीअ	पढणीअ	पढणीओ (पु०)
	रक्ख	,,	.....	.....	.....(स्त्री०)
	भण	,,	ए+अव्व	.....	..... (नपुं०)

२. *प्राकृत में अनुवाद करो :*

मैं हँसकर नमन करता हूँ। तुम लिखकर पढ़ो। उसने वहाँ जाकर पत्र लिखा। वह खेलने के लिए वहाँ जाय। तुम पढ़ने के लिए आते हो। हम सब नमन करने के लिए वहाँ गये। पढ़ता हुआ छात्र आता है। नमन करती हुई बालिका जाती है। हँसता हुआ मनुष्य है। वह पढ़ा हुआ ग्रन्थ है। वह वहाँ गया। पढ़ने योग्य पुस्तक है। कार्य किया जाना चाहिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ५ : कारक

१. गिह-उववनं [षष्ठी विभक्ति]

तं मज्ज गिहं अत्थि। इमं तुज्झ गिहं अत्थि। तस्स गिहं तत्थ अत्थि। ताअ गिहं अत्थ ण अत्थि। इमस्स गिहं कत्थ अत्थि ? कस्स गिहं दूरं अत्थि? गिहस्स सामी मज्झ जणओ अत्थि। मज्झ जणणी तत्थ वसइ। मज्झ बहिणी तत्थ पढइ। मज्झ भायरो तुज्झ मित्तं अत्थि। अहं तस्स पोत्थअं णेमि।

इमं अम्हाण उववनं अत्थि। तुम्हाण मित्ताणि अत्थ खेलन्ति। ताण पुत्ता तत्थ धावन्ति। इमाण भायरा तत्थ ण गच्छन्ति। काण मित्ताणि तत्थ जीमन्ति ? उववनस्स इमे रुक्खा सन्ति। इमाणि ताण पुप्फाणि सन्ति। इमं णयरस्स सुंदेरं उववनं अत्थि। अत्थ कमलस्स पुप्फं अत्थि। पुप्फस्स लआ अत्थि। कमलाण पुप्फाण माला सोहइ। अत्थ वारिणो णई ण अत्थि। अम्हाण गिहस्स अण अरो वत्थुणो मुल्लं पुच्छइ। तस्स वत्थूण आवणो अत्थि।

अभ्यास

(क) हिन्दी में अर्थ लिखो :

शब्द	अर्थ	पहिचान
मज्झ	मेरा	(सर्व.ए.व.)
तुज्झ	.....	.....
तस्स	.....	....
ताअ	.....	.....
कस्स	.... ..	.....
गिहस्स	.....	.....
अम्हाण	.....	....
ताण	.....	.....
णयरस्स	.....	....

(ख) षष्ठी के रूप लिखो :

शब्द	ए.व.	ब.व.
बालअ	बालस्स	बालआण
कवि	.....	.....
साहु	... .	.....
बाला	.....	.....
नई	.....	.....
धेणु	.....	.....
वहू	.....	.....
फल	.....	.....
वारि	.....	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२. विज्जालयं [षष्ठी विभक्ति]

इमं सोहणस्स विज्जालयं अत्थि। अत्थ तस्स भायरा मित्ताणि य पढन्ति। विज्जालयस्स तं भवणं अत्थि। इमं तस्स दारं अत्थि। तत्थ तस्स खेत्तं अत्थि। चन्दणाअ बहिणो अत्थ पढइ। ताअ अभिहाणो कमला अत्थि। कमलाअ गुरू विउसो अत्थि। विउसाण गुरुणो सीसा विणीआ होन्ति। विणीअस्स सीसस्स णाणं वरं होइ। सोहणस्स इमं पोत्थअं अत्थि। ताणि पोत्थआणि तस्स मित्ताण सन्ति। तस्स भायराण पोत्थआणि काणि सन्ति ?

इमा कमलाअ लेहणी अत्थि। ताअ सहीए इमा माला अत्थि। मालाअ रंगं पीअं अत्थि। कमलाअ सहीण मालाण मुल्लं अप्पं अत्थि। इमं विज्जालयं बालआण अत्थि। तं विज्जालयं बालाण अत्थि। तत्थ विउसाण सम्माणं हवइ। अत्थ गुरूण पूआ हवइ। अत्थ बालआ पढन्ति। तत्थ बालाओ पढन्ति।

अभ्यास

(क) नये शब्द छांटकर लिखो :

शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन
सोहणस्स	सोहण	षष्ठी	ए.व.
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

(ख) प्राकृत में अनुवाद करो :

वह मेरी पुस्तक है। यह तेरा घर है। वह किसका पुत्र है ? ये पुस्तकें तुम्हारी हैं। वहाँ कुलपति का शासन है। यह बच्चों का उपवन है। माला की दुकान कहाँ है ? यह युवति का भाई है। गाय का दूध मीठा होता है। यह फल का वृक्ष है। वह पानी की नदी है। वह फलों का रस है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

३. कुडुम्बं [द्वितीया विभक्ति]

इमं मम कुडुम्बं अत्थि। जणओ कुडुम्बं पालइ। सो ममं णेहं करइ। मज्झ भायरो तुमं जाणइ। मज्झ जणओ पोत्थअं पढइ। जणणी तं दुद्धं देइ। तुज्झ बहिणी कमला अत्थि। माआ तं पासइ। इमो अम्हाण पिआमहो अत्थि। अम्हे इमं नमामो। तुम्हे किं नमित्था ? माउलो अम्हे वत्थं देइ। सो तुम्हे धणं देइ। भाउजाया ते नमइ। ते ताओ बहूओ पासन्ति। बहिणी इमे भायरा पत्ताणि लिहइ। भायरा इमाओ बहिणीओ धणं पेसन्ति। माआ के पुत्ता इच्छइ ? ताओ काओ कन्नाओ साडीओ देन्ति ?

अभ्यास

(क) पाठ में से द्वितीया विभक्ति के सर्वनामरूप छांटकर उनके अर्थ लिखो।

(ख) द्वितीया विभक्ति के शब्दरूप छांटकर उनके अर्थ लिखो।

(ग) कुटुम्ब के सदस्यों के प्राकृत शब्द लिखो :
पिता, भाई, छोटा भाई, माता, बहिन, पितामह, मामा, भौजी (भाभी), बहू पुत्र, कन्या।

(घ) प्राकृत में अनुवाद करो :
मित्र मुझको जानता है। वह तुमको पूछता है। माता उसको पालती है। कन्या उस स्त्री को नमन करती है। मैं इसको नहीं जानता हूँ। तुम किसको पत्र लिखते हो ? गुरु उन सबको जानते हैं। वे तुम सबको पूछेंगे। तुम इन सबको नमन करो।

(ङ) क्रियाएँ याद करो :—

वस	= रहना	सोह	= अच्छा लगना	धाव	= दौड़ना
परिवट्ट	= बदलना	उप्पन्न	= उत्पन्न होना	आव	= आना
जाय	= पैदा होना	बीह	= डरना	गिण्ह	= ग्रहण करना
मग्ग	= मांगना	अच्च	= पूजा करना	धोव	= धोना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

४. पभायवेला [द्वितीया विभक्ति]

इमं पभायं अत्थि। बालआ जग्गन्ति। ते जणअं नमन्ति। बालाओ जणाणि नमन्ति। सोहणो णियं करं पायं य धोवइ। सो णहाणं करइ। तया ईसरं नमइ। कमला उववनं पासइ। तत्थ पक्खिणो गीयं गान्ति। पुप्फाणि वियसन्ति। भमरा गुंजन्ति। बालआ कंदुअं खेलन्ति। छत्ता पोत्थआणि पढन्ति। कवी कव्वं लिहइ। गुरू सत्थं पढइ। किसाणो खेत्तं गच्छइ। सेवओ कज्जं करइ। बालआ विज्जालयं गच्छन्ति।

गुरू विज्जालयं गच्छइ। तत्थ सो बालआ पुच्छइ। विणीआ छत्ता तत्थ पाइअं पढन्ति। ते गाहाओ सुणन्ति। कलाओ सिक्खन्ति। आयरियं नमन्ति।

पभायं सुंदेरं हवइ। माआ बालं दुद्धं देइ। धूआ माअं नमइ। इत्थी मालं धारइ। सा जुवइं पासइ। जुवई नइं गच्छइ। तत्थ सा बहुं पुच्छइ। बहू धेणुं दुहइ। सा सासुं दुद्धं देइ। पुरिसो णयरं गच्छइ। तत्थ दुद्धं विक्कीणइ, फलाणि कीणइ तया घरं आगच्छइ।

अभ्यास

(क) द्वितीया विभक्ति के शब्द छांटकर उनका अर्थ लिखो :—

पुंल्लिग ....

नपुं.लिग ....

स्त्रीलिंग ....

(ख) प्राकृत में अनुवाद करो :—

पिता बालक को पालता है। राजा कवि को जानता है। हम साधु को नमन करते हैं। विद्वानों को कौन नहीं जानता है? तुम जीव को न मारो। स्त्री माला को धारण करती है। बहू साड़ी को चाहती है। आदमी गायों को देखता है। बालक फलों को चाहते हैं। छात्र शास्त्रों को पढ़ते हैं। वे वस्तुओं को नहीं चाहते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

५. गुण-गरिमा [सप्तमी विभक्ति]

सव्वे पाणा चेअणगुणा हवन्ति। तेसु णाणं होइ। जहा अम्हम्मि जीवणं अत्थि तहा तुम्हम्मि वि। अचेअणदव्वेसु पाणा ण सन्ति। किन्तु तेसु गुणा हवन्ति। जहा—फले रसं अत्थि. पुप्फे सुयंधो अत्थि, दहिम्मि घअं अत्थि, जले सीयलआ अत्थि, अग्गिम्मि उण्हआ अत्थि। सरोवरे कमलाणि सन्ति। कमलेसु भमरा सन्ति। रुक्खेसु फलाणि सन्ति। नीडे पक्खिणो सन्ति। नईए नावा तरन्ति।

घरे जणा निवसन्ति। पुरिसेसु खमा वसइ। जुवाणेसु सत्ति होइ। जुवईसु लज्जा अत्थि। तासु सद्धा अत्थि। बालए सच्चं अत्थि। छत्तो विनयं अत्थि। विउसम्मि बुद्धी अत्थि। सिसुम्मि अण्णाणं अत्थि। किन्तु साहुम्मि तेओ अत्थि। माआए समप्पणं अत्थि। धेणूए दुद्धं अत्थि। बहूए गुणा सन्ति। मालाए पुप्फाणि सन्ति। गअणे तारआ सन्ति। गुणेण बिणा किं वि वत्थू ण अत्थि।

अभ्यास

(क) हिन्दी में अर्थ लिखो :

शब्दरूप	अर्थ	पहिचान
तेसु	उनमें	सर्व.ब.व.
अम्हम्मि	.....	.....
दव्वेसु	.....	.....
फले	.....	.....
दहिम्मि	.....	.....
नईए	.....	.....
मालाए	.....	.....

(ख) सप्तमी के रूप लिखो :

शब्द	ए.व.	ब.व.
अम्ह	अम्हम्मि	अम्हेसु
तुम्ह	.....	.....
त	.....	.....
णर	.....	.....
बहू	.....	.....
कवि	.....	.....
बाला	.....	.....

(ग) प्राकृत में अनुवाद करो :

मुझ में शक्ति है। उसमें जीवन है। उस (स्त्री) में लज्जा है। हम सब में क्षमा है। बालकों में विनय है। साड़ी में फूल है। वृक्षों पर पक्षी हैं। घरों में बालक हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६. दिणचरिया [तृतीया विभक्ति]

सुज्जस्स किरणेण सह जणा जग्गन्ति। बालआ जणाएण सह उट्ठन्ति, जलेण मुहं पक्खालन्ति। जणा मन्दिरं गच्छन्ति। तत्थ ते देवं णयणेहिं पासन्ति। ते सिरेण हत्थेहि देवं नमन्ति। मुहेण देवस्स थुइं पढन्ति। ते पुप्फेहि फलेहि य देव अच्चन्ति। जणा आयरियेण सत्थं सुणन्ति। सत्थेण बिणा मन्दिरस्स सोहा णत्थि। जहा धणेण अहवा गुणेण बिणा नरस्स सोहा णत्थि।

देवं अच्चिऊण जणा भुंजन्ति। ते भिच्चेण सह आवणं गच्छन्ति। बालओ मित्तेण सह विज्जालयं गच्छइ। जुवई हत्थेहिं वत्थं धोवइ। सा साडीए सोहइ। माआ सिसुणो सह खेलइ। सिसू तत्थ पएण चलइ। सो मित्तेण सह खेलइ, कंदुएण रमइ। तेण तं सुक्खं होइ। सो माआए बिणा ण भुंजइ।

माआ जरेण पीडइ। ताए गिहस्स कज्जं ण होइ। तुमए ताअ सेवा होइ। सा दहिणा सह पत्थं गेण्हइ। घरेण बिणा सुहं णत्थि। जणा गेहे वसन्ति। ताण णेहेण गिहस्स सोहा होइ।

अभ्यास

(क) पाठ में से तृतीया विभक्ति के शब्दरूप छांटकर उनके अर्थ लिखो।

(ख) प्राकृत में अनुवाद करो :

यह कार्य मेरे द्वारा होता है। वह कार्य उसके द्वारा होता है। वह बालक के साथ जायेगा। हम शिष्य के साथ भोजन करते हैं। गुरु छात्रों के साथ रहता है। कवि के द्वारा कार्य होता है। वह साधु के साथ पढ़ता है। माता बच्चों के साथ रहती है। बालिका के साथ उसका भाई जाता है। बच्चे मालाओं से खेलते हैं। फलों के बिना वह भोजन नहीं करता है। मैं दही के साथ भोजन करता हूँ। वस्तुओं के साथ क्या है ?

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

७. सरोवरं [चतुर्थी विभक्ति]

इमं गामस्स सरोवरं अत्थि। तत्थ जणा ण्हाणं करिउं गच्छन्ति। तस्स जलं जणस्स अत्थि। सरोवरे कमलाणि सन्ति। ताणि कमलाणि मज्झ सन्ति। सरोवरस्स तडे रुक्खा सन्ति। ताण पुप्फाणि तुज्झ सन्ति। ताण फलाणि तस्स सन्ति। ताअ बालाअ सरोवरे किं अत्थि? तत्थ अम्हाण देव-मन्दिरं अत्थि। अत्थ तुम्हाण सज्झायसाला अत्थि। ताण बालआण तत्थ रम्मं उववनं अत्थि। तत्थ ते खेलन्ति।

सरोवरे हंसा चलन्ति। जलस्स जंतुणा तत्थ निवसन्ति। तत्थ कविणो सुहं हवइ। सो तत्थ कव्वं लिहइ। सरोवरस्स तडे साहुणा वसन्ति। णिवो साहुणो भोअणं देई। तत्थ णरा कवीण वत्थूणि देन्ति। कवी बालाअ फलं देइ। तत्थ सिसू फलस्स कंदइ। सरोवरस्स जलं कमलस्स अत्थि। तस्स वारिं खेत्तस्स अत्थि। खेत्तस्स धन्नं घरस्स अत्थि। सरोवरं णरस्स जीवणस्स बहुमुल्लं अत्थि। तं गामस्स सोहं अत्थि।

अभ्यास

(क) पाठ से चतुर्थी विभक्ति के शब्दरूप छांटकर उनके अर्थ लिखो :—

जणस्स = लोगों के लिए मज्झ = मेरे लिए ..... = ...

..... = ... = ... = ...

..... = ... = ... = ...

(ख) प्राकृत में अनुवाद करो :—

यह कमल मेरे लिए है। वह कमल उसके लिए है। ये वस्तुएँ उन स्त्रियों के लिए हैं। यह दूध बालक के लिए है। वे कुलपति के लिए नमन करते हैं। हम साधुओं के लिए भोजन देते हैं। वह बालिका के लिए माला देगा। माता युवति के लिए साड़ी देती हैं। सास बहुओं के लिए उपदेश देती है। यह वस्तु घर के लिए है। वह घर शास्त्रों के लिए है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

८. लोअ-सरूवं [पंचमी विभक्ति]

इअं लोअं विचित्तं अत्थि । अत्थ चेअणाणि अचेअणाणि य दव्वाणि सन्ति । ताणं सरूवं सया परिवट्टइ । बालओ बालअत्तो जुवाणो हवइ । जुवाणो जुवाणत्तो बुड्ढो हवइ । णरा णरत्तो पसुजोणीए गच्छन्ति । पसुणो पसुत्तो णरजम्मे उप्पज्जन्ति । रुक्खो बीजत्तो उप्पज्जइ । बीजो रुक्खत्तो उप्पज्जइ । फलत्तो रसं उप्पज्जइ । पुप्फत्तो सुयंधो आवइ । वारित्तो कमलं णिस्सरइ । रुक्खत्तो जुण्णाणि पत्ताणि पडन्ति । दहित्तो घयं जाअइ । दुद्धत्तो दहिं हवइ ।

एगसमये मुक्खो विउसत्तो बीहइ । छत्तो गुरुत्तो पढइ । कवी णिवत्तो आयरं गेण्हइ । बहू सासुत्तो धणं मग्गइ । बाला माअत्तो दुद्धं मग्गइ । किन्तु अण्णसमये परिवट्टणं जाअइ । विउसा मुक्खाहिंतो बीहन्ति । गुरुणा छत्ताहिंतो सिक्खन्ति । णिवा कवीहिन्तो पसंसं गेण्हन्ति । सासूओ बहूहिन्तो वत्थाणि मग्गन्ति । माआओ बालाहिन्तो भोअणं गेण्हन्ति । साहुणा असाहूहिन्तो भयं करन्ति । कुसला जणा सेवन्ति । सढा सासनं करन्ति । इमं अस्स लोअस्स विचित्तं सरूवं । जओ णाणीजणा विवेएण संसारस्स कज्जाणि करन्ति ।

अभ्यास

(क) पाठ में से पंचमी विभक्ति के शब्दरूप छांटकर उनके अर्थ लिखिए ।

(ख) प्राकृत में अनुवाद करिए :

वह मुझ से धन लेता है । बालक तुमसे कमल लेता है । तुम उससे डरते हो । साधु राजा से पुस्तक मांगता है । कवि से काव्य उत्पन्न होता है । शिष्य गुरु से पढ़ता है । माला से सुगन्ध आती है । मैं नदी से पानी लाता हूँ । कमल से पानी गिरता है । वह घर से निकलता है । हम नगर से दूर जाते हैं । सास बहू से धन मांगती है ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नियम : कारक

षष्ठी विभक्ति :

नियम २३ : षष्ठी विभक्ति के एकवचन में सर्वनाम **अम्ह** का **मज्झ** और **तुम्ह** का **तुज्झ** रूप बनता है।

नियम २६ : पुलिंग तथा नपुंसकलिंग सर्वनाम एवं अकारान्त संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **स्स** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—

सर्वनाम	त = **तस्स**	इम = **इमस्स**	क = **कस्स**
पु० सं०	पुरिस = **पुरिसस्स**	णर = **णरस्स**	छत्त = **छत्तस्स**
नपुं.सं.	जल = **जलस्स**	फल = **फलस्स**	घर = **घरस्स**

नियम २७ : पुलिंग तथा नपुं० इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों के आगे **णो** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—

सिसु = **सिसुणो**	कवि = **कविणो**	दहि = **दहिणो**
सुधि = **सुधिणो**	हत्थि = **हत्थिणो**	वत्थु = **वत्थुणो**

नियम २८ : (क) स्त्रीलिंग आकारान्त सर्वनाम तथा संज्ञा शब्दों के आगे षष्ठी एक वचन में **अ** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—

ता + अ = **ताअ** माला + अ = **मालाअ**, **इमाअ**, **बालाअ** आदि।

(ख) स्त्री० इ, ईकारान्त शब्दों के आगे **आ** प्रत्यय एवं उ, ऊकारान्त शब्दों के आगे **ए** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—

आ = **जुवईआ**, **नईआ**, **साड़ीआ**।

ए = **धेणूए**, **बहूए**, **सासूए** आदि।

नियम २९ : पु०, नपुं० तथा स्त्री० सर्वनाम एवं संज्ञा शब्दों के षष्ठी बहुवचन में **ण** प्रत्यय जुड़ता है तथा शब्द का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे :-

सर्वनाम— तुम्ह = **तुम्हाण**, अम्ह = **अम्हाण**, त = **ताण**, इमा = **इमाण**।

पु०नपुं०—**पुरिसाण**, **सुधीण**, **सिसूण**, **दहीण**, **वत्थूण**।

स्त्री० —**मालाण**, **बालाण**, **जुवईण**, **साडीण**, **बहूण**।

चतुर्थी विभक्ति :

नियम ३० : प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति में सभी सर्वनाम एवं संज्ञा शब्द षष्ठी विभक्ति के समान ही प्रयुक्त होते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया विभक्ति :

नियम ३१ : द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अम्ह का **ममं** एवं तुम्ह का **तुमं रूप** बनता है।

नियम ३२ : सभी सर्वनामों एवं संज्ञा शब्दों में द्वितीया विभक्ति के एकवचन में (ं) लगता है तथा दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं। जैसे :—

सर्व०— **तं, कं, इमं,** ता=**तं,** का=**कं,** इमा=**इमं।**

पु० — **बालं, पुरिसं, सुधिं, सिसुं।**

नपुं०— **जलं, णयरं, वारिं वत्थुं।**

स्त्री०— **मालं, जुवइं, बहुं, सासुं।**

नियम ३२ : सभी सर्वनाम एवं संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन के रूप ही द्वितीया विभक्ति बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे :—

सर्व० — **ते, के, अम्हे, तुम्हे, काओ, इमाओ, ताणि, इमाणि।**

पु० — **पुरिसो, कविणो, सिसुणो।**

नपुं०— **जलाणि, णयराणि, वारीणि, वत्थूणि।**

स्त्री०— **मालाओ नईओ, बहूओ, सासूओ।**

सप्तमी विभक्ति :

निमय ३२ : सभी पु० सर्वनामों तथा पु०, नपुं० के इ एवं उकारान्त शब्दों में सप्तमी एकवचन में **म्मि** प्रत्यय लगता है। जैसे :—

सर्व० — **अम्हम्मि, तुम्हम्मि, तम्मि, इमम्मि, कम्मि।**

संज्ञा — **सुधिम्मि, सिसुम्मि, वारिम्मि, वत्थुम्मि।**

निमय ३५ : स्त्री० सर्वनामों अकारान्त पु०, नपुं० शब्दों एवं स्त्री० शब्दों में सप्तमी एकवचन में **ए** प्रत्यय लगता है। इ एवं उ दीर्घ हो जाते हैं। जैसे :—

सर्व० — **ताए इमाए, काए।** पु० — **पुरिसे छत्तो, सीसे, जले,फले।**

स्त्री० — **बालाए, साडीए, बहूए, जुवईए, धेणूए।**

निमय ३६ : सभी सर्वनामों एवं संज्ञा शब्दों में सप्तमी बहुवचन में **सु** प्रत्यय लगता है। अकारान्त शब्दों में एकार हो जाता है तथा ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे :—

सर्व० — **अम्हेसु, तेसु, तासु।** पु०— **पुरसेसु, जलेसु सुधीसु, सिसूसु।**

स्त्री० — **बालासु, जुवईसु, धेणूसु सासूसु।**

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तृतीया विभक्ति :

नियम ३७ : तृतीया विभक्ति के एकवचन में **अम्ह** का **मए** एवं **तुम्ह** का **तुमए** रूप बनता है।

नियम ३८ : पु० एवं नपुं० सर्वनाम तथा अकारान्त शब्द रूपों में तृतीया विभक्ति के एकवचन में शब्द के **अ** को **ए** होता है तथा **ण** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :— सर्व०-**तेण, इमेण, केण**। संज्ञा- **पुरिसेण, छत्तेण, जलेण**।

नियम ३९ : पु० तथा नपुं० **इ** एवं उकारान्त शब्दों के आगे **णा** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :-- **कविणा, साहुणा, वारिणा, वत्थुणा**।

नियम ४० : स्त्री० सर्वनाम एवं संज्ञा शब्दों में तृतीया विभक्ति के एकवचन में **ए** प्रत्यय जुड़ता है। ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे :—
सर्व०— **ताए, इमाए, काए**। संज्ञा- **बालाए, नईए, बहूए**।

नियम ४१ : सभी सर्वनामों एवं सभी संज्ञा शब्दों में तृतीया विभक्ति के बहुवचन में **हि** प्रत्यय लगता है। शब्द के **अ** को **ए** तथा ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे :--
संज्ञा (पु०)— **पुरिसेहि, छत्तेहि, कवीहि, सिसूहि** (नपुं.)—**वारीहि, वत्थूहि**
स्त्री०— **बालाहि. नईहि, बहूहि**। सर्व०— **अम्हेहि, तेहि, ताहि**।

पंचमी विभक्ति :

नियम ४२ : पंचमी विभक्ति एकवचन में **अम्ह** का **ममाओ** एवं **तुम्ह** का **तुमाओ** रूप बनता है।

नियम ४३ : पु० एवं नपुं० सर्वनामों के दीर्घ होने के बाद उनमें **ओ** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :— **ताओ, इमाओ, काओ**।

नियम ४४ : स्त्री० सर्वनाम एवं संज्ञा शब्दों में ह्रस्व होकर तथा नपुं० एवं पु० शब्दों में पंचमी विभक्ति के एकवचन में **त्तो** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—
स्त्री०— ता=**तत्तो**, इमा=**इमत्तो**, बाला=**बालत्तो, बहुत्तो**।
पु०— **पुरिसत्तो, कवित्तो, सिसुत्तो, जलत्तो, वारित्तो** आदि।

नियम ४५ : सभी सर्वनामों एवं संज्ञा शब्दों में दीर्घ स्वर होने के बाद पंचमी विभक्ति के बहुवचन में **हिंतो** प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :—
अम्हाहिंतो, ताहिंतो, पुरिसाहिंतो, बालाहिंतो. बहूहिंतो आदि।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६. वत्तालावं

सोहणो	—	मोहण, तुमं कस्रा जग्गसि ?
मोहणो	—	ग्रहं पभाये जग्गामि।
सोहणो	—	तग्रा तुमं किं करसि ?
मोहणो	—	ग्रहं जणएण सह भमिउं गच्छामि।
सोहणो	—	तग्रणन्तरं तुमं किं करसि ?
मोहणो	—	ग्रहं पइदिणं पढामि।
सोहणो	—	तुमं संझावेलं वि पढसि ?
मोहणो	—	ण, ग्रहं तग्रा खेलामि।
सोहणो	—	तुमं कत्थ खेलसि ?
मोहणो	—	ग्रहं गिहस्स समीवं खेलामि।
सोहणो	—	तुमं विज्जालयं कग्रा गच्छसि ?
मोहणो	—	पायं दसवग्रणकाले।
सोहणो	—	तुज्झ विज्जालए रामो वि पढइ ?
मोहणो	—	ग्रां, सो तत्थ पढइ।
सोहणो	—	तुमं ग्रहुणा कत्थ गच्छसि ?
मोहणो	—	ग्रहं ग्रज्ज ग्रावणं गच्छामि।
सोहणो	—	तुमं मम गिहं चलहि।
मोहणो	—	ग्रज्ज ग्रवग्रासो णत्थि। कल्लं ग्रागच्छिहिमि।
सोहणो	—	तुमं सग्रा एवं भणसि। किन्तु कयावि ण ग्रागच्छसि।
मोहणो	—	तुमं मा रूसय। कल्लं ग्रवस्सं ग्रागच्छिहिमि।
सोहणो	—	वरं, ग्रहं मग्गं पासिहिमि। दाणिं गच्छामि। तुमं सिग्घं ग्रागच्छहि।
मोहणो	—	वरं।

ग्रभ्यास

(क) पाठ में से ग्रव्यय छांटकर उनके ग्रर्थ लिखो :

कग्रा = कब	.... = ...	.... = ...
.... = ...	.... = ...	.... = ...

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

७. जीवलोग्रो

इमे लोए बहु जीवा सन्ति। रुक्खेसु, लग्रासु, जले, ग्रग्गिए, पवणे थले वि पाणा हवन्ति। इमे एगिन्दिया जीवा सन्ति। मक्कुणे (खटमले) दोण्णि इंदियाणि हवन्ति। पिवीलिग्राए तिण्णि इंदियाणि हवन्ति। मक्खिग्राए चउरो इंदियाणि हवन्ति। सप्पे पंच इंदियाणि हवन्ति। पक्खी, पसू, मणुस्सो, पंचिन्दियो जीवो ग्रत्थि। तेसु फासो, रसणा, घाणो, चक्खू सवणो य इमाणि पंच इंदियाणि सन्ति।

पक्खिणो ग्रम्हाण सहग्ररा हवन्ति। ते मणुस्साण मित्ताणि हवन्ति। पभाये पक्खिणो कलग्रलसरेण गीग्रं गान्ति। ताण सरो महुरो हवइ। पक्खीसु काग्रो कण्हो हवइ। हंसो धवलो हवइ। कोइला काली हवइ किन्तु सा महुरसरेण गाइ। मोरा ग्रइसुन्दरा हवन्ति। ते वरिसाकाले णच्चन्ति। सुग्गा जणाण ग्रइपिग्रा हवन्ति। ते माणुस्स भासाए वि बोल्लन्ति। कुक्कुडा पभाये जणाण पवोहयन्ति। पिवीलिग्राग्रो सपरिस्समेण जणाण पेरणा देन्ति।

माणुस्स जीवणे पसूण वि महत्तं ग्रत्थि। पसुणो जणस्स सहयोगिणो सन्ति। ग्रस्सो भारं वहइ। जणा ग्रस्सेण सह जत्तासु गच्छन्ति। ग्रस्सो णरस्स मित्तं ग्रत्थि। कुक्कुरो माणुस्स रक्खं करइ।। सो ग्रम्हाण गिहाणि चोराहिन्तो रक्खइ। बइलो किसाणस्स मित्तं ग्रत्थि। सो हलं सग्रडं य करिसइ। बइला खेत्तं करिसन्ति। धेणु ग्रम्हाण दुद्धं देइ। सा तणाणि खाइऊण बहुमुल्लं बलजुत्तं ग्राहारं देइ। ग्रजा वि दुद्धं देइ। जणाण गिहेसु मज्जारा मूसग्रा वि वसन्ति।

मरुथले कमेला (ऊट्टा) संचरन्ति। वणे गग्रा भमन्ति। तेसु ग्रहिग्रं बलं हवइ। तत्थ सीहो वि गज्जइ। तस्स गज्जणेण मिग्रा धावन्ति। सिग्रालो गच्छन्ति। वाणरा साहाएसु कूदन्ति। सव्वे जीवा जीविउं इच्छन्ति, ण मरिउं। ग्रग्रो तेसु ग्रभयं भविग्रव्वं। ते सहावेण हिंसग्रा ण सन्ति। ग्रग्रएव के वि जीवा ण पीडिग्रव्वा।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

(क) पाठ में से दस शब्दों को छांटकर उनकी विभक्ति और वचन लिखिए :—

१. जीवा	प्रथमा	ब.व.	२. ते	प्रथमा (सर्व०)	ब.व.
३.	.....	.....	४.	.....	.....
५.	.....	.....	६.	.....	.....
७.	.....	.....	८.	.....	.....
९.	.....	.....	१०.	.....	.....

(ख) पाठ के संख्यावाची शब्द लिखकर उनके अर्थ लिखो :—

एग = एक	दोण्णि = दो	..... = ...
..... = ...	..... = ...	..... = ...
..... = ...	..... = ...	..... = ...

(ग) पाठ की नई क्रियाएँ छांटकर उनके अर्थ लिखो :—

क्रिया	अर्थ	क्रिया	अर्थ	क्रिया	अर्थ
.....	.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....	.....

(घ) प्राकृत में अनुवाद करो :—

राम गाँव को जाता है। वे फलों को खाते हैं। राजा के द्वारा कार्य होता है। कवि काव्य लिखता है। बालक भाई के साथ विद्यालय जायेगा। यह दूध उस पुत्र के लिए है। वह कमल इस कन्या के लिए है। सोहन की पुस्तक कहाँ है? मनुष्यों का मित्र कौन है? हाथी में शक्ति है। फूलों में सुगन्ध है। वृक्षों से पत्ते गिरते हैं। कमल से पानी गिरता है। वह मुझ से धन मांगता है।

(ङ) पाठ में आये विभिन्न जीवों का मानव जीवन में क्या महत्त्व है, इसे अपने शब्दों में लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

८. अम्हाण पुज्जणीआ

जणा सगुणेहि पुज्जणीआ हवन्ति। माणवजीवणे गुरुणा, पिअरस्स, जणणीए ठाणं महत्तपुण्णं अत्थि। जओ ते अम्हाण पुज्जणीआ सन्ति। सव्वेसु धम्मेसु गुरूण ठाणं उच्चं अत्थि। गुरुणा विणा को णाणं लहिहिइ? गुरुणो अम्हाण दोसाणि दूरं करन्ति। स–उवदेसजलेण अम्हाण बुद्धिं पक्खालयन्ति। जआ सीसा गुरूण समीवे पढिउं गच्छन्ति तआ ते एवं उवदिसन्ति–'सच्चं बोल्लह। धम्मं कुणह। सज्झाए पमायं मा कुणह। सआ देसस्स धम्मस्स सेवं कुणह।' अअएव गुरुणो अम्हाण मग्गदरिसआ सन्ति। जे सीसा सगुरुणा सेवं करन्ति, तेसु सद्धं करन्ति, ताहिन्तो णाणं गिण्हन्ति। ते सआ लोए सुहं लहन्ति।

अम्हाण जीवणे पिअरस्स ठाणं वि महत्तपुण्णं अत्थि। पिअरो अम्हाण पालओ अत्थि। सो नियएण परिस्समेण धणेण य अम्हे पालइ रक्खइ य। पिअरो कुडुम्बस्स पहाणो हवइ। अओ अम्हेहि तस्स आणं सआ पालणीअं। पिअरो केवलं पालओ ण होइ किन्तु सो बालआण मित्तो, विज्जादाआ वि हवइ। पिअरो सआ कुडुम्बस्स कल्लाणं चिन्तइ। अओ गुणवन्ता पुत्ता पिअरे सद्धं करन्ति, तस्स आणं मण्णन्ति तहा सेवं करन्ति।

अम्हाण पुज्जणीएसु जणणीए ठाणं सव्वोच्चं अत्थि। माआ सिसुं केवलं ण जम्मइ, किन्तु सा तस्स निम्माणं करइ। माआ अम्हे जणणइ। अम्हे माआअ दुद्धं पिबामो। माआअ दुद्धं सिसुणा जीवणं हवइ। जणणी सिसुं णेहं कुणइ। सा सअं दुक्खं सहइ किन्तु कआवि सिसुं दुक्खं ण देइ। अओ लोए पसिद्धं–'माआ कआवि कुमाआ ण हवइ।' जे पुत्ता जणणीए आणं पालन्ति, ताअ सेवं कुणन्ति, ते लोए सुपुत्ता हवन्ति। इमा पुढवी वि जणस्स माआ अत्थि। अम्हे भारअमाआअ पुत्ता सन्ति। अअएव जम्मभूमीए रक्खणं अम्हाण कत्तव्वं अत्थि।

अम्हाण इमं कत्तव्वं अत्थि जओ अम्हे गुरूण, पिअरस्स, जणणीए एवं जम्मभूमीए आयरं सेवं य कुणमो। इमे अम्हाण पुज्जणीआ सन्ति।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

(अ) पाठ में से सातों विभक्तियों के शब्द छांटकर लिखो :

प्रथमा ....

द्वितीया ....

तृतीया ....

चतुर्थी ....

पंचमी ....

षष्ठी ....

सप्तमी ....

(आ) प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखो :

(क) गुरु शिष्यों को क्या उपदेश देते हैं ?

(ख) पिता अपने कुटुम्ब के लिए क्या करता है ?

(ग) माता के सम्बन्ध में क्या प्रसिद्धि है ?

(घ) हमें पूज्यनीय व्यक्तियों के साथ क्या व्यवहार करना चाहिए ?

(इ) प्राकृत में अनुवाद करो :

वह मुझे देखता है। मैं उनको नमन करता हूँ। तुम ईश्वर को नमन करो। जीवों को मत मारो। मैं हाथ से पत्र लिखता हूँ। वह जीभ से फल चखती है। छात्र पुस्तकों के लिए धन माँगता है। बच्चा माता से डरता है। वृक्षों से पत्ते गिरते हैं। उन शरीरों में प्राण हैं। नदियों में पानी है। बालिकाओं का विद्यालय कहाँ है ? कमलों के लिए बच्चा रोता है। हम वहाँ पढ़ेंगे। तुम कहाँ खेलोगे। वह वहाँ नहीं गया। वे सब आज पुस्तकें पढ़ें।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ६ : सन्धि एवं समास प्रयोग

(क) सन्धि-प्रयोग

तत्थ जीवाजीवा सन्ति	=	वहाँ जीव-अजीव हैं।
णराहिवो अत्थ वसइ	=	राजा यहाँ रहता है।
मुणीसरो गंथं पढइ	=	मुनीश्वर ग्रन्थ पढ़ता है।
दिणेसो पातं उग्गइ	=	सूर्य प्रातः उगता है।
महेसी झाणं करइ	=	महर्षि ध्यान करता है।
तत्थ कलाहिवई वसइ	=	वहाँ कलाओं का स्वामी रहता है।
तस्सोवरि जोण्हा अत्थि	=	उसके ऊपर चाँदनी है।
गइंदो जले गच्छइ	=	हाथी जल में जाता है।
णीलुप्पलं सरे अत्थि	=	कमल सरोवर में है।
राईसरो सोहइ	=	चन्द्रमा शोभित होता है।
तत्थ महूसवो होइ	=	वहाँ महोत्सव होता है।
महूसवे को वि ण गच्छइ	=	महोत्सव में कोई भी नहीं जाता है।
ताअ मुहं चन्दो व्व अत्थि	=	उसका मुख चन्द्रमा की तरह है।
तत्थ निसाअरो न वसइ	=	वहाँ राक्षस नहीं रहता है।
किमिमं पोत्थअं अत्थि	=	क्या यह पुस्तक है ?

अभ्यास

(क) पाठ में से सन्धि वाले शब्दों को छांटकर निम्न प्रकार लिखिए :

	सन्धिपद	विग्रह	सन्धिकार्य
१.	जीवाजीव	जीव + अजीव	अ + अ = आ
२.	मुणीसर	मुणि + ईसर	इ + ई = ई
३.	दिणेस	..... + ...	... + = ...
४.	.....	..... + ...	.... + = ...
५.	.....	..... + ...	.... + .. = ...

(ख) शेष संधिपद अपनी अभ्यास-पुस्तिका में इसी प्रकार लिखकर शिक्षक को दिखाईए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) समास–प्रयोग

ते पइदिणं भमन्ति	=	वे प्रतिदिन घूमते हैं।
अहं अण ु भोयणं पढामि	=	मैं भोजन के बाद पढ़ता हूँ।
गुणसम्पण्णो णिवो सासइ	=	गुणसम्पन्न राजा शासन करता है।
सो देवमंदिरे नमइ	=	वह देवमन्दिर में नमन करता है।
रत्तपीअं वत्थं अत्थ णत्थि	=	लाल और पीला वस्त्र यहाँ नहीं है।
कस्स घरे चंदमुही कन्ना अत्थि	=	किसके घर में चन्दमा के समान मुख वाली कन्या है ?
महापुरिसो तिलोयं जाणइ	=	महापुरुष तीनों लोकों को जानता है।
साहू नवतत्तं जाणइ	=	साधु नौ तत्त्वों को जानता है।
जीवो पुण्णपावाणि अण ु हवइ	=	जीव पुण्य और पापों का अनुभव करता है।
सो सुह-दुक्खाणि जाणइ	=	वह सुख और दुखों को जानता है।
पीअंबरो तत्थ णच्चइ	=	कृष्ण वहाँ नाचता है।
चोरो निल्लज्जो अत्थि	=	चोर निर्लज्ज है।
जहासत्ति धम्मं कुणह	=	यथाशक्ति धर्म करो।
सो सिप्पीपुत्तो अत्थि	=	वह शिल्पी का पुत्र है।
तेसु वित्तविज्जाबलाणि सन्ति	=	उनमें धन, विद्या और बल है।

अभ्यास

(क) पाठ में से समासपद छांटकर निम्न प्रकार लिखो :

	समासपद	विग्रह	समासनाम
१.	पइदिणं	पइ + दिणं	अव्ययीभाव
२.	देवमन्दिरे	देवस्स + मन्दिरे	षष्ठी तत्पुरुष
३.	रत्तंपीअं	रत्तं + पीअं	कर्मधारय
४.	तिलोयं	ति + लोयं	द्विगु
५.	सुहदुक्खं	सुहं + दुक्खं	द्वन्द
६.	पीअंबरो	पीअं + अंबरो	बहुव्रीहि

(ख) शिक्षक से इन समासों को समझकर उनके अन्य उदाहरण लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १० : कर्मणि-प्रयोग

कर्मवाच्य

तेण अहं पासीअमि/पासिज्जमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
निवेण अम्हे पासीअमो/पासिज्जमो	=	राजा के द्वारा हम देखे जाते हैं।
मए तुमं पासीअसि/ पासिज्जसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।
तुम्हे पासीअइत्था/पासिज्जित्था	=	तुम सब देखे जाते हो।
तुमए सो पासीअइ/पासिज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जाता है।
साहुणा ते पासिअन्ति/पासिज्जन्ति	=	साधु के द्वारा वे सब देखे जाते हैं।
मए घडो करीअइ	=	मेरे द्वारा घड़ा बनाया जाता है।
तेण पोत्थअं पढिज्जइ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
मए घडो करिज्जीअ	=	मेरे द्वारा घड़ा बनाया गया।
मए घडो कओ	=	मैंने घड़ा बनाया।
तेण पोत्थअं पढिअं	=	उसने पुस्तक पढ़ी।
तुमए सो पासिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जायेगा।
तेण कंदुओ खेलीअउ	=	उसके द्वारा गेंद खेली जाय।
सीसेहि गुरुणो नमिज्जंतु	=	शिष्यों के द्वारा गुरु नमन किये जांय।

भाववाच्य

मए हसीअइ/हसिज्जइ	=	मेरे द्वारा हँसा जाता है।
तुमए धावीअइ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाता है।
छत्तेण भणिज्जइ	=	छात्र के द्वारा कहा जाता है।
मए सुणीअउ	=	मेरे द्वारा सुना जाय।
सीसेहि हसिअं	=	शिष्यों के द्वारा हँसा गया।
तेण झाइअं	=	उसके द्वारा ध्यान किया गया।
मए भणिहिइ	=	मेरे द्वारा पढ़ा जायेगा।
णरेहि हसिअं	=	लोगों के द्वारा हँसा गया।
तेण णच्चिअं	=	उसने नाचा।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नियम : कर्मणि प्रयोग

नियम ४६ : कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार के होता है। जैसे:-

सामान्य वाक्य		कर्म वाच्य
सो गन्थं पढइ	=	तेण गन्थो पढिज्जइ
अहं घडं करामि	=	मए घडो करीअइ

नियम ४७ : कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए मूलक्रिया में **ईअ** अथवा **इज्ज** प्रत्यय लगता है। उसके बाद अन्य प्रत्यय लगते हैं। जैसे :—

मूल क्रिया	वाच्य प्रत्यय	व.का.	भू.का.	विधि/आज्ञा
पढ + ईअ	**पढीअ**	पढीअइ	पढीअईअ	पढीअउ
पढ + इज्ज	**पढिज्ज**	पढिज्जइ	पढिज्जीअ	पढिज्जउ

नियम ४८ : भविष्यकाल में वाच्य-प्रत्यय **ईअ** या **इज्ज** नही लगते हैं।

नियम ४९ : भूतकाल में दोनों वाच्य प्रयोगों में भूतकालिक कृदन्तों का भी प्रयोग होता है। उनमें वाच्य-प्रत्यय नहीं लगते हैं। जैसे :—

तेण छत्तो **दिट्ठो**, तेण बाला **दिट्ठा**, तेण मित्तं **दिट्ठं**।

नियम ५० : भाववाच्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। वाक्य में कर्म नहीं रहता और सभी कालों में क्रिया अन्य पुरुष एकवचन की ही प्रयुक्त होती है। जैसे :—

कर्त्ता में तृ.वि.	व.का.	भू.का.	भ.का.	विधि/आज्ञा
अम्हेहि	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	हसिहिइ	हसिज्जउ
सीसेहि	... ” ...	....”....	....”....	....”....
तेण	....”....	... ”....	... ”....	....”....
मए	....”....	....”....	....”....	....”....
तुमए	....”....	....”....	....”....	....”....
णरेण	....”....	....”....	....”....	... ” ...

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ११ : पाइय-कव्वं

पाठ–परिचय :

प्राकृत में पद्य एवं गद्य दोनों में पर्याप्त साहित्य लिखा गया है। ईसा की प्रथम शताब्दी में गाथासप्तशती जैसी प्राकृतकाव्य की रचना प्रसिद्ध हो चुकी थी। उसके बाद प्राकृत में कथाकाव्य, मुक्तककाव्य, चरितकाव्य आदि शैलियों में कई काव्य रचनाएँ आधुनिक युग तक लिखी जाती रहीं। प्राकृत की इन सैकड़ों काव्य रचनाओं में से कुछ ग्रन्थों के काव्यांश इस पुस्तक में संकलित किये गये हैं।

इन काव्यांशों से प्राकृत का स्वरूप, महत्त्व एवं उसकी मधुरता प्रगट होती है। प्राकृत के कई कवियों ने प्राकृत भाषा एवं उसके काव्य की प्रशंसा की है। उनमें से कुछ गाथाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

पाइयकव्वस्स नमो, पाइयकव्वं च निम्मियं जेण।
ताहं चिय पणमामो, पढिऊण य जे वि याणन्ति ॥१॥

देसिय–सद्द–पलोट्टं, महुरक्खर–छंदसंठियं ललियं।
फुड-वियड-पायडत्थं, पाइयकव्वं पढेयव्वं ॥२॥

पाइयकव्वम्मि रसो जो जायइ तह व छेयभणिएहिं।
उययस्स व वासियसीयलस्स तित्तिं न वच्चामो ॥३॥

णवमत्थ–दंसण संनिवेस–सिसिराओ बन्धरिद्धीओ।
अविरलमिणमो आ–भुवण–बन्धमिह णवर पययम्मि ॥४॥

सयलाओ इमं वाया विसन्ति एत्तो य णेन्ति वायाओ।
एन्ति समुद्दंच्चिय णेन्ति सायराओ च्चिय जलाइं ॥५॥

गूढत्थ–देसि–रहियं सुललिय–वण्णेहिं विरइयं रम्मं।
पाइय–कव्वं लोए कस्स न हिययं सुहावेइ ॥६॥*

---

* गाथा १, २, ३ 'वज्जालग्गं' से गाथा ३१, २८, २१; गाथा ४ एवं ५ 'गउडवहो' से गाथा ९२ एवं ९३ तथा गाथा ६ 'पंचमीमाहात्म्य' से।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

याणन्ति = समझते हैं ताहं = उनको पलोट्टं = युक्त
वियड = विस्तीर्ण छेय = चतुर व्यक्ति तित्तिं = संतोष

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	कव्वस्स	कव्व	षष्ठी	एकवचन	नपुं०
	वायाओ	.....	.....	.....	.....
(ख)	संधि वाक्य		विच्छेद		संधिकार्य
	अविरलमिणमो		अविरलं + इणमो		अनुस्वार को म
	बन्धमिह		..... + ...		....
(ग)	समासपद		विग्रह		समास नाम
	पाइयकव्वं		पाइयस्स + कव्वं		षष्ठी तत्पुरुष
(घ)	क्रियारूप	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
	याणन्ति	याण	वर्तमान	अ०पु०	ब०व०
	वच्चामो	... .	.....	.....	.....

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. कवि ने नमस्कार किया है —
(क) किसी इष्ट देवता को (ख) किसी राजा को
(ग) प्राकृत-काव्य को (घ) माता-पिता को [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. अगाध मधुरता और काव्यतत्व की समृद्धि किस भाषा में है ?
२. प्राकृतकाव्य के रस की उपमा कवि ने किन वस्तुओं से दी है ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) प्राकृत काव्य पर ५-७ पंक्तियाँ लिखिए।
(ख) गाथा नं० ६ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १२ : सिक्खा-विवेओ

पाठ-परिचय :

प्राकृत साहित्य कथा साहित्य के लिए प्रसिद्ध है। विभिन्न जीवन–मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने के लिए हजारों कथाएँ प्राकृत भाषा में लिखी गयी हैं। कुछ कथाएँ स्वतन्त्र ग्रन्थों के रूप में हैं तथा कुछ कथाएँ फुटकर रूप से कही–सुनी गयी हैं। ऐसी प्राकृत कथाओं का संग्रह प्राकृत कथाकोशों में किया गया है। **आख्यानमणि कोश** इसी प्रकार का प्राकृत कथाओं का एक संग्रहग्रन्थ है। परम्परा से प्रचलित कई कथाओं को इसमें प्राकृत पद्य में लिख दिया गया है।

आख्यानमणिकोश के मूल रचयिता **नेमिचन्दसूरि** हैं। इन्होंने मूल में कुल ५२ गाथाएँ लिखी थीं, जिनपर उनके शिष्य **आम्रदेवसूरि** ने ई० सन् ११३४ के लगभग प्राकृत पद्य में टीका लिखी। इस टीका में कुल १४६ कथाएँ (आख्यान) हैं। इन कथाओं में नैतिक आचरण का पालन करने वाले स्त्री-पुरुषों की कथाएँ हैं। दान, करुणा, अहिंसा, बुद्धि-चातुर्य, साहस, पुरुषार्थ आदि विषयों का इन कथाओं में वर्णन है। उन्हीं में से यह दो शिष्यों की कथा यहाँ प्रस्तुत है।

कम्मि तहाविहरूयम्मि सन्निवेसम्मि सुत्थवासम्मि।
कस्स वि य सिद्धनामस्स नंदणा दोन्नि जणय–पिया ।।१।।

ते किं पि तेण सुत्ताइं पाढिया परमिमो विचिंतेइ।
जह किं निमित्तमिमे जाणन्ति तओ भवे लट्ठं ।।२।।

तो नेमित्तियसत्थन्नुयस्स कस्स वि समप्पिया पिउणा।
सिक्खन्ति नवरमेगस्स सिक्खियं परिणमइ सम्मं ।।३।।

बीयस्स पुणो न तहा अविणयभावा अहन्नदिवसम्मि।
कट्ठाणमाणणत्थं पट्ठविया ते अरन्नम्मि ।।४।।

जंतेहिं तेहिं मग्गे दिट्ठाणि पयाणि हत्थिरूयस्स।
एगेण भणियमेसो भायर! हत्थी गओ पेच्छ ।।५।।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बीएण भणियमेसा हत्थिणिया काइयाए विन्नाया।
अन्नं काणा एगम्मि चेव पासम्मि चरणाओ ॥६॥

अन्नं च उवरि इत्थी य अइहवा कह णु नज्जए एयं।
रुक्खम्मि रत्त-दसियाविलग्गणाओ य मुणियमिमं ॥७॥

ते जाव तयणुमग्गेण जंति तत्पच्चयत्थमभिउत्ता।
ता सरतीरे सव्वं सच्चवियं तेहिं जह भणियं ॥८॥

एत्थंतरम्मि छायाए वीसमंताणमागया एगा।
थेरी तेसिं समीवे सिरसंठिय-नीर-भरियघडा ॥९॥

दट्ठूण पुत्तसमवयसमन्निए सुयसिणेहसंभमओ।
देसन्तरत्थ-पुत्तप्पउत्ति-पुच्छा पवन्नाए ॥१०॥
भग्गो घडओ नीरं मिलियं नीरस्स स उ सवियक्का।
जाव अच्छइ तत्थमणा थेरी ता भणियमेगेणं ॥११॥

जइ तज्जाएतज्जायमिइ वओ सच्चयं निमित्तस्स।
ता भद्दे! तुज्झ सुओ मओ मुहा किं विसाएण? ॥१२॥

बीएण भणियं मिलिया न होइ एसा निमित्तगयवाणी।
ता जीवइ तुज्झ सुओ भद्दे! गंतुं गिहे पेच्छ ॥१३॥

दट्ठूण तयं खणमेगमागया वच्छरूयगसणाहा।
परिहाविऊण आणंदऊण तुट्ठा गया सगिहं ॥१४॥
भणियं च भाउणा कह ण भाय! विवरीयमेरिसं जायं।
तज्जाएतज्जायं सच्चमिणं भणियमियरेण ॥१५॥
नीरं नीरे मिलियं मट्टीए निम्मिओ घडो मिलिओ।
मायाए मिलइ पुत्तो एस जओ उज्जुओ मग्गो ॥१६॥
मा कुणसु तं विसायं गुरुविसए मा पओसमुव्वहसु।
गुरुणो वि जोग्गयाए कुणन्ति जीवे गुणाहाणं ॥१७॥

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

सन्निवेस	= नगर	**लट्ठं**	= धन	**अरन्न**	= जंगल
पास	= किनारा	**पच्चय**	= विश्वास	**अभिउत्ता**	= इच्छुक
सच्चवियं	= देखा गया	**थेरी**	= वृद्धा	**पउत्ति**	= जानकारी
वच्छ	= पुत्र	**उज्जुअ**	= सरल	**विसायं**	= दुख
पओसं	= द्वेष (वैर)	**जोग्गया**	= योग्यता	**कुण**	= करना

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	ए.व.	लिंग
कम्मि	क	सप्तमी	ए.व.	सर्व० नपुं०
सुत्ताइं	.....	.....	.....	.....
पिउणा	.....	.....	.....	.....
छायाए	.....	.....	.....	.....
गिहे	.....	.....	.....	.....
मट्टीए	.....	.....	.....	.....

(ख)

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
निमित्तमिमे	निमित्तं + इमे	अनुस्वार को म
परमिमो	..... + ...	.....
नवरमेगस्स	..... + ...	.....
कट्ठाणमाणणत्थं	..... + ...	.....
भणियमेसा	..... + ...	.....
तप्पच्चयत्थं	तत् + पच्चयत्थं	समान वर्ण परिवर्तन

(ग)

समासपद	विग्रह	समासनाम
सुयसिणेह	सुयस्स + सिणेह	षष्ठी तत्पुरुष

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
	परिणमइ	परिणम	वर्तमान	अ.पु.	ए.व.
	अच्छइ	....	.....	.....	....
	पेच्छ	....	.....	.....	....
	कुणसु	....	.....	.....	....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	प्रत्यय
	पाढिया	पढ़ाये गये	भूतकाल	
	दिट्ठाणि	देखे गये	....''....	अनियमित
	भणियं	कहा गया	....''....	
	आगया	आयी	....''....	

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. पिता ने अपने दोनों पुत्रों को किसके पास पढ़ने भेजा —

(क) कलाचार्य के पास (ख) गणित शिक्षक के पास

(ग) नैमित्तकशास्त्र के जानकार के पास (घ) राजा के पास [ ]

२. रास्ते से गयी हुई हथिनी कानी है यह जाना गया —

(क) किसी जादू से (ख) एक ही किनारे के पत्ते खाने से

(ग) किसी के कहने से (घ) आपस में सलाहकर [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. वृद्धा ने उन शिष्यों से क्या पूछा ?

२. वृद्धा का घड़ा टूट जाने पर पहले शिष्य ने उसे क्या कहा ?

३. दूसरे शिष्य ने माता से पुत्र मिलने का अनुमान किस घटना से किया ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) 'शिक्षा-विवेक' पाठ की कथा ५-७ पंक्तियों में लिखिए।

(ख) इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

(ग) गाथा नं० १६ या १७ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १३ : कुमाराण बुद्धि-परिक्खणं

पाठ-परिचय :

आख्यानमणिकोश में बुद्धि की परीक्षा के लिए अभयकुमार का आख्यान दिया गया है। प्राकृत कथा साहित्य में राजा प्रसेनजित के पुत्र श्रेणिक या बिम्बसार की योग्यता का बहुत वर्णन मिलता है। इस राजा श्रेणिक का विवाह सुनन्दा के साथ होता है। उन दोनों के जो पुत्र होता है उसका नाम अभयकुमार है। अभयकुमार से सम्बन्धित कई कथाएँ प्राकृत में हैं। आख्यानमणिकोश में २७८ गाथाओं में अभयकुमार का कथानक वर्णित है।

डॉ. के. आर. चन्द्रा ने **अभयक्खाणयं** नामक पुस्तक में अभयकुमार के कथानक को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। उसी में से प्रसेनजित राजा द्वारा अपने पुत्रों की बुद्धि की परीक्षा लेने का प्रसंग इन गाथाओं में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

अह अन्नया कयाई रयणीए पच्छिमम्मि जाममि।
सुहसंबुद्धो चिंतिउमारद्धो नरवई एवं ॥१॥

मज्झ कुमराण मज्झे होही को धरधुराधरणधीरो।
सेसो व महाभोगो चूडामणिरंजियसिरग्गो ॥२॥

इय चिंतिऊण सिंधुर-तुरंगमाउज्ज-रहवराइन्नं।
पज्जालावइ सयलं चउद्दिसिं जिन्नसालगिहं ॥३॥

तं नियवि जलणजालाकरालियं भणइ भूवई कुमरे।
रे रे! जो जं गेण्हइ दिन्नं तं तस्स सव्वं पि ॥४॥

रायाएसं निसुणिउ तड-यड-फुट्टंतवंससंदोहे।
कड्ढन्ति पलित्तो पविसिऊण कुमरा गइंदाई ॥५॥

सेणिय कुमरेण पुणो पविसिय पजलंतमंदिरस्संतो।
गहिया भिभाभिहाणा दक्खेण झडत्ति जयढक्का ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तं मच्छरेण करकलियभिभमवलोइउं इयरकुमरा।
उवहासेण पयंपन्ति सेणियं भिभसारो त्ति ॥७॥

तं दट्ठूण नरिंदेण चिंतियं सेणिएण साहु कयं।
पढममिणं रज्जंगं संगहिया जेण जयढक्का ॥८॥

अह अन्नया परक्कम-चाय-परिक्खणकए कुमाराण।
काराविय परमन्नं भोएइ निवो नियकुमारे ॥९॥

परमन्नं परिवेसिय निवेण लिल्लिक्किओ सुयणवग्गो।
सम्मुहमागच्छंतं तं नियवि पलाइया इयरे ॥१०॥

सेणियकुमरो इयराणमुभयपासट्ठिए गहियथाले।
सुणयाण खिवइ जेमेइ अप्पणा भयविमुक्कमणो ॥११॥

तव्वइयरमवलोइय चिंतेइ पमोइओ पुहइपालो।
एसो उदारवीरो त्ति कायरा इयरकुमरा मे ॥१२॥

अवर समयम्मि राया बुद्धि-परिक्खणकए कुमाराण।
मुद्देइ गणिय-लड्डुय-करंडए सलिलकलसे य ॥१३॥

हक्कारिउं तओ ते भणेइ वच्छ! सबुद्धिविहवेण।
मुद्दमभंजिय भुंजेह मोयगे पियह सलिलं पि ॥१४॥

एवं वुत्ता नियबुद्धिगव्विया वि य उवायमलभंता।
ते छुह-पिवाससोसियगत्ता दीणत्तमणुपत्ता ॥१५॥

सेणिय कुमरेण पुणो घेत्तुं पगलंत-कलसबिंदुजलं।
धुणिउं करंडए मोयगाण चूरीए भोयविया ॥१६॥

इय निसुणिऊण सेणियमइविहवं विम्हिओ महाराओ।
चिंतेइ जहा जुत्तो एसो रज्जाहिसेयस्स ॥१७॥

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

जाम = पहर	महाभोगो= महानाग	आइन्नं = भरा हुआ
जिन्न = पुराना	नियवि = देखकर	झडत्ति = शीघ्र
मच्छरेण= ईर्ष्या से	इणं = यह	रज्जंग = राज्य के अंग
चाय = त्याग	भोएइ = भोजन करता है	पासट्ठिए = पास में स्थित
सुणयं = कुत्ता	वइयरं = वृतान्त	पमोइओ = आनन्दित
पगलंत = झरते हुए	करंड = टोकरी	विम्हिओ= आश्चर्यचकित

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
रयणीए	रयणी	षष्ठी	ए०व०	स्त्री०
मराण	.....	....	.....	.....
उवहासेण	.. ....	....	.. ....	... .
करंडए	.....	.....	.....	.. ....

(ख)

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
चिंतिउमारद्धो	चिंतिउं + आरद्धो	अनुस्वार को म
रायाएसं	.....+.....	....
मन्दिरस्संतो	मंदिरस्स+ अंतो	अ + अ = अ
भिभाभिहाणा	.... + ...	.....
पढममिणं	... .+	.....

(ग)

समासपद	विग्रह	समासनाम
सुहसंबुद्धो	सुहेण + संबुद्धो	तृतीया तत्पुरुष
धरधुरा	.... + ...	.....
भयविमुक्कमणो	.....+	.....
उदारवीरो	.....+	....
सलिलकलसे	.....+	... .

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
	भणइ	भण	वर्तमान	अ०पु०	ए०व०
	कड्ढन्ति	.....	.....	.....	.....
	भुंजेह	.....	आज्ञार्थ	.....	.....
	पियह	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	मूल क्रिया	अर्थ	पहिचान	प्रत्यय
	दिन्नं	अनियमित	दे दिया गया	भूतकाल	
	निसुणिउ	निसुण	सुनकर	सम्बन्ध	इ+उ
	फुट्टंत	फुट्ट	आवाज करते हुए	वर्तमान	न्त
	परिवेसिय	परिवेस	परोसकर	सं०कृ०	इ+य

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. श्रेणिककुमार ने जलते हुए घर में से निकाला —

(क) रथ को (ख) हाथी को (ग) शस्त्र को

(घ) बिंभसार जयढक्का को [ ]

२. खीर खाते समय कुमारों के पास राजा ने —

(क) सैनिकों को भेजा (ख) कुत्तों के झुण्ड को बुलवाया

(ग) और भोजन भिजवाया (घ) नौकरों को भेजा [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. कुत्तों के आक्रमण पर श्रेणिक ने क्या किया ?

२. श्रेणिक ने लड्डू कैसे खाये ?

३. राजा ने राज्याभिषेक के लिए श्रेणिक को क्यों चुना ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) राजकुमारों की परीक्षाओं का वर्णन ८-१० पंक्तियों में कीजिए।

(ख) इस पाठ की शिक्षा अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) गाथा नं० ८ अथवा ११ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १४ : सज्जण-सरूवो

पाठ-परिचय :

प्राकृत मुक्तक-काव्य साहित्य में **वज्जालग्गं** ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके रचयिता कवि **जयवल्लभ** हैं। उन्होंने लगभग १२ वीं शताब्दी में इस ग्रन्थ में प्राकृत की सैकड़ों गाथाओं का संकलन किया है। इस ग्रन्थ में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित गाथाओं के समूह हैं, जिन्हें 'वज्जा' कहा गया है। लगभग ८०० गाथाओं को ९६ समूहों में विभक्त किया गया है। मित्र, स्नेह, धैर्य, साहस, पराक्रम, समुद्र, नगर, बसन्त आदि विषयों के समूह इस ग्रन्थ में हैं। 'सज्जनवज्जा' में सज्जनों के गुणों का वर्णन किया गया है। उन्हीं में से कुछ गाथाएँ यहाँ संकलित हैं।

सज्जन व्यक्ति स्वभाव से सरल और परोपकारी होते हैं। उनके दर्शन-मात्र से दुख दूर हो जाते हैं। वे किसी की निन्दा नहीं करते और न अपनी प्रशंसा करते हैं। उनकी मैत्री पत्थर की लकीर की तरह होती है। वे धैर्यशाली और परोपकारी होते हैं। उनमें घमण्ड नहीं होता है। वे अपनी प्रतिज्ञा को निभाने वाले होते हैं।

सुयणो सुद्धसहावो मइलिज्जंतो वि दुज्जणजणेण।
छारेण दप्पणो विय अहिययरं निम्मलो होइ ॥१॥

दिट्ठा हरंति दुक्खं जंपन्ता देन्ति सयलसोक्खाइं।
एयं विहिणा सुकयं सुयणा जं निम्मिया भुवणे ॥२॥

न हसन्ति परं न थुवन्ति अप्पयं पियसयाइ जंपन्ति।
एसो सुयणसहावो नमो नमो ताण पुरिसाणं ॥३॥

दोहिं चिय पज्जत्तं बहुएहिं वि किं गुणेहिं सुयणस्स।
विज्जुप्फुरियं रोसो मित्ती पाहाणरेहव्व ॥४॥

सेला चलन्ति पलए मज्जायं सायरा वि मेल्लन्ति।
सुयणा तहिं पि काले पडिवन्नं नेय सिढिलन्ति ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चंदन तरुव्व सुयणा फलरहिया जइ वि निम्मिया विहिणा ।
तह वि कुणन्ति परत्थं नियय सरीरेण लोयस्स ॥६॥

कत्तो उग्गमइ रई कत्तो वियसन्ति पंकयवणाइं ।
सुयणाण जए नेहो न चलइ दूरट्ठियाणं वि ॥७॥

फलसंपत्तीए समोणयाइं तुंगाइं फलविपत्तीए ।
हियया सुपुरिसाणं महातरूणं व सिहराइं ॥८॥

हियए जाओ तत्थेव वड्ढिओ नेय पयडिओ लोए ।
ववसायपायवो सुपुरिसाण लक्खिज्जइ फलेहिं ॥९॥

होन्ति परकज्जनिरया नियकज्जपरंमुहा फुडं सुयणा ।
चन्दो धवलेइ महिं न कलंकं अत्तणो फुसइ ॥१०॥

सच्चुच्चरणा पडिवन्नपालणा गरुयभारनिव्वहणा ।
धीरा पसन्नवयणा सुयणा चिरजीवणा होन्तु ॥११॥*

000

* 'वज्जालग्गं' – सं० प्रो० एम० वी० पटवर्धन से उद्धृत । गाथा-क्रम– ३३, ३६, ३७, ४२, ४७, ४८, ८० ११४, ११५, ४८.३, ४८.४ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

छार	= राख	सय	= सौ	दोहिं	= दो
पज्जत्तं	= पर्याप्त	रोस	= क्रोध	पाहाण	= पत्थर
सेल	= पर्वत	पलअ	= प्रलय	मज्जाया	= मर्यादा
पडिवन्ना	= प्रतिज्ञा	कत्तो	= कहाँ	रइ	= सूर्य
जए	= संसार में	समोणय	= नीचा	तुंग	= ऊँचा
निरय	= लीन	परंमुह	= विमुख	फुडं	= स्पष्ट

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	ए.व.	लिंग
	विहिणा	विहि	तृतीया	ए०व०	पु०
	ताण	.....	....	.....	.....
	गुणेहिं	.....	.....	.....	.....
	काले	.....	.....	.....	.....
	महातरूणं	.....	.....	.....	.....
	सिहराइं	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	पाहाणरेहव्व	पाहाणरेहा + व्व	दीर्घलोप
	तत्थेव	तत्थ + एव	अ + ए = ए
	सच्चुच्चरणा	सच्च + उच्चरणा	अ + उ = उ

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	सुद्धसहावो	सुद्धो + सहावो	बहुव्रीहि
	सुयणसहावो	सुयणस्स + सहावो	ष० तत्पुरुष
	फलरहिया	..... + ...	.....
	पंकयवणाइं	..... + ...	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
	हरन्ति	हर	वर्तमान	अ०पु०	ब०व०
	थुवन्ति	....	....	.....	....
	उग्गमइ	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	निम्मिया	बनाये गये हैं	भूतकाल	निम्म	इ+य
	जाओ	उत्पन्न	भूतकाल	अनियमित	.....
	वड्ढिओ	बढ़ा	भूतकाल	वड्ढ	इ+अ
	पयडिओ	....	... .	.....	... .
	लक्खिज्जइ	देखा जाता है	कर्मवाच्य	लक्ख	इज्ज+इ

. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. दुर्जन व्यक्ति के द्वारा मलिन किये जाने पर सज्जन होता है —
(क) अधिक क्रोधी (ख) गुणहीन
(ग) अधिक निर्मल (घ) आनन्द रहित [ ]

२. सज्जन लोगों के स्नेह की उपमा दी गयी है—
(क) फल युक्त वृक्ष से (ख) सूर्य और कमल से
(ग) चाँदनी से (घ) बिजली की चमक से [ ]

. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. सज्जन व्यक्ति के कौन से दो गुण पर्याप्त हैं ?
२. सज्जनों के हृदय सम्पत्ति और विपत्ति में कैसे होते हैं ?
३. यह पृथ्वी किनसे अलंकृत है ?

निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) 'सज्जन-स्वरूप' का सार अपने शब्दों में लिखिए।
(ख) गाथा नं० ४, १० एवं ११ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १५ : सहलं मणुजम्मं

पाठ-परिचय :

प्राकृत भाषा में ऐसे व्यक्तियों के जीवन-चरितों का वर्णन हुआ है, जिन्होंने अच्छे कार्यों के द्वारा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। ऐसे काव्यों को चरितकाव्य कहा गया है। प्राकृत में लगभग तीसरी-चौथी शताब्दी में विमलसूरि ने 'पउमचरियं' नामक प्रथम चरितकाव्य लिखा, जिसमें मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के जीवन का वर्णन है। इसके बाद कई चरितकाव्य लिखे गये हैं। लगभग १६ वीं शताब्दी में **अनन्तहंस** ने **कुम्मापुत्तचरियं** नामक ग्रन्थ लिखा है। इस चरितकाव्य में राजा महेन्द्र सिंह और रानी कूर्मा के पुत्र धर्मदेव के पूर्वजन्मों एवं वर्तमान जन्म की कथा वर्णित है।

धर्मदेव को एक साधु पुरुष मनुष्य-जन्म का महत्व बतलाता है। वह कहता है कि मनुष्य-जन्म अन्य पशु, पक्षी आदि के जन्म से कई अर्थों में श्रेष्ठ है। अतः इस मनुष्य जन्म में आकर अच्छे कार्य करना चाहिए। इस जन्म को व्यर्थ के कार्यों में गंवाना ठीक नहीं है। इस बात की पुष्टि के लिए वणिक्पुत्र का उदाहरण दिया गया है।

कोई वणिक्पुत्र बड़ी कठिनाई और परिश्रम के बाद एक चिंतामणिरत्न को विदेश में जाकर प्राप्त करता है। यह रत्न मनवाँछित फल को देने वाला है। जब वह वणिक्पुत्र जहाज से समुद्र पार कर रहा था तब रात्रि में चन्द्रमा के प्रकाश और रत्न के प्रकाश की वह तुलना करने लगता है। इसके लिए वह हाथ में रत्न को लेकर देख रहा था कि रत्न फिसलकर समुद्र में गिर गया और बहुत खोजने पर फिर नहीं मिला। इसी प्रकार मनुष्य-जन्म को यदि अच्छे कार्यों से सफल नहीं किया तो वह भी व्यर्थ चला जाता है।

एगम्मि नयरपवरे अत्थि कलाकुसलवाणिओ को वि।
रयणपरिक्खागंथं गुरूण पासम्मि अब्भसइ ॥१॥

अह अन्नया विचिंतइ सो वणिओ किमवरेहि रयणेहिं।
चिंतामणी मणीणं सिरोमणी चिंतिअत्थकरो ॥२॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो सो तस्स कए खणेइ खाणीओ णेगठाणेसु ।
तह वि न पत्तो स मणी विविहेहिं उवायकरणेहिं ।।३।।

केण वि भणिअं वच्चसु वहणे चडिऊण रयणदीवंमि ।
तत्थत्थि आसपूरी देवी तुह वंछियं दाही ।।४।।

सो तत्थ रयणदीवे संपत्तो इक्कवीस-खवणेहिं ।
आराहइ तं देविं संतुट्ठा सा इमं भणइ ।।५।।

भो भद्द केण कज्जेण अज्ज आराहिआ तए अहयं ।
सो भणइ देवि चितामणिकए उज्जमो एसो ।।६।।

दत्तं चिंतारयणं तो तीए तस्स रयणवणिअस्स ।
सो निअगिहगमणत्थं संतुट्ठो वाहणे चडिओ ।।७।।

पोअपएसनिविट्ठो वणिओ जा जलहिमज्झमायाओ ।
ताव य पुव्वदिसाए समुग्गओ पुण्णिमाचन्दो ।।८।।

तं चंदं दट्ठूणं नियचित्ते चिंतए स वाणियओ ।
चिंतामणिस्स तेअं अहिअं अहवा मयंकस्स ।।९।।

इअ चिंतिऊण चिंतारयणं निअकरतले गहेऊणं ।
नियदिट्ठीइ निरक्खइ पुणो पुणो रयणमिदुं य ।।१०।।

इअ अवलोअंतस्स य तस्स अभग्गेण करतलपएसा ।
अइसुकुमालमुरालं रयणं रयणायरे पडिअं ।।११।।

जलनिहिमज्झे पडिओ बहु बहु सोहंतएण तेणावि ।
किं कह वि लब्भइ मणी सिरोमणी सयलरयणाणं ।।१२।।

तह मणुअत्तं बहुविहभवभमणसएहि कहकह वि लद्धं ।
खणमित्तेणं हारइ पमायभरपरवसा जीवो ।।१३।।

ooo

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१ शब्दार्थ :

वहण = जहाज	खवण = दिन	ठाण = स्थान
गंथ = ग्रन्थ	पोअ = जहाज	जलहि = समुद्र
अहयं = मैं	पएस = प्रदेश	पवर = श्रेष्ठ
णेग = अनेक	सुर = देवता	ताव = तभी
निअ = अपने	वणिओ = व्यापारी	करतल = हथेली
मयंक = चन्द्रमा	रयणायर = समुद्र	पमाय = असावधानी

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	गुरूण	गुरु	षष्ठी	ब०व०	पु०
	रयणेहिं	.....	.....	.....	.....
	ठाणेसु	.....	.....	.....	.....
	केण	.....	.....	.....	.....
	देवि	.....	.....	.....	.....
	धणाणि	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	किमवरेहि	किं + अवरेहि	अनुस्वार को म
	चिंतिअत्थकरो	चिंतिअ + अत्थकरो	एक अ का लोप
	कम्ममेव	..... + ...	.....
	कम्माणुसारेण	..... + ...	.....
	जेणप्पन्ति	जेण + अप्पन्ति	.....
	रयणमिदु	..... + ...	.....

(ग)	समासपद	विग्रह	समास नाम
	कलाकुसलवणिओ	कलासु + कुसलवणिओ	सप्तमी तत्पुरुष
	रयणपरिक्खागंथं	रयणस्स + परिक्खागंथं	षष्ठी तत्पुरुष
	पुव्वदिसा	पुव्वं + दिसा	बहुव्रीही

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	अब्भसइ	अब्भस	वर्तमान	अ०पु०	ए०व०
	खणेइ	.....	.....	.....	.....
	वच्चसु	वच्च	आज्ञा	म०पु०	ए०व०
	दाही	दा	भविष्य	अ०पु०	ए०व०
(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	आराहिआ	पूजा की गई	भू०कृ०	आराह	इ+अ
	गहेऊण	ग्रहण कर	सं०कृ०	गहि	इ+[ए] ऊण
	पडिअं	गिर गया	भू०कृ०	पड	इ+अ
	संपत्तो	पहुंचा	भू०कृ०	संपत्त	अ

. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. व्यापारी ने प्राप्त करना चाहा था —

(क) जहाज (ख) धनसम्पत्ति (ग) चिंतामणि रत्न

(घ) ग्रन्थ [ ]

२. वह जहाज पर चढ़कर गया —

(क) उज्जैनी (ख) श्रीलंका (ग) समुद्र

(घ) रत्नद्वीप [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. व्यापारी को देवी ने क्या कहा ?

२. समुद्र के बीच में व्यापारी क्या सोचने लगा ?

३. समुद्र में रत्न क्यों गिर गया ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) चिन्तामणिरत्न और मनुष्यजन्म की तुलना ५-७ वाक्यों में कीजिए।

(ख) पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) गाथा नं० २ एवं १३ का अर्थ समझाकर लिखो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १६ : माणुसस्स कयग्घआ

पाठ-परिचय :

प्राकृत भाषा के काव्य-ग्रन्थों में मुख्य कथा के साथ अन्य कथाएँ एवं दृष्टान्त भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। ये दृष्टान्त शिक्षापरक एवं प्रेरणादायक होते हैं। इन छोटी कथाओं से मानव-जीवन के स्वभाव को भी समझने में मदद मिलती है। 'मुणिपतिचरित' नामक ग्रन्थ में भी इसी प्रकार की १६ छोटी कथाएँ मिलती हैं। उसी में से यह 'मनुष्य की कृतघ्नता' कथा का चयन किया गया है।

'मुणिपतिचरित' नाम की ३-४ रचनाओं का उल्लेख मिलता है। आठवीं शताब्दी के आचार्य हरिभद्रसूरि ने मुणिपतिचरित की रचना की थी, किन्तु वह ग्रन्थ आज उपलब्ध नही है। ८-९ वीं शताब्दी के एक कवि की रचना 'मुणिपतिचरित' उपलब्ध है, किन्तु उसके कर्त्ता का नाम अज्ञात है। सं० ११७२ में मानदेवसूरि ने और सं० १२७४ में द्वितीय हरिभद्रसूरि ने 'मुणिपतिचरित' ग्रन्थों की रचना की है। अज्ञात कवि के 'मुणिपतिचरित' का सम्पादन आर० विलियम्स ने किया है। उसमें १६ कथाएँ हैं। ये कथाएँ प्रायः संवादशैली में हैं।

प्रस्तुत पाठ में एक बन्दरिया और एक लकड़हारे राहगीर मनुष्य के स्वभाव का चित्रण है। बन्दरिया अपनी शरण में आये हुए मनुष्य की शेर से रक्षा करती है। उसके लिए शेर से विरोध लेती है। किन्तु वही मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए बन्दरिया को शेर का भोजन बनाने के लिए तैयार हो जाता है। इस पर बन्दरिया उस कृतघ्न मनुष्य को धिक्कारती है।

एगो वट्टइ पुरिसो कट्ठनिमित्तं तु सो गओ अडविं।
तेण य दिट्ठो सीहो तस्स भएणं दुमे चडिओ ॥१॥

तुंगे तम्मि दुमम्मि अहिरूढं वानरं विलोइत्ता।
भयपेरन्तयगत्तो चिंतइ उभयन्तरे पडिओ ॥२॥

सो एस वग्घ-दुत्तडि-नाओ जाओ महं तओ भणिओ।
वानरियाए 'पुत्तय! मा भीयसु मा य कंपेसु' ॥३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संजाओ वीसत्थो सीहो चिट्ठेइ रुक्खमूलम्मि ।
जाया रयणी तत्तो निद्दायइ वणयरो सो य ।।४।।

भणिओ य वानरीए मह उच्छंगे सिरं करेऊणं ।
सुयसु इमं तेण कअं सीहो तं वानरिं भणइ ।।५।।

गाढं छुहारओ हं मुयसु इमं माणुसं अहं तुज्झ ।
होहामि य वरमित्तं कयावि तुह उवयरिस्सामि ।।६।।

किं तुह एयस्स कुमाणुसस्स रक्खा इह कयग्घस्स ।
भणियं च वानरीए नाहं सरणागयं देमि ।।८।।

पडिलोमाणि बहूणि भणिऊण ठिओ हरी वि निव्विण्णो ।
पडिबुद्धो य वणयरो जंपइ अंबे! तुमं सुयसु ।।८।।

तस्सुच्छंगे काऊण सा सिरं वानरी वि य पसुत्ता ।
सीहो जंपइ माणुस! मम एयं वानरिं देहि ।।६।।

भक्खित्ता अहमेयं वच्चीहामि तवावि होइ पहो ।
मणुएणं अक्खित्ता उ कडीओ वानरी तेणं ।।१०।।

सा डालाए लग्गा छेयत्तणओ तओ भणइ सा उ ।
धी! धी! माणुसभावस्स तुज्झ माणुसकयग्घस्स ।।११।।

तेण पहेण महंतो सत्थो चलिओ तस्स सद्देणं ।
तत्तो य अइक्कंतो हरी गओ वणयरो गेहे ।।१२।।*

ooo

' 'मुणिपतिचरित'-सं० – आर० विलियम्स, एसियाटिक सोसायटी लन्दन, १६५६ पृ० १२४, गाथानुक्रम ११४४-५५ एवं 'प्राकृत गद्य-पद्य संग्रह', सं० – डॉ० के० आर० चन्द्रा, नवीन शाह, पाठ ११ से उद्धृत ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

एग	= एक	वट्टइ	= था	कट्ठ	= लकड़ी
दुमं	= वृक्ष	पेरंत	= काँपते हुए	गत्त	= शरीर
वग्घ	= बाघ	दुत्तडि	= दो किनारे	नाअ	= न्याय
वीसत्थ	= विश्वासयुक्त	उच्छंग	= गोद	गाढं	= अधिक
छुहारअ	= भूखा	कयग्घ	= कृतघ्न	पडिलोम	= विपरीत कथन
हरि	= सिंह	निव्विण्ण	= खिन्न	पह	= रास्ता
छेयत्तण	= चतुराई	कडी	= पेट [गोद]	सत्थ	= काफला

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	पुरिसो	पुरिस	प्रथमा	ए०व०	पु०
	सीहो	.....	.....	.....	.....
	अडविं	.....	.....	.....	.....
	तम्मि	.....	.....	.....	.....
	सिरं	.....	.....	.....	.....
	वाणरीए	.....	.....	.....	.....
	सद्दे णं	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	सरणागयं	सरण + आगयं	अ + आ = आ
	तस्सुच्छंगे	तस्स + उच्छंगे	अ + उ = उ
	अहमेयं	अहं + एयं	अनुस्वार को म
	तवावि	तव + अवि	अ + अ = आ
	उभयंतरे	उभय + अंतरे	अ + अ = अ

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	कट्ठनिमित्तं	कट्ठस्स + निमित्तं	षष्ठी तत्पुरुष
	माणुसभावस्स	माणुसस्स + भावस्स	षष्ठी तत्पुरुष

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	भीयसु	भीय	... .	.....	....
	सुयसु	.....	....	.....	.....
	होहामि	.....	....	.....	.....
	देहि	....	....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	गओ	गया	भू०कृ०	अनियमित	—
	विलोइत्ता	देखकर	सं०कृ०	अनियमित	—
	अक्खित्ता	.....	... .	अनियमित	—

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. वनचर ने जंगल में जाकर देखा —

(क) मोर को (ख) सिंह को

(ग) शिकारी को (घ) नदी को [ ]

२. वनचर जंगल में गया था —

(क) घूमने के लिए (ख) शिकार के लिए

(ग) लकड़ी के लिए (घ) शेर को देखने [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. डरे हुए वनचर को बंदरिया ने क्या कहा ?

२. रात्रि में वह आदमी कहाँ सो गया ?

३. सिंह ने बंदरिया को क्या कहा ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) इस पाठ की कथा अपने शब्दों में लिखो।

(ख) मनुष्य के स्वार्थी स्वभाव पर ५-७ पंक्तियाँ लिखो।

(ग) गाथा नं० ७ एवं १२ का अर्थ समझाकर लिखो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १७ : णयर-वण्णणं

पाठ-परिचय :

प्राकृत काव्यों में वस्तु-वर्णन के अन्तर्गत नगर-वर्णन के कई उल्लेख प्राप्त होते हैं। इन वर्णनों से प्राचीन समय के नगरों की संरचना का पता चलता है और कवि के काव्यगुण की भी जानकारी मिलती है। प्रस्तुत नगर-वर्णन प्राकृत के प्रमुख काव्यग्रन्थ **सुरसुन्दरीचरियं** से लिया गया है। इस ग्रन्थ की रचना ई० सन् १०३८ में श्री **धनेश्वरसूरि** ने की थी। मुनि श्री राजविजय ने इस ग्रन्थ का सम्पादन किया है। इस ग्रन्थ के 'नगर-वर्णन' से ज्ञात होता है कि वह हस्तिनापुर नामक नगर किले के परकोटे से घिरा हुआ था। उसमें अच्छे भवन थे। वहाँ के निवासी कलाओं में कुशल थे। नगर की सुन्दरता दर्शनीय थी।

पडिवक्ख-भयुप्पायण-विसाल-सालेण परिगयं रम्मं।
रमणीय-मगर-तोरण-गोउर-दारेहिं परिकिन्नं ॥१॥

अइनील-बहल-उववण-विरायमाणावसाण-भागेहिं ।
मत्तालंब-गवक्खय-जुएहिं वरचित्त-जुत्तेहिं ॥२॥

नाणा-भूमि-जुएहिं पासाएहिं तुसार-धवलेहिं ।
तन्नयर-वासि-जण-जस-थूहेहि व्व निच्चमइरम्मं ॥३॥

तह अवरावर-देसागएण तन्नयर-वासिणा चेव ।
वणिय-कला-निउणेणं पइदियहं वणिय-लोएण ॥४॥

किज्जंत-वणिज्जेहिं विरायमाणं अणेग-हट्टेहिं ।
परिपूरिएहिं अंतो बहु-मुल्ल-कियाणग-सएहिं ॥५॥

उत्तुंग-मगर-तोरण-पवण-द्धय-धवल-धय-वडड्ढेहिं ।
सुन्दर-देवउलेहिं उवसोहिय-सुन्दर-पएसं ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तह पंडु-पउम-संडोह-मंडियाणेय-गुरुतर-सरेहि ।
सोवाण-पंति-सुगमावयार-वावी-सहस्सेहिं ॥७॥

वर-तिय-चउक्क-चच्चर-आरामुज्जाण-दीहियाईहिं ।
देवाणमवि कुणंतं पए पए चित्त-संहरणं ॥८॥

सयलन्नपुर-पहाणं नयरं सिरिहत्थिणाउरं नाम ।
नयर-गुणेहुववेयं संकासं अमर-नयरस्स ॥९॥

जत्थ य निवसइ लोओ पियंवओ धम्म-करण-तल्लिच्छो ।
दक्खिन्न-चाय-भोगेहिं संगओ तह कला-कुसलो ॥१०॥

जत्थ य पुरम्मि निच्चं इओ तओ बहु-पओयण-परेण ।
भमिर-जण-समुदएणं दुस्संचाराओ रत्थाओ ॥११॥

जत्थ य कोडि-पडाया-पच्छाइय सयल-गयण-मग्गम्मि ।
लोओ गिम्हदिणेसु वि रविकरतावं न याणेइ ॥१२॥

जत्थ य पुरम्मि पुरिसा घर-भित्ति-निहित्त-मणि-मऊहेहिं ।
निच्चं हयंधयारे गयं पि राइं न याणन्ति ॥१३॥

रम्मत्तणओ जस्स य पलोयणत्थं व आगया देवा ।
कोउगवक्खित्तमणा अणमिस-नयत्तणंपत्ता ॥१४॥

धवलहर-सिसर-विरइय-पवण-पहल्लंत-वेजयन्तीओ ।
सन्नन्ति व रविणो सारहिस्स अइउच्च-गमणट्ठा ॥१५॥

जत्थ य पुरम्मि दीसइ पाय-पहारो उ रंग-भूमीसु ।
दंडो उ धय-वडाणं सीसच्छेओ जुयारीण ॥१६॥*

000

*'सुरसुन्दरीचरियं'-सं०-मुनि श्री राजविजय, बनारस, १९१६ से उद्धृत । गाथानुक्रम प्रथम परिच्छेद, गाथा ५५ से ७१ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

पडिवक्ख	= शत्रु	साल	= किला	मत्तालम्ब	= वरामदा
भूमि	= मंजिल	तुसार	= बर्फ	थूह	= खम्भा
कियाणग	= किराना	देवउल	= मन्दिर	संडोह	= समूह
सर	= तालाब	सोवाण	= सीढ़ियाँ	बावी	= बावड़ी
तल्लिच्छ	= तत्पर	मऊह	= किरण	राई	= रात्रि
केजयन्ति	= पताका	सारहि	= सारथी	संकास	= आशंका

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	ए.व.	लिंग
	दारेहिं	दार	तृतीया	ब०व०	नपुं०
	वासिणा	.....	.....	.....	.....
	देवउलेहिं	.....	.....	.....	.....
	पए	पअ	.....	.....	.....
	दिणेसु	दिण	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	निच्चमइरम्मं	निच्चं + अइरम्मं	.....
	मंडियाणेय	मंडिय + अणेय	.....
	सुगमावयार	सुगम + अवयार	.....
	हयंधयारे	हय + अंधयारे	.....
	आरामुज्जाण	आराम + उज्जाण	.....

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	कलाकुसलो	कलासु + कुसलो	.....
	गिम्हदिणेसु	..... + ...	.....
	पायपहारो	..... + ...	.....
	रंगभूमीसु	..... + ...	.....
	सीसच्छेओ	सीसस्स + च्छेओ	.....
	पइदियहं	पइ + दियहं	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
	निवसइ	....	.....	.....	....
	जाणेइ	.....	.....	.....	.....
	सन्नन्ति	.....	.....	... .	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	परिकिन्न	युक्त	भू०कृ०	अनियमित	—
	किज्जंत	किये जाते हुए	व०कृ०	क	इज्ज+अंत
	विरायमाणं	सुशोभित	व०कृ०	विराय	माण
	उवसोहिय	शोभित	भू०कृ०	उवसोह	इ+य
	आगया	आए हुए	भू०कृ०	अनियमित	—

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. वह नगर घिरा हुआ था —

(क) सेना से (ख) महलों से

(ग) परकोटों से (घ) नहर से [ ]

२. गुणों के समूह से वह नगर शोभा धारण करता था —

(क) राजा के नगर की (ख) राजधानी की

(ग) नृत्यशाला की (घ) देव-नगर की [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१, हस्तिनापुर नगर में कैसे लोग रहते थे ?

२. वहाँ के लोगों को सूर्य की गर्मी क्यों नहीं लगती थी ?

३. वह नगर देवताओं के मन को किन चीजों से हरण करता था ?

५ निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) हस्तिनापुर नगर का वर्णन ५-७ पंक्तियों में कीजिए।

(ख) वहाँ के लोगों के स्वभाव का वर्णन कीजिए।

(ग) गाथा नं० १३ एवं १४ का अर्थ समझाकर लिखो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १८ : समुद्द-गमणं

पाठ-परिचय :

लगभग चौदहवीं शताब्दी की लिखी हुई एक हस्तलिखित पुस्तक प्राप्त हुई है। इसका नाम **पाइअकहासंगहो** है। इस प्राकृत कथा-संग्रह में १२ कथाएँ हैं, जो पद्मचन्द्रसूरि के किसी शिष्य द्वारा लिखित **विक्रमसेनचरित** नामक प्राकृत ग्रन्थ से संग्रहीत की गयी हैं। इस ग्रन्थ में दान, शील, तप, भावना आदि से सम्बन्धित कथाएँ हैं। उन्हीं कथाओं में समुद्रदत्त की कथा है। समुद्रदत्त पुरुषार्थी युवक है। उसके समुद्र-गमन का वर्णन इस पाठ में है।

चिंतइ य निसासेसे समुद्दत्तो अहन्नसमयंमि।
जो जणयज्जियलच्छि उवभुंजइ अहमचरिओ सो ॥१॥

किं पढिएणं, बुद्धीए किं, व किं तस्स गुणसमूहेण।
जो पियरविढत्तधणं भुंजइ अज्जणसमुत्थो वि ॥२॥

जणणि-जणयाणचलणे नमिउं विन्नवइ जोडियकरो सो।
जलमग्गेणं अज्जिय बहुदव्वं आगमिस्सामि ॥३॥

ताइं वि भणंति पुत्तय! लच्छी विउला वि अत्थि अम्ह गिहे।
एयं चिय वच्छ! तुमं भुंजसु निच्चं स-इच्छाए ॥४॥

ओवाइय-सय-लद्धो एगो चिय अम्ह पुत्तो सि।
तुम्हारिसाण सुहय-लालियाण दुग्गो जलहिमग्गो ॥५॥

उच्छाहुल्हसि-तणू समुद्दत्तो पयंपए तत्तो।
सुगमं व दुग्गमं वा कुणेइ किं धीरपुरिसाण ॥६॥

पुव्वपुरिसज्जियाइं धणाइं विद्दवइ को न इच्छाए।
जे समज्जिय भुंजन्ति हुन्ति ते उत्तमा के वि ॥७॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

किं बहुणा भणिएणं, जह तह व मए अवस्स गंतव्वं ।
तं निच्छयं मुणेउं विसज्जिओ तेहिं कहकहवि ।।८।।

काऊण जलहिपूयं चलणे नमिऊण जणणि-जणयाण ।
दिन्नासीसो तेहिं चडिओ वहणंमि सेट्ठि-सुओ ।।९।।

वणिउत्तेहिं समेओ सुवियक्खण-णेय-मित्त-संजुत्तो ।
पवणेणाणुकूलेणं पत्तो दीवंमि एयंमि ।।१०।।

मण-इच्छिय-लाहेण विक्किणिय कयाणगाइं तत्थेव ।
गहिऊण अहिणवाइं तेण उप्पेलियं वहणं ।।११।।

जा किं पि गओ मग्गं उच्छलिओ ताव कालिया वाओ ।
संजायं वद्दलयं खलुव्वरवे गज्जिओ मेहो ।।१२।।

डुल्लेइ जाणवत्तं मणव्व दारिद्द-पीडिय-जणस्स ।
जा निज्जामय-लोओ खिवइ अहो नंगरो झत्ति ।।१३।।

आउल-वाउल-हियओ उस्सारइ जाव सियवडे वियडे ।
संचारइ य जाव य आउलयाइं सुबहुयाइं ।।१४।।

ता फुट्टं तं वहणं जलहिमज्झे इच्छियं रहस्सं व ।
को वि मओ को वि पुणो फलहं लहिऊण उत्तरिओ ।।१५।।

सिट्ठि-सुओ वि हु फलहं अवलंबइ वल्लहं व लहिऊण ।
तरमाणो कहकहमवि गिरिंमि पत्तो णिरावत्तो ।।१६।।

पुरिसाण आवयच्चिय वहेइ कसवट्टए सतुल्लत्तं ।
एयाए निवडिओ जो खलु कणयं व सो जच्चो ।।१७।।*

000

* 'पाइयकहासंगहो' सं० – पं० श्रीमानविजय एवं पं० श्रीकान्तविज , से उद्धृत ।
गाथानुक्रम-पृ० ४१, गाथा १८ से २५, २८ से ३५ एवं ४० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

लच्छी	= सम्पत्ति	अहम	= नीच	अज्जण	= कमाना
जणणी	= माता	जणय	= पिता	ताइं	= वे
विउला	= बहुत	वच्छ	= पुत्र	ओवाइय	= उपाय
तुम्हारिस	= तुम्हारे जैसे	दुग्गो	= कठिन	निच्छयं	= निश्चय
समेअ	= सहित	अहिणव	= नया	वाअ	= हवा
वद्दलयं	= बादल	खलु	= दुर्जन	निज्जामय	= मल्लाह

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
समयम्मि	.....	.....	.....	.....
बुद्धीए	.....	.....	.....	.....
चलणे	.....	.....	.....	.....
धीरपुरिसाण	.....	.....	.....	.....
धणाइं	.....	.....	.....	.....
सियवडे	सियवड	प्रथमा	ब०व०	पु०

(ख)

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
अहन्न	अह + अन्न	अ+अ=अ
जणयज्जिय	जणय + अज्जिय	.....
उच्छाहुल्हसिय	उच्छह + उल्हसिय	अ+उ=उ
दिन्नासीसो	दिन्न + आसीसो	.....

(ग)

समासपद	विग्रह	समासनाम
निसासेसे	निसाअ + सेसे	ष० तत्पुरुष
गुणसमूहेण	गुणाण + समूहेण	.....
पियरविढत्तधणं	पियरेण + विढत्तधणं	.....
जलमग्गेणं	जलस्स + मग्गेण	.....
सुहलालियाण	सुहेण + लालियाण	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	विन्नवइ	.....	.....	.....	....
	भुंजसु	... .	.....	.....	.....
	कुणेइ	... .	.....	.....	.....
	विट्ठवइ	विट्ठव	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	पयंपए	कहा	भू०कृ०	अनियमित	—
	मुणेउं	जानकर	भू०कृ०	.....	.....
	विसज्जिओ	भेजा	भू०कृ०	विसज्ज	इ+अ
	पत्तो	पहुँचा	भू०कृ०	अनियमित	—
	गज्जिओ	गरजा	.....	....	.....
	तरमाणो	तैरता हुआ	व०कृ०	तर	माण

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. जो पिता द्वारा कमायी हुई लक्ष्मी का भोग करता है वह —

(क) बुद्धिमान है (ख) श्रेष्ठ पुत्र है

(ग) अधम चरित्र वाला है (घ) आलसी है। [ ]

२. माता-पिता ने कहा कि समुद्र-मार्ग —

(क) सरल है (ख) किले की तरह कठिन है

(ग) सस्ता है (घ) धन देने वाला है [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. समुद्रदत्त धन कमाने के लिए क्यों जाना चाहता था ?

२. लौटते समय समुद्रदत्त को किस कठिनाई का सामना करना पड़ा ?

३. स्वर्ण की तरह खरा व्यक्ति कौन होता है ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) समुद्रदत्त के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) गाथा नं० २, ७ एवं १६ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १६ : गुरूवएसो

पाठ-परिचय :

प्राकृत में कुछ ग्रन्थ गद्य-पद्य दोनों में लिखे गये हैं। ऐसे ग्रन्थों को विद्वानों ने चम्पूकाव्य कहा है। आचार्य हरिभद्रसूरि के शिष्य **उद्द्योतनसूरि** के द्वारा आठवीं शताब्दी में जालोर में लिखित **कुवलयमालाकहा** इसी प्रकार का चम्पूकाव्य है। कुवलयमाला प्राकृत कथा-साहित्य का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। यह कथा, काव्य, संस्कृति की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका सम्पादन डॉ० ए० एन० उपाध्ये ने किया है।

'कुवलयमालाकहा' में कुवलयमाला एवं कुवलयचन्द के चार जन्मों की कथा वर्णित है। क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह इन पाँच भावनाओं को कथा के पात्र बनाकर उनके जीवन के उत्थान की कथा इस ग्रन्थ में कही गई है। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि कोई भी व्यक्ति अपने दुर्गुणों और अनैतिक आचरण को सज्जन लोगों के सम्पर्क तथा अपने पुरुषार्थ से सुधार सकता है। जीवन में अच्छा आचरण धारण करने के लिए इस ग्रन्थ के पात्रों को सन्त पुरुष कुछ उपदेश देते हैं। उन्हीं में से कुछ उपदेशों को यहाँ गुरु-उपदेश के नाम से दिया जा रहा है।

मा मा मारेसु जीए मा परिहव सज्जणे करेसु दयं।
मा होह कोवणा भो खलेसु मित्तिं च मा कुणह ॥१॥

मा कुणह जाइगव्वं परिहर दूरेण धण-मयं पावं।
मा मज्जसु णाणेणं बहुमाणं कुणह जहरूवे ॥२॥

मा हससु परं दुहियं कुणसु दयं णिच्चमेव दीणम्मि ॥
पूएह गुरुं णिच्चं वंदह तह देवए इट्ठे ॥३॥

सम्माणेसु परियणं पणइयणं पेसवेसु मा विमुहं।
अण्णमण्णह मित्तयणं सुपुरिसमग्गो फुडो एसो ॥४॥

मा होह णिरणुकंपा ण वंचया कुणह ताव संतोसं।
माणत्थद्धा मा होह णिक्किंपा होह दाणयरा ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मा कस्स वि कुण णिंदं होज्जसु गुण-गेण्हण ुज्जओ णिययं ।
मा अप्पयं पसंसह जइ वि जसं इच्छसे धवलं ॥६॥

परवसणं मा णिंदह नियवसणे होह बज्जघडिय व्व ।
रिद्धीसु होह पणया जइ इच्छह अत्तणो लच्छी ॥७॥

मा कडुयं भणह जणे महुरं पडिभणह कडुयभणिया वि ।
जइ गेण्हिऊण इच्छह लोए सुहयत्तण-पडायं ॥८॥

हासेण वि मा भण्णउ णवरं जं मम्मवेहयं वयणं ।
सच्चं भणामि एत्तो दोहग्गं णत्थि लोयम्मि ॥९॥

धम्मम्मि कुणह वसणं राओ सत्थेसु णिउणभणिएसु ।
पुणरुत्तं च कलासु ता गणणिज्जो सुयणमज्झे ॥१०॥

मा दोसे च्चिय गेण्हह विरले वि गुणे पयासह जणस्स ।
अक्ख-पउरो वि उयही भण्णइ रयणायरो लोए ॥११॥

जाव य ण देन्ति हिययं पुरिसा कज्जाइं ताव विहणंति ।
अह दिण्णं चिय हिययं गुरुं पि कज्जं परिसमत्तं ॥१२॥

हिम-सीय-चन्द-विमलो पए पए खंडिओ तहा सुयणो ।
कोमल-मुणाल-सरिसो सिणेह-तंतू ण उक्खुडइ ॥१३॥

थेवं पि खुडइ हियए अवमाणं सुपुरिसाण विमलाण ।
वाया-लाहय-रेणं ु पि पेच्छ अच्छि दुहावेइ ॥१४॥*

ooo

* 'कुवलयमाला'– सं० – डॉ० ए० एन० उपाध्ये, से उद्धृत । पृ० ४३, ४४, ३, १३ ६३, १०३ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

कोवण	= क्रोधी	नाइ	= कुल	मय	= घमण्ड
णाण	= ज्ञान	पर	= अन्य	दुहिय	= दुखी
गुरु	= बड़े लोग	इट्ठ	= इच्छित	परियण	= सहकर्मी
पणइयण	= प्रेमीजन	फुड	= स्पष्ट	त्थद्धा	= स्थित
वसण	= विपत्ति	पणय	= विनम्र	सुहयत्तण	= अच्छापन
दोहग्गं	= दुर्भाग्य	वसण	= अभ्यास	सत्थ	= शास्त्र

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	सज्जेण	....	....	....	.....
	पावं	... .	.....	....	....
	दीणम्मि	.....	.....	.....	.....
	वयणं	... .	.....	.....	....
	उयही	.....	.....	.....	....
	तंतू	....	.....	....	....

(ख)	संधिवाक्य	विभक्ति	संधिकार्य
	णिरणुकंपा	णिर + अणुकंपा	अ + अ = अ
	रयणायरो	रयण + आयरो	अ + आ = आ

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	जाइगव्वं	जाइणो + गव्वं	ष० तत्पुरुष
	धणमयं	..... + ...	....
	सुपुरिसमग्गो	..... + ...	....
	परवसणं	..... + ...	....
	सुयणमज्झे	सुयणे + मज्झे	सप्तमी त०
	सिणेहतंतू	..... + ...	....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	मारेसु	मार	आज्ञा	म०पु०	ए०व०
	होज्जसु	होज्ज	.....	.....	.....
	उक्खुडइ	उक्खुड	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	पणया	झुके हुए	भू०कृ०	अनियमित	—
	भणिया	कहे हुए	भू०कृ०	भण	इ + य

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. मैत्री नहीं करना चाहिए —

(क) सज्जनों से (ख) गुरुओं से

(ब) दुर्जनों से (घ) गरीबों से [ ]

२. यदि निर्मल यश चाहते हो तो —

(क) दुखियों की निन्दा मत करो (ख) कड़ुवा न बोलो

(ग) अपनी प्रशंसा मत करो (घ) दूसरों को न ठगो [ ]

३. समुद्र को कहा जाता है —

(क) दुर्गुणों की खान (ख) लक्ष्मी का घर

(ग) रत्नाकर (घ) घोंघों का घर [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. यदि अपनी लक्ष्मी चाहते हो तो क्या करना चाहिए ?

२. संसार में सबसे अधिक दुर्भाग्य क्या है ?

३. किन-किन बातों का घमण्ड नहीं करना चाहिए ?

४. सज्जनों के हृदय में क्या दुख उत्पन्न करता है ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) पाठ की शिक्षाएँ अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) गाथा नं० ८, १२, एवं १३ का अर्थ समझाकर लिखो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २० : सिक्खानीई

पाठ-परिचय :

प्राकृत आगम-ग्रन्थों में से विनोबा जी की प्रेरणा से श्री जिनेन्द्रवर्णी ने ७५६ गाथाओं का एक संकलन तैयार किया। समाज ने उसे 'समणसुत्त' नाम से स्वीकृत किया है। यह समणसुत्त गीता, धम्मपद, बाइबिल, कुरान आदि ग्रन्थों जैसा आध्यात्मिक ग्रन्थ है। उसमें जीवन के उत्थान के लिए कई शिक्षा-सूत्र भी उपलब्ध हैं।

समणसुत्त की सौ गाथाओं को चुनकर दर्शन के प्रोफेसर एवं प्राकृत के अध्येता **डॉ. कमलचन्द सोगाणी** ने **समणसुत्त-चयनिका** नामक पुस्तक तैयार की है। उसी में से कुछ गाथाएँ यहाँ प्रस्तुत की गयी हैं। उनमें आचार्य-स्वरूप, आदर,अप्रमाद जागरूकता, सरलता, सत्य. समन्वय इत्यादि से सम्बन्धित शिक्षा-नीतियाँ कही गयी हैं।

जह दीवा दीवसयं, पइप्पए सो य दिप्पए दीवो।
दीवसमा आयरिया, दिप्पंति परं च दीवेन्ति ॥१॥

जस्स गुरुम्मि न भत्ती, न य बहुमाणो न गउरवं न भयं।
न वि लज्जा न वि नेहो, गुरुकुलवासेण किं तस्स ॥२॥

विवत्ती अविणीअस्स, संपत्ती विणीअस्स य।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥३॥

अह पंचहिं ठाणेहिं. जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थम्भा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण ॥४॥

नालस्सेण समं सुक्खं, न विज्जा सह निद्दया।
न वेरग्गं ममत्तेण, नारंभेण दयालुया ॥५॥

जागरह नरा! णिच्चं, जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धी।
जो सुवति ण सो धन्नो, जो जग्गति सो सया धन्नो ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च।
न हु भे वीससियव्वं, थोवं पि हु तं बहु होइ ।।७।।

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ।।८।।

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चाज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ।।९।।

से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मिअं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं न समायरे ।।१०।।

जो चिंतेइ ण वंकं, ण कुणदि वंकं ण जंपदे वंकं।
ण य गोवदि णियदोसं, अज्जव-धम्मो हवे तस्स ।।११।।

सच्चम्मि वसदि तवो सच्चम्मि संजमो तह वसे सेसा वि गुणा।
सच्चं णिबंधणं हि य, गुणाणमुदधीव मच्छाणं ।।१२।।

हय नाणं कियाहीणं, हया अण्णाणओ किया।
पासन्तो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो य अंधओ ।।१३।।

संजोअसिद्धीइ फलं वयन्ति, न हु एगचक्केण रहो पयाइ।
अंधो य पंगू य वणे समच्चिा, ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा ।।१४।।

सुबहुं पि सुयमहीयं किं काहिइ चरणविप्पहीणस्स।
अंधस्स जह पलित्ता, दीवसय-सहस्सकोडी वि ।।१५।।*

ooo

* गाथानुक्रम - पहले चयनिका-गाथा नं० एवं बाद में समणसुत्त-गाथा- ६८/१७६, १७/२९, ६६/१७०, ६७/१७१, ६४/१६७, ६५/१६८, ४८/१३४, ४९/१३५, ५०/१३६, ५२/१३८, ३५/९१, ३६/९६, ७२/२१२, ७३/२१३, ७९/२६६।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

नेह	= स्नेह	बुहओ	= दोनों प्रकार से	थम्भा	= अहंकार से
आरम्भ	= हिंसा	अण	= ऋण	वण	= घाव
माया	= कपट	पंगुल	= लंगड़ा	भत्ती	= भक्ति
रह	= रथ	सुय	= शास्त्र	चरण	= चरित्र

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	दीवा	....	.....	... .	.....
	भत्ती	.....	.....	.....	.....
	पीइं	....	.....	.....	....
	मच्छाणं	.....	.....	.....	....
	पंगू	.....	.....	.... ..	.....
	संसारे	....	....	.....	.....
	अंधस्स	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विभक्ति	संधिकार्य
	जस्सेयं	जस्स + एयं	अ + ए = ए
	नारंभेण	न + आरंभेण	अ + आ = आ
	नालस्सेण	..... + ...	....
	चाज्जव	च + अज्जव	.....
	जाणमजाणं	जाणं + अजाणं	.....
	खिप्पमप्पाणं	..... + ...	....
	गुणाणमुदधीव	गुणाणं + उदधि + इव	.....

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	गुरुकुलवासेण	गुरुकुले + वासेण	.....
	विणयनासणो	विणयं + नासणो	द्वि० त०
	एगचक्केण	एगेण + चक्केण	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	पइप्पए	अनियमित	वर्तमान	अ०पु०	ए०व०
	दिप्पए	....''....	....''....	....''....	....''....
	बड्ढते	....''....	....''....	... ''....	....''....
	पणासेइ	पणास	व०का०	अ०पु०	ए०व०
	हणे	अनियमित	विधि	अ०पु०	....''....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	नायं	जान लिया है	भू०कृ०	अनियमित	—
	कट्टु	करके	सं०कृ०	....'....	—
	दड्ढो	जल गया	भू०कृ०	....'' ...	—

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. आचार्य किसके समान होते हैं —

(क) चन्द्रमा के (ख) सूर्य के

(ग) दीपक के (घ) पतंगे के [ ]

२. दयालुता नहीं ठहरती है —

(क) गरीबी के साथ (ख) नींद के साथ

(ग) जीव-हिंसा के साथ (घ) क्रोध के साथ [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. किन पाँच कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं होती है ?

२ जीवन में सरलता किसके होती है ?

३. चरित्रहीन व्यक्ति का ज्ञान किसके समान है ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) शिक्षा-नीति पाठ की कोई ५ शिक्षाएँ लिखिए।

(ख) सत्य के महत्त्व पर ५-७ पंक्तियाँ लिखिए।

(ग) गाथा नं० ८, ९, १० एवं १५ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २१ : कुसलो पुत्तो

पाठ-परिचय :

आख्यानमणिकोश में से एक व्यापारी के तीन पुत्रों की कथा यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। इस कथा में नयसार नामक व्यापारी एक दिन विचार करता है कि उसके तीन पुत्रों में से कुटुम्ब के मुखिया का पद सम्हालने वाला कौन पुत्र होगा ? अतः उनकी बुद्धि और लगन की परीक्षा के लिए वह उन्हें एक-एक लाख रुपये व्यापार के लिए देता है। एक वर्ष के समय के भीतर जो पुत्र उन रुपयों का जैसा उपयोग करता है, उसको वैसा ही काम सौंपा जाता है।

यह कथा प्रतीक कथा है, जो यह बतलाती है कि कुल की इज्जत को सुरक्षित रखते हुए उसे और आगे बढ़ाने का प्रयत्न करने वाला पुत्र ही कुशल पुत्र होता है। जो ऐसा नहीं करता उसे कठोर परिश्रम वाला कार्य करना पड़ता है और दूसरे के अधीन रहना होता है।

नयरम्मि वसन्तपुरे नायरयजणाण गोरवट्ठाणं।
निवसइ सुइववहरणो नयसारो नाम पुरसेट्ठी ॥१॥

अह अन्नया य को किर कुडुम्ब-पय-समुचिओ महं होही।
इय चिंताए तिण्हं पुत्ताण परिक्खणनिमित्तं ॥२॥
निय-सयण-बन्धु-पमुहं नायरयजणं निमंतिउं गेहे।
भोयाविऊण विहिणा तस्स समक्खं भणइ सेट्ठी ॥३॥

एएसि मह सुयाणं तिण्हं पि हु को कुडुम्ब-पय-जोगो।
तं चेव विसेसेणं जाणसि जोगो त्ति तेण तुं ॥४॥

इय एवं ता तुम्हं समक्खमेए अहं परिक्खेमि।
इय भणिउं वाहरिया तिन्नि वि ते पउर-पच्चक्खं ॥५॥

पत्तेयं पत्तेयं लक्खं दाऊण दविणजायस्स।
ववहारत्थं देसेसु पेसिया तस्स समक्खमिमे ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो तेसिं पुत्ताणं चिंतियमेगेणमम्हमेस पिया।
पाएण दोहदरिसी धम्मपिओ सुइ-समायारो ॥७॥

पाणच्चए वि अम्हाणमुवरि न कयावि चिंतइ विरूवं।
केणावि कारणेणं ता नूणं एत्थ भवियव्वं ॥८॥

इय परिभाविय तहियं तह कहवि हु नियमईए ववहरियं।
जह विढविऊण कोडी वरिसन्ते पूरिया तेण ॥९॥

बीएण चिंतियमिमं मम पिउणो विज्जए पभूय धणं।
ता किं किलेसजाले पाडेमि मुहाए अप्पाणं ॥१०॥

जइ सव्वं पि य विलसामि ता गओ कह मुहं पयंसिस्सं।
तम्हा मूलं रक्खिय सेसं भक्खेमि किं बहुणा ॥११॥

तइएणमजोगत्ता विगप्पियं नियमणम्मि मह जणओ।
वुड्ढत्तणदोसेहिं संपइ कोडिकओ जम्हा ॥१२॥

तिट्ठा लज्जानासो भयबाहुल्लं विरूवभासित्तं।
पाएण मणुस्साणं दोसा जायन्ति वुड्ढत्ते ॥१३॥

अन्नह कहमम्हे पट्ठवेइ देसंतरम्मि सइ विहवे।
इय परिभाविय सव्वं वरिसंते भक्खियं दव्वं ॥१४॥

संपत्ता सव्वे वि हु नियसमए वन्नियस्सरूवा ते।
पुणरवि तहेव विहिऊण सेट्ठिणा भोयणाईयं ॥१५॥
सयणाईण समक्खं पढमो संठाविओ कुडुम्बपए।
बीओ भण्डारपए तइओ किसिमाइकज्जेसु ॥१६॥*

ooo

* 'आख्यानमणिकोश'-सं०- मुनि पुण्यविजय, से उद्धृत। गाथानुक्रम-आख्यानक ६२, पृ० १७७-७८, गाथा २ से १७ तक।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

पुरसेट्ठि	= नगरसेठ	महं	= मेरा	तिण्हं	= तीन
परिक्खण	= परीक्षा	सयण	= स्वजन	नायरय	= नागरिक
समक्खं	= सामने	जोग	= योग्य	पत्तेयं	= प्रत्येक
दविणजाय	= स्वर्णमुद्रा	ववहार	= व्यापार	पिया	= पिता
विरूवं	= विपरीत	किलेस	= कष्ट	मुहाए	= व्यर्थ में
तिट्ठा	= तृष्णा	वुड्ढत्तण	= बुढ़ापा	तइय	= तीसरा

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
विहिणा	.....	... .	....	.....
मईए	.....	....	.....	... .
दोसेहिं	.....	.....	.....	.....
विहवे	.....	.....	.....	.....

(ख)

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
तेणुत्तं	तेण + उत्तं	अ + उ = उ
समक्खमिमे	समक्खं + इमे	... .
चिंतियमेगेणम्हमेस	चिंतियं + एगेणं + अहं + एस	अनुस्वार को म
अम्हाणमुवरि	... . + ...	.....
भोयणाईयं	भोयण + आईयं	....

(ग)

समासपद	विग्रह	समासनाम
गोरवट्ठाणं	गोरवस्स + ट्ठाणं	षष्ठी तत्पुरुष
पुरसेट्ठी	..... + ...	... .
किलेसजाले	किलेसाण + जाले	.....
वुड्ढत्तणदोसेहिं	..... + ...	.....
भंडारपए	..... + ...	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	परिक्खेमि	.....	.....	.....	.....
	जायन्ति	.....	.....	.....	.....
	भक्खेमि	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	निमंतिउं	निमन्त्रण कर	सं०कृ०	निमंत	इ+उं
	पेसिया	.....	.....	.....	.....
	पूरिया	पूरी कर ली	भू०कृ०	पूर	इ+य
	रक्खिय	.....	.....	.....	.....
	परिभाविय	विचार कर	सं०कृ०	परिभाव	इ+य

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. नयसार सेठ ने अपने पुत्रों को बुलाया था —

(क) ईनाम देने के लिए (ख) परीक्षा करने के लिए

(ग) विदेश भेजने के लिए (घ) सलाह करने के लिए [ ]

२. पहले पुत्र ने मूल पूँजी को —

(क) खा लिया (ख) सुरक्षित रखा

(ग) बढ़ाकर १ करोड़ कर लिया (घ) दान दे दिया [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. नयसार अपने पुत्रों की परीक्षा किस लिए करना चाहता था ?

२. तीसरे पुत्र ने अपने बूढ़े पिता के सम्बन्ध में क्या सोचा ?

३. परिवार के प्रमुख का पद किस पुत्र को और क्यों मिला ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) इस पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) कुशलपुत्र के विचार अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) गाथा नं० १० एव ११ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २२ : साहसी अगडदत्तो

पाठ-परिचय :

उत्तराध्ययनसूत्र पर आचार्य नेमिचन्दसूरि की सुखबोधा टीका में से १२ कथाओं का सम्पादन एवं प्रकाशन मुनि **श्री जिनविजय** ने **प्राकृतकथा-संग्रह** नाम से किया है। उन्ही कथाओं में से यह अगडदत्त की कथा का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है।

अगडदत्त कथा एक प्रचलित लोककथा है। चौथी शताब्दी में लिखित 'वसुदेवहिण्डी' नामक प्राकृत ग्रन्थ में यह कथा मूलरूप में मिलती है। उसके बाद कई लेखकों ने इसे लिखा है। प्रस्तुत कथांश में अगडदत्त के उस साहस-कार्य का वर्णन है, जिसमें उसने एक मदोन्मत हाथी को अपने वश में किया है। उसके इस कार्य को देखकर नगर के राजा ने उसका सम्मान किया।

अन्नंमि दिणे सो राय-नन्दणो वाहियाए मग्गेणं।
तुरयारूढो वच्चइ ता नयरे कलयलो जाओ ॥१॥

किं चलिउ व्व समुद्दो किं वा जलिओ हुयासणो घोरो।
किं पत्तं रिउ-सेन्नं तडि-दण्डो निवडिओ किं वा ॥२॥

एत्थन्तरम्मि सहसा दिट्ठो कुमरेण विम्हियमणेण।
मय-वारणो उ मत्तो निवाडियालाण-वर-खम्भो ॥३॥

मिण्ठेण वि परिचत्तो मारेन्तो सोण्ड-गोयरं पत्तो।
सवडं मुहं चलन्तो कालो व्व अकारणे कुद्धो ॥४॥

तुट्ट-पय-बन्ध-रज्जू संचुण्णिय-भवण-हट्ट-देवउलो।
खण-मेत्तेण पयण्डो सो पत्तो कुमर-पुरओ त्ति ॥५॥

तं तारिस-रूव-धरं कुमरं दट्ठूण नायर-जणेहिं।
गहिर-सरेणं भणिओ ओसर ओसर करि-पहाओ ॥६॥

कुमरेण वि निय-तुरयं परिचइऊणं सुदक्ख-गइ-गमणं।
हक्कारिओ गइन्दो इन्द-गइन्दस्स सारिच्छो ॥७॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुणिउं कुमार-सद्दं दन्तो पज्झरिय-मय-जल-पवाहो ।
तुरिओ पहाविओ सो कुद्धो कालो व्व कुमरस्स ।।८।।

कुमरेण य पाउरणं संवेल्लेऊण हिट्ठ-चित्तेण ।
धावन्त-वारणस्स सोण्डापुरओ उ पक्खित्तं ।।९।।

कोवेण धमधमेन्तो दन्तच्छोभे च देइ सो तम्मि ।
कुमरो वि पिट्ठभाए पहणइ दढ-मुट्ठि-पहरेणं ।।१०।।

ता ओधावइ धावइ चलइ खलइ परिणओ तहा होइ ।
परिभमइ चक्क-भमणं दोसेणं धमधमेन्तो सो ।।११।।

अइव महन्तं वेलं खेल्लावऊण तं गयं पवरं ।
नियय-वसे काऊणं आरूढो तस्स खन्धम्मि ।।१२।।

अह तं गइन्द-खेड्डं मणोहरं सयल-नयर-लोयस्स ।
अन्तेउर-सरिसेणं पलोइयं नरवरिन्देणं ।।१३।।

दट्ठुं कुमरं गय-खन्ध-संठियं सुरवइं व सो राया ।
पुच्छइ निय-भिच्च-यणं को एसो गुण-निही बालो ।।१४।।

तेएणं अहिमयरो सोमत्तणएण तह य निसिनाहो ।
सव्व-कलागम-कुसलो वाई सूरो सुरूवो य ।।१५।।

को चित्तेइ मऊरं गइं च को कुणइ रायहंसाणं ।
को कुवलयाण गन्धं विणयं च कुल-प्पसूयाणं ।।१६।।

साली भरेण तोएण जलहरा फलभरेण तरु-सिहरा ।
विणएण य सप्पुरिसा नमन्ति न हु कस्स वि भएण ।।१७।।*

000

* 'प्राकृत कथा-संग्रह'—सं०-मुनि जिनविजय, से उद्धृत । गाथानुक्रम-७-अगडदत्त, गाथा ५१ से ६५ एवं ७१, ७२, ७५ और ७६ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

कलयल	= कोलाहल	**हुयासण**	= अग्नि	**घोर**	= भयंकर
रिउसेन्नं	= शत्रु सेना	**तडिदण्डो**	= वज्र	**वारण**	= हाथी
मिण्ठ	= महावत	**सोण्ड**	= सूँड	**काल**	= मृत्यु
सवडं	= सामने	**हट्ट**	= बाजार	**पयण्ड**	= प्रचण्ड
सर	= स्वर	**तुरय**	= घोड़ा	**वेला**	= समय
सुरवइ	= इन्द्र	**महो**	= पृथ्वी	**जलहर**	= बादल

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	**मूलशब्द**	**विभक्ति**	**वचन**	**लिंग**
नयरे	.....	.....	.....	.....
सेन्नं	.....	.....	.....	.....
रज्जू	.....	.....	.....	.....
पहाओ	पह	पंचमी	ए०व०	नपुं०
गइन्दस्स	.....	.....	.....	.....
गयं	.....	.....	.....	.....
तोएण	.....	.....	.....	.....

(ख)

संधिवाक्य	**विभक्ति**	**संधिकार्य**
तुरयारूढो	तुरय + आरूढो	.....
निवाडियालाण	..... + ...	.....
कलागम	..... + ...	.....

(ग)

समासपद	**विग्रह**	**समासनाम**
रिउसेन्नं	रिउणो + सेन्नं	ष० तत्पुरुष
रायनन्दणो	..... + ...	.....
तरुसिहरा	..... + ...	.....
निसिनाहो	निसीअ + नाहो	.....
गुणनिही	..... + ...	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	वच्चइ	.....	.....	.....	.....
	ओसर	ओसर	आज्ञा	म०पु०	ए०व०
	देइ	दा	व०का०	अ०पु०	ए०व०
	परिभमइ	....	.....	.....	.....
	चिन्तेइ	....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	मारेन्तो	मारता हुआ	व०कृ०	मार	ए+न्त
	पलोइयं	देखा	भू०कृ०	अनियमित	—
	दट्ठुं	देखकर	सं०कृ०	....''....	—
	चिन्तियं	सोचा	भू०कृ०	चिन्त	इ+य

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. नगर में कोलाहल का कारण था —

(क) राजकुमार का आगमन (ख) शत्रु की सेना

(ग) पागल हाथी (घ) बिजली का गिरना [ ]

२. हाथी पर चढ़ा हुआ वह कुमार था —

(क) महावत की तरह (ख) राजा की तरह

(ग) साधु की तरह (घ) इन्द्र की तरह [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. पागल हाथी ने नगर को क्या नुकसान पहुँचाया ?

२. राजा ने विजयी कुमार को देखकर क्या पूछा ?

३ विनय से सज्जन पुरुष किसकी तरह झुक जाते हैं ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) अगडदत्त और हाथी की लड़ाई का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) गाथा नं० १४, १५, १६ एवं १७ का अर्थ समझाकर लिखो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २३ : अहिंसा-खमा

पाठ-परिचय :

प्राकृत साहित्य के कई ग्रन्थों में विभिन्न जीवन-मूल्यों का वर्णन प्राप्त होता है। अहिंसा और क्षमा भारतीय संस्कृति के प्रमुख जीवन-मूल्य हैं। छोटे से छोटे प्राणी के जीवन का महत्त्व समझना अहिंसा का मूलमन्त्र है। सभी प्राणी जीने की इच्छा रखते हैं। किसी को दुःख प्रिय नहीं है। अतः सब प्राणियों का आदर किया जाना चाहिए। किसी को पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए, यही ज्ञान का सार है। इस प्रकार की अहिंसा को आकाश से भी व्यापक और पर्वत से भी ऊँचा (श्रेष्ठ) कहा गया है।

जीवों की रक्षा करने से उन्हें भय से मुक्ति मिलती है। अभय प्रदान करने से सभी प्राणी सद्भाव से जीवनयापन करते हैं। समर्थ प्राणी, अपराधी प्राणियों के प्रति भी क्षमाभाव रखते हैं। क्योंकि किसी प्राणी का किसी दूसरे प्राणी से कोई स्थायी वैरभाव नहीं है। क्षमा के वातावरण से मैत्रीभाव विकसित होता है। इन्हीं सब अहिंसा, अभय, क्षमा आदि भावनाओं से सम्बन्धित कुछ गाथाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं, जो प्राकृत के विभिन्न ग्रन्थों से संकलित की गयी हैं।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसन्ति, जस्स धम्मे सयामणो ॥१॥

तुंगं न मंदराओ, आगासाओ विसालयं नत्थि।
जह जह जयंमि जाणसु, धम्ममहिंसासमं नत्थि ॥२॥

सव्वे जीवा वि इच्छन्ति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गन्था वज्जयन्ति णं ॥३॥

जह ते न पिअं दुक्खं जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं।
सव्वायरमुवउत्तो, अत्तोवम्मेण कुणसु दयं ॥४॥

जीववहो अप्पवहो. जीवदया अप्पणो दया होइ।
ता सव्व-जीव-हिंसा, परिचत्ता अत्तकामेहिं ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सव्वेसिमासमाणं हिदयं गब्भो व सव्वसत्थाणं ।
सव्वेसिं वदगुणाणं पिंडो सारो अहिंसा दु ।।६।।

खण-मित्त-सुक्ख-कज्जे जीवे निहणन्ति जे महापावा ।
हरिचन्दण-वण-संडं दहन्ति ते छारकज्जम्मि ।।७।।

किं ताए पढियाए पय-कोडीए पलालभूयाए ।
जं इत्तियं न नायं परस्स पीडा न कायव्वा ।।८।।

जं कीरइ परिरक्खा णिच्चं मरण-भयभीरुजीवाणं ।
तं जाण अभयदाणं सिहामणिं सव्वदाणाणं ।।९।।

जीवाणमभयपदाणं जो देइ दयावरो नरो णिच्चं ।
तस्सेह जीवलोए कुत्तो वि भयं न संभवइ ।।१०।।

सव्वे वि गुणा खंतीइ वज्जिया नेवदिन्ति सोहग्गं ।
हरिणंक-कल-विहूणा रयणी जह तारयड्ढावि ।।११।।

खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमन्तु मे ।
मित्ती मे सव्वभूदेसु, वेरं मज्झं ण केण वि ।।१२।।*

ooo

* गाथानुक्रम १ से ५ एवं १२ 'समणसुत्त' से उद्धृत गाथा नं० ८२, १५८, १४८ १५०, १५१ एवं ८६ । गाथानुक्रम ६ से ११ 'प्राकृत सूक्ति-संग्रह' से उद्धृत ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

उक्किट्ठ	= सर्वोच्च	मंदर	= मेरु पर्वत	जय	= संसार
सव्व	= सब	तम्हा	= इसलिए	णिग्गंथ	= संयत व्यक्ति
णं	= उस	अप्पणो	= अपनी	अत्तकाम	= महापुरुष
गब्भ	= आधार	पिंड	= समूह	खणमित्त	= क्षणमात्र
वणसंड	= वन-समूह	छार	= राख	पलाल	= भूसा
सिहामणि	= सिरमौर	खंती	= शान्ति (क्षमा)	हरिणंक	= चन्द्रमा

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
मंदराओ	मंदर	पंचमी	ए०व०	पु०
आगासाओ	....	... .	.....	.....
अत्तकामेहिं	.....	.....	.....	.....
जे	... .	.....	.....	.....
खंतीइ	.....	.....	.....	.....
केण	....	... .	.....	.....

(ख)

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
मंगलमुक्किट्ठं	..... + ...	.....
अत्तोवम्मेण	अत्त + उम्वमेण	अ + उ = ओ
सव्वायरमुवउत्तो	सव्वायरं + उवउत्तो	....
सव्वेसिमासमाणं	सव्वेसिं + आसमाणं	.....
तस्सेह	तस्स + एह	.....

(ग)

समासपद	विग्रह	समासनाम
पाणवहं	पाणाण + वहं	....
जीववहो	..... + ...	.....
सव्वसत्थाणं	सव्वाण + सत्थाणं	.....
वदगुणाणं	वदाण + गुणाणं	... .

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	नमंसन्ति	नमंस	वर्तमान	अ०पु०	ब०व०
	जाणसु	.....	.....	.....	.....
	वज्जयन्ति	.....	.....	.....	.....
	संभवइ	.....	.....	.....	.....
	खमन्तु	.....	.....	.....	.....
	खम्मामि	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	जाणिअ	जानकर	.....	.....	.....
	कायव्वा	करना चाहिए	विधि	का (कर)	यव्व

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. पीड़ादायक प्राणवध का त्याग करते हैं —

(क) प्रमादी लोग (ख) मांसाहारी लोग

(ग) संयत व्यक्ति (घ) शिकारी [ ]

२. सभी व्रतों का सार और सभी गुणों का समूह है —

(क) तप (ख) पूजा

(ग) स्वाध्याय (घ) अहिंसा [ ]

४. लघूत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. देव भी किस को नमस्कार करते हैं ?

२. जीवलोक में किसको भय उत्पन्न नहीं होता है ?

३. क्षमा से रहित अन्य गुण किसकी तरह हैं ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) अहिंसा के सम्बन्ध में ५-७ पंक्तियाँ लिखिए।

(ख) अभय और क्षमा का महत्त्व लिखिए।

(ग) गाथा नं० ४, ७ एवं १२ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २४ : अहिंसओ बाहुबली

पाठ-परिचय :

प्राकृत का सर्व प्रथम चरित-काव्य **पउमचरियं** है। महाकवि **विमलसूरि** ने ईसा की लगभग २-३ री शताब्दी में इसे लिखा था। इस ग्रन्थ में ऋषभदेव, भरत बाहुबली, रामचन्द्र, हनुमान आदि महापुरुषों का जीवन-चरित वर्णित है। रामकथा पर प्राकृत भाषा में लिखा जाने वाला यह पहला ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ० हर्मन जेकोबी एवं मुनि पुण्यविजय ने किया है।

भरत और बाहुबली ऋषभदेव के पुत्र माने गये हैं। दोनों अलग-अलग प्रान्तों के राजा थे। किन्तु भरत ने दिग्विजय करने के उद्देश्य से बाहुबलीं को भी अपने अधीन करना चाहा। इसके लिए भरत युद्ध करने के लिए बाहुवली के राज्य में पहुँचा। तब अपने राज्य की रक्षा करने के लिए बाहुबली ने भरत का सामना किया। किन्तु युद्ध में हजारों निरपराध व्यक्तियों की हत्या को देखकर बाहुबली ने भरत के सामने यह प्रस्ताव रखा कि हम दोनों आपस में शारीरिक युद्ध करके हारजीत का निर्णय कर लें। बाहुबली का यह प्रस्ताव इस देश में सबसे पहली अहिंसक-संधि थी, जिसने देश-रक्षा के साथ-साथ प्राणी-रक्षा भी की।

तक्खसिलाए महप्पा बाहुबली तस्स निच्च-पडिकूलो।
भरह-नरिन्दस्स सया न कुणइ आणा-पणामं सो ॥१॥

अह रुट्ठो चक्कहरो तस्सुवरिं सयल-साहण-समग्गो।
नयरस्स तुरियचवलो विणिग्गओ सयल-बल-सहिओ ॥२॥

पत्तो तक्खसिलपुरं जय-सद्द-ग्घुट्ट-कलयलारावो।
जुज्झस्स कारणत्थं सन्नद्धो तक्खणं भरहो ॥३॥

बाहुबली वि महप्पा, भरहनरिन्दं समागयं सोउं।
भड-चडयरेण महया, तक्खसिलाओ विणिज्जाओ ॥४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बल-दप्प-गव्वियाणं उभयबलाणं रसन्ततूराणं ।
आभिट्टं पर-मरणं नच्चन्त-कबन्ध-पेच्छणयं ॥५॥

भणिओ य बाहुबलिणा चक्कहरो किं वहेण लोयस्स ।
दोण्हं पि होउ जुज्झं दिट्ठि-मुट्ठीहि रणमज्झे ॥६॥

एवं च भणियमेत्ते दिट्ठीजुज्झं तओ समब्भडियं ।
भग्गो य चक्कवुपसरो पढमं च निज्जिओ भरहो ॥७॥

पुणरवि भुयासु लग्गा एक्केक्कं कढिण-दप्प-माहप्पा ।
चल-चलण-पीण-पेल्लण-करयल-परिहत्थविच्छोहा ॥८॥

अद्ध-तडिजोत्तबन्धण-अवहत्थुव्वत्त-करण-निम्मविया ।
जुज्झन्ति सवडहुत्ता अभग्गमाणा महापुरिसा ॥९॥

एवं भरहनरिन्दो निहओ भुयविक्कमेण संगामे ।
तो मुयइ चक्करयणं तस्स वहत्थं परम-रुट्ठो ॥१०॥

विणिवायण-असमत्थं गन्तूण सुदरिसणं पडिनियत्तं ।
भुयबल-परक्कमस्स वि संवेगो तक्खणुप्पन्नो ॥११॥

जंपइ अहो अकज्जं जं जाणन्ता वि विसयलोभिल्ला ॥
पुरिसा कसायवसगा करेन्ति एक्केक्कमविरोहं ॥१२॥

छारस्स कए नासन्ति चन्दणं मोत्तियं च दोरत्थे ।
तह मणुय-भोग-मूढा नरा वि नासन्ति देविड्ढिं ॥१३॥*

000

* 'पउमचरियं'—सं०- डॉ० हर्मन जैकोबी, मुनि पुण्यविजय, से उद्धृत । गाथानुक्रम उद्देश्य ४ एवं गाथा नं० ३८ से ५० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

महप्पा	= महान्	पडिकूल	= विरोधी	आणा	= आज्ञा
चक्कहर	= चक्रवर्ती	साहण	= सेना	तुरिय	= शीघ्र
सयल	= समस्त	उग्घुट्ट	= उद्घोष	जुज्झ	= युद्ध
चडयर	= समूह	बल	= सेना	पेच्छणय	= दर्शनीय
चक्खु	= आँख	भुया	= बाँह	परिहत्थ	= निपुण
अवहत्थ	= उठा हाथ	उव्वत्तकरण	= दावपेंच	सवडहुत्ता	= आमने-सामने

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूल शब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	तक्खसिलाए	.....	.....	.....	.....
	नयरस्स	.....	.....	.....	.....
	बलाणं	.....	.....	.....	.....
	मुट्ठीहि	.....	.....	.....	.....
	संगामे	.....	.....	.....	.....
	चंदणं	.....	.....	.....	.....
	नरा	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	तस्सुवरिं	..... + ...	.....
	सद्दुग्घुट्ट	..... + ...	.....
	तक्खणुप्पन्नो	..... + ...	.....
	एक्केक्कमविरोहं	एक्क + एक्कं + अविरोहं	.....
	दोरत्थे	दोर + अत्थे	.....

(ग)	समासनाम	विग्रह	समासनाम
	बलदप्पगव्वियाणं	बलदप्पेण + गव्वियाणं	तृ० तत्पुरुष
	बलदप्प	बलस्स + दप्प	ष० त०
	भुयविक्कमेण	भुयस्स + विक्कमेण	.....
	विसयलोभिल्ला	विसयस्स + लोभिल्ला	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
	होउ	हो	इच्छा	अ०पु०	ए०व०
	उज्झन्ति	.....	... .	....	....
	मुयइ	....	.....	... .	....
	करेन्ति	....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त रूप	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	विणिग्गओ	निकला	भू०कृ०	अनियमित	—
	सोउं	सुनकर	सं०कृ०	सुअ	उं
	नच्चन्त	नाचते हुए	व०कृ०	नच्च	न्त
	निज्जिओ	जीत लिया गया	भू०कृ०	अनियमित	—

. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. बाहुबली रहता था —

(क) उज्जैनी में (ख) अयोध्या में

(ग) तक्षशिला में (घ) भरत के साथ [ ]

२. भरत ने बाहुबली के वध के लिए छोड़ा —

(क) बाण (ख) पागल हाथी

(ग) चक्ररत्न (घ) भाला [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. भरत और बाहुबली में युद्ध क्यों हुआ ?

२. सैनिकों के वध को बचाने के लिए बाहुबली ने क्या प्रस्ताव रखा ?

३. युद्ध के अन्त में बाहुबली ने क्या विचार व्यक्त किये ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) भरत और बाहुबली की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) गाथा नं० ६, १२ एवं १३ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २५ : कहा-वण्णणं

पाठ-परिचय :

महाकवि **कोऊहल** के द्वारा रचित **लीलावईकहा** कथा एवं काव्य-ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ लगभग ६ वीं शताब्दी में लिखा गया था। इसका सम्पादन **डॉ. ए. एन. उपाध्ये** ने किया है।

लीलावईकहा में प्रतिष्ठान नगर के राजा सातवाहन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी लीलावती के जीवन की कथा है। इसमें महाकाव्य के अनुसार जीवन के विभिन्न पक्षों का काव्यात्मक शैली में वर्णन किया गया है। प्राचीन काव्यों में कथा वर्णन की परिपाटी से परिचय कराने के लिए लीलावईकहा के कथा-वर्णन की कुछ गाथाएँ यहाँ चयनित की गयी हैं। उनमें सज्जन-दुर्जन, शरद ऋतु, हंस, चन्द्रमा, देश, राजा आदि का वर्णन है।

जयंति ते सज्जण-भाणुणो सया वियारिणो जाण सुवण्ण-संचया।
अइट्ठ-दोसा वियसन्ति संगमे कहाणुबन्धा कमलायरा इव ॥१॥

सो जयउ जेण सुयणा वि दुज्जणा इह विणिम्मिया भुवणे।
ण तमेण विणा पावन्ति चन्द-किरणा वि परिहावं ॥२॥

सज्जण-संगेण वि दुज्जणस्स ण हु कलुसिमा समोसरइ।
ससि-मण्डल-मज्झ-परिट्ठिओ वि कसणो च्चिय कुरंगो ॥३॥

तस्स तणएण एयं असार-मइणा वि विरइयं सुणह।
कोऊहलेण लीलावइ त्ति णामं कहा-रयणं ॥४॥

तं जह मियंक-केसरि-कर-पहरण-दलिय-तिमिर-करि-कुम्भे।
विक्खित्त-रिक्ख-मुत्ताहलुज्जले सरय-रयणीए ॥५॥

इमिणा सरएण ससी ससिणा वि णिसा णिसाए कुमुय-वणं।
कुमुय-वणेण व पुलिणं पुलिणेण व सहइ हंस-उलं ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णव-बिस-कसाय-संसुद्ध-कंठ-कल-मणोहरो णिसामेह ।
सरय-सिरि-चलण-णेउर-राओ इव हंस-संलावो ।।७।।

संचरइ सीयलायंत-सलिल-कल्लोल-संग-णिव्वविओ ।
दर-दलिय-मालई-मुद्ध-मउल-गंधुद्धुरो पवणो ।।८।।

एसा वि दस-दिसा-वहु-वयण-विसेसावलि व्व सर-सलिले ।
विम्वल-तरंग-दोलंत-पायवा सहइ वणराई ।।९।।

सासणमिव पुण्णाणं जम्मुप्पत्ति व्व सुह-समूहाणं ।
आयरिसो आयाराण सइ सुछेत्तं पिव गुणाणं ।।१०।।

तत्थेरिसम्मि णयरे णीसेस-गुणावगूहिय-सरीरो ।
भुवण-पवित्थरिय-जसो राया सालाहणो णाम ।।११।।

जो सो अविग्गहो वि हु सव्वंगावयव-सुन्दरो सुहओ ।
दुद्दंसणो वि लोयाण लोयणाणन्द-संजणणो ।।१२।।

कुवई वि वल्लहो पणइणीण तह णयवरो वि साहसिओ ।
पर-लोय-भीरुओ वि हु वीरेक्क-रसो तह च्चेय ।।१३।।

सूरो वि ण सत्तासो सोमो वि कलंक-वज्जिओ णिच्चं ।
भोई वि ण दोजीहो तुंगो वि समीव-दिण्ण-फलो ।।१४।।

णिय-तेय-पसाहिय-मंडलस्स ससिणो व्व जस्स लोएण ।
अक्कंत-जयस्स जए पट्ठी ण परेहि सच्चविया ।।१५।।

हियए च्चेय विरायन्ति सुइर-परिचिंतिया वि सुकईण ।
जेण विणा दुहियाण व मणोरहा कव्व-विणिवेसा ।।१६।।*

000

---

* 'लीलावई' –सं०– डॉ० ए० एन० उपाध्ये, से उद्धृत । गाथानुक्रम-१२, १३, १६, २२, २३, २५ से २८, ४८, ६४ से ६७, ६९ एवं ७२ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

भाण	= सूर्य	संगम	= संगति	भुवण	= संसार
तम	= अंधकार	परिहाव	= उत्कर्ष	कलुसिमा	= कालिमा
कसण	= काला	कुरंग	= मृग	तणअ	= पुत्र
केसरि	= सिंह	णिसा	= रात्रि	विस	= कमलनाल
सिरि	= लक्ष्मी	कल्लोल	= तरंग	वयण	= मुख
कुवइ	= पृथ्वीपति	अविग्गहो	= युद्ध रहित	तुंगो	= स्वाभिमानी

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	सुयणा	.....	.....	.....	.....
	कसणो	.....	.....	.....	.....
	ससिणा	.....	.....	.....	.....
	वणराई	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विभक्ति	संधिकार्य
	कहाणुबंधा	..... + ...	....
	सासणमिव	..... + ...	....
	जम्मुप्पत्ति	..... + ...	.....
	तत्थेरिसम्मि	तत्थ + एरिसम्मि	अ + ए = ए
	लोयणाणंद	..... + ...	....
	सत्तासो	सत्त + आसो	अ + आ = आ

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	चंदकिरणा	..... + ...	....
	सरयरयणी	..... + ...	.....
	हंससंलावो	..... + ...	.....
	कव्वविणिवेसा	..... + ...	....
	कलंकवज्जिओ	कलंकेण + वज्जिओ	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	णिसामेह	णिसाम	आज्ञा	म०पु०	ए०व०
	वियसन्ति	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्त	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	अवगूहिय	युक्त	भू०कृ०	अवगूह	इ+अ
	पवित्थरिय	फैला हुआ	भू०कृ०	पवित्थर	इ+य

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. सज्जन की उपमा दी गयी है —

(क) कमल से (ख) सूर्य से

(ग) चन्द्रमा से (घ) चन्दन से [ ]

२. 'लीलावई' कथा के रचनाकार हैं —

(क) विमलसूरि (ख) हालकवि

(ग) कोऊहल (घ) प्रवरसेन [ ]

३. 'सूरो वि ण सत्तासो' का वास्तविक अर्थ है —

(क) योद्धा होते हुए भी भय-युक्त नहीं (ख) सूर्य होते हुए भी भयभीत नहीं (ग) अंधा होते हुए भी डरा हुआ नहीं [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. सज्जन के साथ दुर्जन की उपस्थिति क्यों आवश्यक है ?

२. शरद की रात्रि में चन्द्रमा और तारे कैसे लगते हैं ?

३. हंसों के कलरव की उपमा कवि ने किससे दी है ?

४. राजा के बिना कवियों की काव्य-रचना का क्या होता था ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) शरद ऋतु का वर्णन अपने शब्दों में करिए।

(ख) राजा की ४-५ विशेषताएँ लिखिए।

(ग) गाथा नं० १, १० एवं १५ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १६ : जीवण-मुल्लं

पाठ-परिचय :

प्राकृत मुक्तक साहित्य में 'वज्जालग्गं' ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस ग्रन्थ की गाथाएँ व्यक्तिगत रसास्वादन के साथ-साथ लोक-मंगल की भावना से भरी हुई हैं। पुरुषार्थ, ज्ञान, चरित्र, गुण-गरिमा, संगति, मित्रता, स्नेह आदि अनेक जीवन-मूल्यों का उद्‌घाटन इस ग्रन्थ की गाथाओं से होता है।

वज्जालग्गं के इसी महत्त्व को देखते हुए दर्शन के प्रोफेसर एवं प्राकृत के अध्येता **डॉ० कमलचन्द सोगाणी** ने **'वज्जालग्ग में जीवन-मूल्य भाग १'** नामक पुस्तक में इस ग्रन्थ की सौ गाथाओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। उसी से इस पाठ की गाथाएँ चयनित की गयी हैं। इन गाथाओं में कहा गया है कि धैर्यशाली पुरुष अपने कार्य को कभी अधूरा नहीं छोड़ते। ज्ञान से बढ़कर कोई बन्धु नहीं है। चरित्र की महिमा सबसे बढ़कर है। गुणी व्यक्ति हर प्रकार से आदर योग्य है, इत्यादि।

तं मित्तं कायव्वं जं किर वसणम्मि देसकालम्मि ।
आलिहिय-भित्ति-बाउल्लयं व न परंमुहं ठाइ ।।१।।

कीरइ समुद्दतरणं पविसिज्जइ हुयवहम्मि पज्जलिए ।
आयामिज्जइ मरणं नत्थि दुलंघं सिणेहस्स ।।२।।

एक्काइ नवरि नेहो पयासिओ तिहुयणम्मि जोण्हाए ।
जा झिज्जइ झीणे ससहरम्मि वड्ढेइ वड्ढंते ।।३।।

एमेव कह वि कस्स वि केण वि दिट्ठेण होइ परिओसो ।
कमलायराण रइणा किं कज्जं जेण वियसन्ति ।।४।।

सीलं वरं कुलाओ दालिद्दं भव्वयं च रोगाओ ।
विज्जा रज्जाउ वरं खमा वरं सुट्ठु वि तवाओ ।।५।।

सीलं वरं कुलाओ कुलेण किं होइ विगयसीलेण ।
कमलाइ कद्दमे संभवन्ति न हु हुन्ति मलिणाइं ।।६।।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छन्दं जो अणुवट्टइ मम्मं रक्खइ गुणे पयासेइ ।
सो नवरि माणुसाणं देवाण वि वल्लहो होइ ।।७।।

लवणसमो नत्थि रसो विन्नाण समो य बंधवो नत्थि ।
धम्मसमो नत्थि निहि कोहसमो वेरिओ नत्थि ।।८।।

सिग्घं आरुह कज्जं पारद्धं मा कहं पि सिढिलेसु ।
पारद्ध सिढिलियाइं कज्जाइं पुणो न सिज्झन्ति ।।९।।

नमिऊण जं विढप्पइ खलचलणं तिहुयणं पि किं तेण ।
माणेण जं विढप्पइ तणं पि तं निच्चुइं कुणइ ।।१०।।

हंसो मसाणमज्झे काओ जइ वसइ पंकयवणम्मि ।
तह वि हु हंसो हंसो काओ काओ च्चिय वराओ ।।११।।

सव्वायरेण रक्खह तं पुरिसं जत्थ जयसिरी वसइ ।
अत्थमिय चन्दबिंबे तारा हि न कीरए जोण्हा ।।१२।।

रायंगणम्मि परिसंठियस्स जह कुंजरस्स माहप्पं ।
विझसिहरम्मि न तहा ठाणेसु गुणा विसट्टन्ति ।।१३।।

गुणहीणा जे पुरिसा कुलेण गव्वं वहन्ति ते मूढा ।
वंसुप्पन्नो वि धणू गुणरहिए नत्थि टंकारो ।।१४।।

बहुतरुवराण मज्झे चन्दणविडवो भुयंगदोसेण ।
छिज्झइ निरावराहो साहु व्व असाहुसंगेण ।।१५।।*

ooo

* 'वज्जालग्गं में जीवन-मूल्य भाग १' -सं०- डॉ० कमलचन्द सोगाणी एवं 'वज्जालग्गं' -सं०- प्रो० एम० बी० पटवर्धन, से उद्धृत । गाथानुक्रम-२५/६८, २७/७२.५ २८/७४, ३२/७९, ३५/८५, ३६/८६, ३८/८८, ३९/९०·१, ४३/९९, ४५/१००, ६७/२८८, ७२/२९४, ८१/६७८, ८४/६८६, ९२/७३२ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

वसण	= विपत्ति	**बाउल्लय**	= पुतला	**परंमुह**	= विमुख
हुयवह	= अग्नि	**भव्वय**	= अच्छा	**कद्दम**	= कीचड़
छंद	= इच्छा	**लवण**	= नमक	**निव्वुइ**	= सुख
मसाण	= श्मसान	**काओ**	= कौआ	**वराओ**	= बेचारा
कुंजर	= हाथी	**माहप्पं**	= महिमा	**धणु**	= धनुष
विडव	= शाखा	**साहु**	= भद्र व्यक्ति	**असाहु**	= दुष्ट

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	**शब्दरूप**	**मूलशब्द**	**विभक्ति**	**वचन**	**लिंग**
	वसणम्मि	.....	.....	.....	.....
	मरणं	.....	.....	.....	.....
	रइणा	.....	.....	.....	.....
	कुलाओ	.....	.....	.....	.....
	कमलाइ	.....	.....	.....	.....
	ताराहि	.....	.....	.....	.....

(ख)	**संधिवाक्य**	**विच्छेद**	**संधिकार्य**
	कमलायर	.....+.....	.....
	रायंगणम्मि	.....+.....	.....
	निरावराहो	.....+.....	.....
	वंसुप्पन्नो	.....+.....	.....

(ग)	**समासपद**	**विग्रह**	**समासनाम**
	समुद्दतरणं	.....+.....	.....
	खलचलणं	.....+.....	.....
	तिहुयणं	तिहु+यणं	.....
	पंकयवणम्मि	.....+.....	.....
	चंदणविडवो	.....+.....	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	ठाइ	....	.....	... .	.....
	बड्ढेइ	.....	....	.....	.....
	सिज्झन्ति	.....	.....	.....	.....
	छिज्झइ	....	.....	... .	.....
	रक्खह	.....	.....	.....	....

(ङ)	कृदन्तरूप	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	कायव्वं	करना चाहिए	वि०कृ०	का(कर)	यव्व
	आलिहिय	चित्रित	भू०कृ०	आलिह	इ+य
	पयासिओ	व्यक्त किया है	भू०कृ०	पयास	इ+अ
	नमिऊण	झुककर	सं०कृ०	नम	इ+ऊण

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. स्नेह व्यक्त किया जाता है —

(क) सज्जन के द्वारा (ख) चापलूस व्यक्ति के द्वारा

(ग) चन्द्रप्रकाश के द्वारा (घ) कमल द्वारा [ ]

२. अपराधरहित भद्रपुरुषों को कष्ट दिया जाता है —

(क) उनके गुणों के द्वारा (ख) दुष्टजनों की संगति के द्वारा

(ग) उनकी निर्धनता के द्वारा (घ) मूर्ख राजा के द्वारा [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. कौन व्यक्ति मित्र बनाए जाने योग्य होता है ?

२. किस व्यक्ति का हमेशा आदर करना चाहिए ?

३. गुण कहाँ पर खिलते हैं ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) इस पाठ की प्रमुख शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखो।

(ख) गाथा नं० ४, ७, ८ एवं १४ का अर्थ समझाकर लिखो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २७ : गाहासत्तसई

पाठ-परिचय :

गाथासप्तशती प्राकृत का मुक्तक काव्य है। इसके संकलनकर्त्ता **महाकवि हाल** हैं। उन्होंने अपने समय के कई प्राकृत काव्यों से चुनकर लगभग ७०० गाथाएँ इस ग्रन्थ में संकलित की हैं। इसे 'गाथाकोश' के नाम से भी जाना जाता है। गाथा-सप्तशती में प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति-चित्रण, ग्रामीण जीवन, सज्जन-दुर्जन वर्णन आदि अनेक विषयों की गाथाएँ हैं। गाथासप्तशती का काव्य-प्रेमियों के बीच बहुत आदर रहा है।

इस ग्रन्थ में कहा गया है कि दुष्ट व्यक्ति की मैत्री पानी में खींची गयी लकीर की तरह अस्थिर है। सज्जन व्यक्ति का स्वाभिमान आपत्ति में भी ऊँचा रहता है। सौन्दर्य वह है, जहाँ गुण हों। ज्ञान वह है, जो कर्त्तव्ययुक्त हो। इन्हीं विषयों से सम्बन्धित कुछ गाथाएँ प्रस्तुत पाठ में संकलित हैं।

ते विरला सप्पुरिसा जाणं सिणेहो अहिण्णमुहराओ।
अणुदिअहवड्ढमाणो रिणं व पुत्तेसु संकमइ ॥१॥

वसइ जहिं चेअ खलो पोसिज्जन्तो सिणेहदाणेहिं।
त चेअ आलअ दीअओ व्व अइरेण मइलेइ ॥२॥

होन्ती वि णिप्फलच्चिअ धणरिद्धी होइ किविणपुरिसस्स।
गिह्मावअसंतत्तस्स णिअअच्छाहि व्व पहिअस्स ॥३॥

कीरन्ति व्विअ णासइ उअए रेहव्व खलअणे मेत्ती।
सा उण सुअणम्मि कआ अणहा पाहाणरेहव्व ॥४॥

सुअणो ण कुप्पइ व्विअ अह कुप्पइ विप्पिअं ण चिन्तेइ।
अह चिन्तेइ ण जम्पइ अह जम्पइ लज्जिओ होइ ॥५॥

सो अत्थो जो हत्थे तं मित्तं जं णिरन्तणं वसणे।
तं रूअं जत्थ गुणा तं विण्णाणं जहिं धम्मो ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुंगो च्चिअ होइ मणो मणंसिणो अन्तिमासु वि दसासु ।
अत्थमणम्मि वि रइणो किरणा उद्धं चिअ फुरन्ति ।।७।।

पोट्टं भरन्ति सउणा वि माउआ अप्पणो अणुव्विग्गा ।
विहलुद्धरणसहावा हुवन्ति जइ के वि सप्पुरिसा ।।८।।

दढरोसकलुसिअस्स वि मुअणस्स मुहाहिँ विप्पिअं कन्तो ।
राहुमुहम्मि वि ससिणो किरणा अमअं विअ मुअन्ति ।।९।।

अवमाणिओ वि ण तहा दुम्मिज्जइ सज्जणो विहवहीणो ।
पडिकाउं असमत्थो माणिज्जन्तो जह परेण ।।१०।।

वसणम्मि अणुव्विग्गा विहवम्मि अगव्विआ भए धीरा ।
होन्ति अहिण्णसहावा समेसु विसमेसु सप्पुरिसा ।।११।।

जीहाइ कुणन्ति पिअं भवन्ति हिअअम्मि णिव्वुइं काउं ।
पीडिज्जन्ता वि रसं जणन्ति उच्छू कुलीणा च ।।१२।।

सरए महद्धदाणं अन्ते सिसिराइं वाहिरुण्हाइं ।
जाआइं कुविअसज्जण-हिअअसरिच्छाइं सलिलाइं ।।१३।।

गिरसोत्तो त्ति भुअंगं महिसो जीहाइ लिहइ संतत्तो ।
महिसस्स कण्हवत्थरभरो त्ति सप्पो पिअइ लालं ।।१४।।

थोअं पि ण णीसरई मज्झण्हे उह सरीरतललुक्का ।
आअवभएण छाई वि पहिअ ता किं ण वीसमसि ।।१५।।

जेत्तिअमेत्तं तीरइ णिव्वोढुं देसु तेत्तिअं पणअं ।
ण अणो विणअत्तपसाअ-दुक्खसहणक्खमो सव्वो ।।१६।।*

ooo

* 'गाथासप्तशती' -सं०- डॉ० परमानन्द शास्त्री, से उद्धृत । गाथानुक्रम-२/१३, २/३५, २/३६, ३/७२, ३/५०, ३/५१, ३/८४, ३/८५, ४/१९, ४/२०, ४/८०, ६/४१, २/८६, ६/५१, १/४९ एवं १/७१ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

मुहराअ	= प्रसन्नता	दीअअ	= दीपक	किविण	= कंजूस
उअअ	= पानी	पाहाण	= पत्थर	विप्पिअ	= बुरा
मणंसिण	= स्वाभिमानी	सउण	= पक्षी	आणण	= मुख
उच्छु	= ईख	भुअंग	= साँप	पणअ	= कृपा
सव्व	= सभी	छाइ	= छाया	पहिअ	= राहगीर

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)

शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
पुत्तेसु	....	....	....	....
पहिअस्स	....	....	....	....
किरणा	....	....	....	....
जोहाइ	....	....	....	....
सप्पो	....	....	....	....
पुण्णेहिं	....	....	....	....
जणं	....	....	....	....

(ख)

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
गिह्याअव	.... + ...	....
अणुव्विग्गा	.... + ...	....
विहलुद्धरण	.... + ...	....
वाहिरुण्हाइं	.... + ...	....

(ग)

समासपद	विग्रह	समासनाम
अणुदिअह	.... + ...	....
राहुमुहम्मि	.... + ...	....
आअवभएण	.... + ...	....

Jain Educationa International   For Personal and Private Use Only   www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	संकमइ	.....	....	.....	.....
	कुप्पइ	.....	.....	.....	.....
	भरन्ति	.....	.....	.....	.....
	वीसमसि	.....	.....	.....	.....
	देसु	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्तरूप	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	पोसिज्जन्तो	पोसण किया जाता हुआ	व०कृ० (कर्मवाच्य)	पोस	इज्ज+न्त
	अवमाणिओ	अपमानित	भू०कृ०	अवमाण	इ+अ
	णिव्वोढुं	निर्वाह करने के लिए	हे०कृ०	णिव्वोढ	उं

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. दुष्ट व्यक्ति किसकी तरह आधार स्थान को मलिन करता है —

(क) चन्द्रमा को तरह (ख) दीपक की तरह

(ग) म्यान की तरह (घ) कीचड़ की तरह [ ]

२. धन वह काम आता है, जो होता है —

(क) दूसरों के पास (ख) अपने हाथ में

(ग) जमीन में गड़ा हुआ (घ) उधार दिया हुआ [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१ सज्जन और दुर्जन की मित्रता में क्या अन्तर है ?

२. सज्जन पुरुषों का स्वभाव कैसा होता है ?

३. किसी पर कितना स्नेह करना चाहिए और क्यों ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) इस पाठ की शिक्षाएँ अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) गाथा नं० ५, ८, १३ एवं १६ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २८ : बुद्धिमंतो रोहओ

पाठ-परिचय :

प्राकृत कथा साहित्य में बुद्धि-परीक्षण से सम्बन्धित कई कथाएँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत पाठ में उज्जयिनी के राजा ने नृत्याकर के पुत्र रोहत की बुद्धि की परीक्षा उसे अपना प्रधानमन्त्री बनाने के लिए ली है। यह कथा प्राकृत के कई ग्रन्थों में आयी है। यहाँ **आख्यानमणिकोश** से इसे लिया गया है। इस ग्रन्थ का परिचय पहले दिया जा चुका है।

नटपुत्र रोहत ने क्षिप्रा नदी की रेत पर उज्जयिनी नगरी का चित्र बनाया हुआ था। उसे देखकर राजा ने उसकी बुद्धि की कई परीक्षाएँ लीं। रोहत ने अपने बुद्धि-कौशल से इन सबका समाधान किया तो उसे प्रधानमन्त्री बना दिया गया।

तत्थ नियरूप-निज्जिय-पुरन्दरो दरिय-राय-निद्दलणो।
समरंगण-जियसत्तू जियसत्तू नाम नरनाहो ॥१॥

अह तीए पुरवरीए पच्चासन्ने समत्थि वित्थिन्नो।
नामेण सिलागामो गामो धण-धन्नपरिकलिओ ॥२॥

तत्थ अत्थि नडो नाडय-वियक्खणो भरहरनामओ मइमं।
निय-बुद्धिलद्धसोहो रोहो नामेण तस्स सुओ ॥३॥

चिंतेइ तओ भरहो बालाणं पेच्छ केरिसुल्लावा।
अह अन्नया य भरहो गओ सपुत्तो तमुज्जेणिं ॥४॥

काऊण तत्थ कयविक्कयाइ नियगाममणुपयट्टो सो।
जा सिप्प-सरि-समीवे समागओ ताव भरहेण ॥५॥

भणियं रोहय! पुडिया वीसरिया मज्झ हट्टमज्झम्मि।
चिट्ठ तुमं जाव अहं गिण्हित्ता पडिनियत्तेमि ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इय भणिय गए भरहे बालत्तणओ य रोहएण तओ ।
सिप्प-सरि-बालुयाए विणिम्मिया तेण उज्जेणी ॥७॥

एयंतरम्मि राया बलरेणुभएण अग्गए होउं ।
तुरयारूढो जा एइ तत्थ रोहेण तओ रुद्धो ॥८॥

हे आसवार, पुरओ उज्जेणी-हट्टमग्ग-मज्झेण ।
जियसत्तु राय-राउलमुल्लंघिय किह णु वच्चिहिसि ॥९॥

ता विम्हइओ राया तं पुच्छइ भद्द. कत्थ उज्जेणी ।
अह रोहओ वि बालुय-विणिम्मियं तस्स दंसेइ ॥१०॥

इह तावं हट्टमग्गो इह राउलमेत्थ हत्थि-सालाओ ।
इह पासाया इह मंदुराओ तो तं निएऊण ॥११॥

तस्स मइ-विहव-रंजिय-हियओ हियए विचिंतए राया ।
एस मम मंतिमंडल-सिरोमणितस्स जोगो त्ति ॥१२॥

परिभाविऊण एवं पुच्छइ तं वच्छ, कत्थ वत्थव्वो ?
कस्स सुओ ? साहइ भरहसुओ हं सिलागामे ॥१३॥

तस्स वरबुद्धि-विहवं परिभावेन्तो गओ निवो नयरिं ।
सो वि समागयपिउणा समन्निओ नियय-गामम्मि ॥१४॥

तब्बुद्धि-पगरिसेणं पमोय-परिपूरिओ पुहइपालो ।
अवरं खुद्दाएसेणं पेसिउं कुक्कुडं भणइ ॥१५॥

जह जुज्झावह एयं असहायं रोहएण तो भणियं ।
दप्पण-पडिबिंबेणं जुज्झावह तंबचूडं त्ति ॥१६॥

आइसइ पुहइपालो पेसह बलिऊण वालुयावरहं ।
जुन्नवरहं समप्पह पडिछंदकए भणइ रोहो ॥१७॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अह संपेसइ राया मयपायं करिवरं भणावइ य ।
निच्चं पि गय-पवित्ती कहियव्वा मरण-परिहीणा ।।१८।।

ते वि पइवासरं पि हु कहेंति रायस्स हत्थिवुत्तंतं ।
अह अन्नया गइंदे मए भणावइ भरहपुत्तो ।।१९।।

देव, गइंदो न चरइ, न चलइ नो ससइ न वि य नीससइ ।
न पियइ न नियइ नवरं चिट्ठइ निच्चेट्ठ-संठाणो ।।२०।।

तो पुहइवई पभणइ रे रे, किं करिवरो मओ ?
तमणु जंपन्ति ते वि सामी एवं वज्जरइ नो अम्हे ।।२१।।

भूओ भणियं पेसवह कूवयं महुरपाणियं नियय ं ।
तेहुत्तं मत्तो देव ! कूवओ पामरत्तणओ ।।२२।।
अम्हच्चओ तओ तं पेससु नायरयकूवियं नियय ं ।
जेण आगच्छइ तम्मग्गलग्गओ सामिय! सयण्हो ।।२३।।

अवरमकंडे वणखण्डमेत्थ पुव्वाए तं पि पच्छिमओ ।
कायव्वं तेण तयं पि गाममुच्चालिऊण कयं ।।२४।।

अग्गिं सूरं च विणा वि पायसं सिज्झवेह पट्टिविए ।
खुद्दाएसो उक्कुरुडियाए निप्फाइया खीरी ।।२५।।

सव्वत्थ वि केण कयं ? ति रोहओ उत्तरम्मि वत्तव्वे ।
रंजिय-हियओ वाहरइ अन्नया एउ मह पासे ।।२६।।

तप्पभिइ पक्खवाओ रन्नो तम्मि महं समुप्पन्नो ।
संठाविओ य सव्वेसिमुवरि मंती मइगुणेण ।।२७।।*

ooo

* 'आक्खानकमणिकोस' -सं०- मुनि पुण्यविजय, से उद्धृत । गाथानुक्रम-आख्यानक १ गाथा-१०, १४, १५, २३-२४, २५ से ३४, ४५, ४६, ५० से ५९ एवं ९२ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

पुरन्दर	= इन्द्र	नरनाह	= राजा	समरंगण	= युद्धभूमि
पच्चासन्न	= समीप	वित्थिन्न	= फैला हुआ	नाडय	= नाटक
वियक्खण	= कुशल	तओ	= तब	आसवार	= घुड़सवार
बालुय	= रेत	मंदुरा	= अश्वशाला	वत्थव्व	= निवासी
तंबचूड	= मुरगा	वरह	= रस्सी	कूवयं	= कुँआ
पायस	= खीर	अन्नआ	= एक बार	मह	= मेरे

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
केरिसुल्लावा	..... + ...	....
तुरयारूढो	..... + ...	....
राउलमेत्थ	.... .. + ...	.....

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

१. रोहत ने रेत पर चित्र बनाया —

(क) पिता का (ख) राजा का

(ग) उज्जैनी नगरी का (घ) सेना का [ ]

२. रोहत ने रेत की रस्सी की समस्या हल की —

(क) रस्सी बनाकर (ख) नमूने के लिए रस्सी मंगाकर

(ग) रेत को पीसकर (घ) जूट की रस्सी भेजकर [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

१. रोहत ने रेत पर चित्र में क्या-क्या बनाया था ?

२. हाथी के मर जाने पर उसकी सूचना राजा को कैसे दी गयी ?

३. राजा ने रोहत के लिए क्या किया ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) रोहत और राजा की बातचीत अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) रोहत द्वारा हल की गयी २-३ समस्याएँ लिखिए।

(ग) गाथा नं० १२, २५ एवं २६ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १६ : जीवण-ववहारो

पाठ-परिचय :

प्राकृत का प्राचीन साहित्य अर्धमागधी प्राकृत एवं शौरसेनी प्राकृत में भी उपलब्ध है। इन दोनों का संकलन-ग्रन्थ एक तो 'समणसुत्तं' है, जिसमें से कुछ गाथाएँ 'सिक्खानीई' नामक पाठ में पहले प्रस्तुत की गयी हैं। दूसरा संकलन-ग्रन्थ **अर्हत्प्रवचन** है, जिसका चयन दर्शन और आगम ग्रन्थों के प्रसिद्ध विद्वान **स्व० पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ** ने किया था। इस ग्रन्थ में कुल १६ पाठ हैं, जिनमें जीवन को उन्नत करने वाली प्राकृत गाथाओं का संकलन है। उसी में से प्रस्तुत पाठ की गाथाएँ ली गयी हैं।

ज्ञान का प्रकाश सर्वव्यापी है। विनय का फल सबका कल्याण है। हित कारी और संयत वचन मनुष्य को सुखी करते हैं। सज्जन व्यक्ति की संगति प्रतिष्ठा देती है और दुर्जन की संगति मूल स्वभाव को बदल देती है। गुण कहने से नहीं, अपने आप प्रगट होते हैं और आचरण से ही उनका विकास होता है। क्रोध और मान को त्यागने से जीवन को सार्थक किया जा सकता है, आदि जीवन-व्यवहारों का निर्देश प्रस्तुत पाठ में है।

णाणुज्जोवो जोवो णाणुज्जोवस्स णत्थि पडिघादो।
दीवेइ खेत्तमप्पं सूरो णाणं जगमसेसं ॥१॥

थेवं थेवं धम्मं करेह जइ ता बहुं न सक्केह।
पेच्छह महानईओ बिन्दूहिं समुद्दभूयाओ ॥२॥

विणएण विप्पहूणस्स हवदि सिक्खा णिरत्थिया सव्वा।
विणओ सिक्खाए फलं विणयफलं सव्वकल्लाणं ॥३॥

जल-चंदण-ससि-मुत्ता-चंदमणी तह णरस्स णिव्वाणं।
ण करंति कुणइ जह अत्थज्जुयं हिय-मधुर-मिद-वयणं ॥४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुसुममगंधमिव जहा देवयसेसत्ति कीरदे सीसे ।
तह सुयणमज्झवासी वि दुज्जणो पूइओ होइ ।।५।।

दुज्जणसंसग्गीए पजहदि णियगं गुणं खु सुजणो वि ।
सीयलभावं उदयं जह पजहदि अग्गिजोएण ।।६।।

वायाए अकहन्ता सुजणे चरिदेहि कहियगा होन्ति ।
विकहिंतगा या सगुणे पुरिसा लोगम्मि उवरीव ।।७।।

संतो हि गुणा अकहिंतयस्स पुरिसस्स ण वि य णस्संति ।
अकहिंतस्स वि जह गहवइणो जगविस्सुदो तेजो ।।८।।

अप्पपसंसं परिहरह सदा मा होह जसविणासयरा ।
अप्पाणं थोवन्तो तणलहुदो होदि हु जणम्मि ।।९।।

वायाए जं कहणं गुणाण तं णासणं हवे तेसिं ।
होदि हु चरिदेण गुणाण कहणमुब्भासणं तेसिं ।।१०।।

किच्चा परस्स णिन्दं जो अप्पाणं ठवेदुमिच्छेज्ज ।
सो इच्छदि आरोग्गं परम्मि कडुओसहे पीए ।।११।।

सुठ्ठु वि पियो मुहुत्तेण होदि वेसो जणस्स कोधेण ।
पधिदो वि जसो णस्सदि कुद्धस्स अकज्जकरणेण ।।१२।।

माणी विस्सो सव्वस्स होदि कलह-भय-वेर-दुक्खाणि ।
पावदि माणी णियदं इह-परलोए य अवमाणं ।।१३।।

समणस्स जणस्स पिओ णरो अमाणी सदा हवदि लोए ।
णाणं जसं च अत्थं लभदि सकज्जं च साहेदि ।।१४।।*

ooo

* 'अर्हत्प्रवचन' -सं०- पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ, से उद्धृत । गाथानुक्रम-१९/४७, १९/१४, १९/५५, १२/१२, १०/८, १०/११, ९/१, ९/३, ९/४, ९/७, ९/१२, ७/३५, ७/३६ एवं ७/३७ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

अप्पं	= थोड़ा	खेत्तं	= क्षेत्र	जगं	= संसार
असेसं	= सम्पूर्ण	सिक्खा	= शिक्षा	विणअ	= विनय
सीस	= सिर	वाया	= वाणी	चरिद	= आचरण
गहवई	= सूर्य	पर	= दूसरा	वेस	= शत्रु
अकज्ज	= अनुचित	करण	= आचरण	णियदं	= निश्चित
सयण	= स्वजन	जस	= यश	अत्थ	= धन

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	महानईओ	.....	.....	.....	.....
	बिन्दूहिं	.....	.....	.....	.....
	सिक्खाए	.....	.....	.....	.....
	गुणं	.....	.....	.....	.....
	गहवइणो	.....	.....	.....	.....
	कोधेण	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	णाणुज्जोवो	..... + ...	.....
	खेत्तमप्पं	..... + ...	.....
	जगमसेसं	..... + ...	.....
	कुसुममगंधमिव	..... + ...	.....
	कहणमुब्भासणं	..... + ...	.....
	ठवेदुमिच्छेज्ज	..... + ...	.....

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	विणयफलं	..... + ...	.....
	दुज्जणसंसग्गी	..... + ...	.....
	सव्वकल्लाणं	..... + ...	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	दीवेइ	.....	.....	.....	.....
	पेच्छह	.....	.....	.....	.....
	हवदि	.....	.....	.....	.....
	पजहदि	.....	.....	.....	.....
	होदि	.....	.....	.....	.....
	णस्सदि	.....	.....	.....	.....
	होह	.....	.....	.....	.....

(ङ)	कृदन्तरूप	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	अकहंता	न कहते हुए	व०कृ०	कह	न्त
	ठवेदुं	स्थापित करने के लिए	हे०कृ०	ठव	ए+दुं
	पधिद्धो	प्रसिद्ध	भू०कृ०	पध	इ+द

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. सारे जग को प्रकाशित करता है —

(क) दीपक (ख) ज्ञान (ग) सूर्य (घ) चन्द्रमा [ ]

२. सभी शिक्षा निरर्थक हो जाती है —

(क) क्रोधी शिष्य की (ख) रोगी शिष्य की

(ग) विनय से रहित शिष्य की (घ) गरीब शिष्य की [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. दुर्जन की संगति से सज्जन के गुण कैसे बदल जाते हैं ?

२. गुणों का वास्तविक प्रकाशन किससे होता है ?

३. क्रोध करने से क्या नुकसान होता है ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) गाथा नं० २, ४, ६ एवं १३ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 30 : कवि-अणुभूई

पाठ-परिचय :

प्राकृत के महाकाव्यों में **गउडवहो** का प्रमुख स्थान है। महाकवि **वाक्पतिराज** ने ई० सन् ७६० के लगभग इस महाकाव्य की रचना की थी। इसे ऐतिहासिक काव्य भी कहा जाता है। इस काव्य में यशोवर्मा की विजय के वर्णन के अतिरिक्त जीवन के अन्य पक्षों का भी वर्णन है। गउडवहो में प्राप्त वाक्पतिराज की लोक-अनुभूतियों को प्रोफेसर डॉ० कमलचन्द सोगाणी ने अपनी पुस्तक **वाक्पतिराज की लोकानुभूति** में संग्रहीत किया है। उन्हीं गाथाओं में से इस पाठ की गाथाएँ चयनित की गयी हैं।

इन गाथाओं में कहा गया है कि कवि की वाणी में सभी तत्त्व विद्यमान हैं। उसी से वह गौरव प्राप्त करता है। काव्यतत्त्व के रसिक को सुख-दुख बराबर होते हैं। निन्दा और प्रशंसा में वह विचलित नहीं होता। दूसरों के गुणों को ग्रहण करना और उनके कल्याण में प्रवृत्त होना ही जीवन की सार्थकता है। मनुष्य का व्यवहार उसके गुणों को प्रगट करने वाला होता है, इत्यादि।

इह ते जअन्ति कइणो जअमिणमो जाण सअल-परिणामं।
वाआसु ठिअं दीसइ आमोअ-घणं व तुच्छं व ॥१॥

णिअआएच्चिअ वाआए अत्तणो गारवं णिवेसन्ता।
जे एन्ति पसंसच्चिअ जअन्ति इह ते महा-कइणो ॥२॥

दोग्गच्चम्मि वि सोक्खाइं ताण विहवे वि होन्ति दुक्खाइं।
कव्व-परमत्थ-रसिआइं जाण जाअन्ति हिअआइं ॥३॥

सोहेइ सुहावेइ अ उवहुज्जन्तो लवो वि लच्छीए।
देवी सरस्सई उण असमग्गा किं पि विणडेइ ॥४॥

लग्गिहिइ ण वा सुअणे वयणिज्जं दुज्जणेहिं भण्णंतं।
ताण पुण तं सुअणाववाअ-दोसेण संघडइ ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाण असमेहिं विहिआ जाअइ णिन्दा समा सलाहा वि ।
णिन्दा वि तेहिं विहिआ ण तारण मण्णे किलामेइ ।।६।।

बहुओ सामण्ण-मइत्तणेण ताणं परिग्गहे लोओ ।
कामं गआ पसिद्धिं सामण्ण-कई अओच्चेअ ।।७।।

हरइ अणू वि पर-गुणो गरुअम्मि वि णिअ-गुणे ण संतोसो ।
सीलस्स विवेअस्स अ सारमिणं एत्तिअं चेअ ।।८।।

इअरे वि फुरन्ति गुणा गुरूण पढमं कउत्तमासंगा ।
अग्गे सेलग्ग-गआ इंदु-मऊहा इव महीए ।।९।।

णिव्वाडंताण सिवं सअलं चिअ सिवअरं तहा ताण ।
णिव्वडइ किं पि जह ते वि अप्पणा विम्हअमुवेन्ति ।।१०।।

माहप्पे गुण-कज्जम्मि अगुण-कज्जे णिबद्ध-माहप्पा ।
विवरीअं उप्पत्तिं गुणाण इच्छन्ति कावुरिसा ।।११।।

जह जह णग्घन्ति गुणा जह जह दोसा अ संपइ फलन्ति ।
अगुणायरेण तह-तह गुण-सुण्णं होहिइ जअं पि ।।१२।।

साहीण-सज्जणा वि हु णीअ-पसंगे रमन्ति काउरिसा ।
सा इर लीला जं काअ-धारणं सुलह-रअणाण ।।१३।।

ववहारेच्चिअ छायं णिएह लोअस्स किं व हिअएण ।
तेउग्गमो मणीण वि जो बाहिं सो ण भंगम्मि ।।१४।।*

ooo

* 'वाक्पतिराज की लोकानुभूति' -सं०- डॉ० कमलचन्द सोगाणी (की पाण्डुलिपि) एवं 'गउडवहो' -सं०- प्रो० एन० जी० सूरु, से उद्धृत । गाथानुक्रम-१/६२, २/६३, ३/६४, ४/६८, ५/७०, ८/७३, ९/७५, १०/७६, ११/७७, १२/७८, ४१/८९४, ४५/९०२, ५८/९१७ एवं ८४/९६३ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

सग्रल	= सभी	परिणाम	= अभिव्यक्ति	जग्र	= जग
घणं	= पूर्ण	तुच्छं	= तिरस्कारयोग्य	गारव	= गौरव
दोग्गच्च	= निर्धनता	असमग्ग	= अपूर्ण	वयणिज्ज	= निन्दा
सलाहा	= प्रशंसा	मऊह	= किरण	सिव	= कल्याण
काग्र	= कांच	सुलह	= प्राप्त	छाया	= प्रतिबिम्ब

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	जाण	.....	.....	.....	.....
	कइणो	.....	.....	.....	.....
	लच्छीए	.....	.....	.....	.....
	हिअआइं	.....	.....	.....	.....
	महीए	.....	.....	.....	.....
	गुणाण	.....	.....	.....	.....
	मणीण	.....	.....	.....	.....
	सा	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	जअमिणमो	.....+.....	.....
	सारमिणं	.....+.....	.....
	सुअणाववाअ	.....+.....	.....
	तेउग्गमो	.....+.....	.....
	विम्हअमुवेन्ति	.....+.....	.....

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	इंदुमऊहा	.....+.....	.....
	गुणकज्जम्मि	.....+.....	.....
	काअधारणं	काअं+धारणं	द्वि० त०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	दीसइ	.....	.....	.....	.....
	जअन्ति	.....	.. ....	....	....
	विणडेइ	... .	.....	.....	.....
	लग्गिहिइ	.....	.....	. ....	.....
	फुरन्ति	....	.....	.....	... .
	होहिइ	.....	.....	.....	.....
	णिएह	णिअ	.....	.... ..	... .

(ङ)	कृदन्तरूप	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	णिवेसंता	स्थापित करते हुए	व०कृ०	णिवेस	न्त
	उवहुज्जंतो	उपभोग किया	व०कृ०	उवहुज्ज	न्त
	भण्णंत	कही जाती हुई	व०कृ०	भण्ण	न्त

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. निर्धनता में सुख और वैभव में दुख प्राप्त करते हैं —

(क) राजा लोग (ख) दार्शनिक

(ग) काव्य तत्त्व के रसिक (घ) साधु [ ]

२. सामान्य बुद्धि के कारण प्रसिद्ध होते हैं —

(क) सामान्य लोग (ख) सामान्य कवि

(ग) महाकवि (घ) निर्गुण व्यक्ति [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. लक्ष्मी और सरस्वती में क्या अन्तर है ?

२ शील और विवेक का सार क्या है ?

३. अगुणों का आदर करने से क्या होगा ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) कवि के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) गाथा नं० १०, १२ एवं १४ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 31 : पाइय-अहिलेहो

पाठ-परिचय :

भारतवर्ष में लिखित सामग्री के सबसे प्राचीन अवशेष शिलालेख हैं। उपलब्ध शिलालेखी साहित्य में सम्राट अशोक के शिलालेख सबसे प्राचीन हैं, जो प्राकृत (गद्य) में लिखे गये हैं। उसके बाद सम्राट खारवेल, सातवाहन राजाओं, पहलव नरेशों आदि ने प्राकृत भाषा का उपयोग शिलालेखों, मुद्राओं आदि में किया है। उसी परम्परा में प्रतिहार वंश के राजा 'कक्कुक' का प्राकृत शिलालेख जोधपुर से ३० किलोमीटर उत्तर की ओर घटयाल नामक गाँव में प्राप्त हुआ है। इसे वि० सं० ९१८ (ई० सन् ८६१) में लिखाया गया था।

इस शिलालेख में राजा कक्कुक ने जनता के हित के लिए जो कार्य किये थे, उनका उल्लेख है। प्राकृत भाषा एवं साहित्य की दृष्टि से भी राजस्थान के इस प्राकृत शिलालेख का महत्त्व है। पूरे शिलालेख में १ से २३ गाथाएँ हैं। उनमें से ६ से १८ गाथाएँ प्रस्तुत पाठ में उद्धृत हैं।

सिरि भिल्लुअस्स तणुओ सिरिकक्को गुरुगुणेहि गारविओ।
अस्स वि कक्कुअ नामो दुल्लहदेवीए उप्पणो ॥६॥

ईसि विआसं हसिअं महुरं भजिअं पलोइअ सोम्मं।
णमय जस्स ण दीणं रोसो थेओ थिरा मेत्ती ॥७॥

णो जंपिअं ण हसिअं ण कयं ण पलोइअं ण संभरिअं।
ण थिअं ण परिब्भमिअं जेण जणे कज्ज-परिहीणं ॥८॥

सुत्था दुत्थ वि पया अहमा तह उत्तिमा वि सोक्खेण।
जेणणि व्व जेण धरिआ णिच्चं णिय मंडले सव्वा ॥९॥

उवरोह रामअच्छर लोहेहि इ णायवज्जिजं जेण।
ण कओ दोण्ह विसेसो ववहारे कवि मणयं पि ॥१०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिअवर दिण्णाणुज्जं जेण जण य रंजिऊण सयलं पि ।
णिमच्छरेण जणिअं दुट्ठाण वि दंडणिट्ठवणं ।।११।।

धणरिद्ध समिद्धाण वि पउराणं निअकरस्स अब्भहिअं ।
लक्ख सयं च सरिसन्तणं च तह जेण दिट्ठाइं ।।१२।।

णव-जोव्वण-रूअपसाहिएण सिंगार-गुण-गरुक्केण ।
जणवय णिज्जमलज्ज जेण जणे णेय संचरियं ।।१३।।

बालाण गुरु तरुणाण सही तह गयवयाण तणओ व्व ।
इय सुचरिएहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्वो ।।१४।।

जेण णमंतेण सया सम्माणं गुणथुई कुणंतेण ।
जंपंतेण य ललिअं दिण्णं पणईण धण-निवहं ।।१५।।

मरु-माउ-वल्ल-तमणी-परिअंका-मज्ज-गुज्जरत्तासु ।
जणिओ जेन जणाणं सच्चरिअगुणेहि अणुराहो ।।१६।।

गहिऊण गोहणाइं गिरिम्मि जालाउलाओ पल्लीओ ।
जणिआओ जेण विसमे वऊणाणय-मंडले पयडं ।।१७।।

णीलुप्पलदलगन्धा रम्मा मायन्द-महुअविन्देहिं ।
वरइच्छु पण्णच्छण्ण एसा भूमिकया जेण ।।१८।।

वरिस-सएसु अणवसुं अट्ठारसमग्गलेसु चेतम्मि ।
णक्खत्ते विहुहत्थे बुहवारे धवल बीआए ।।१९।।

सिरि कक्कुएण हट्टं महाजणं विप्प पयइ वणिबहुलं ।
रोहिंसकूअ गामे णिवेसिअं कित्ति-विड्डीए ।।२०।।*

000

* 'जर्नल ऑफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी' (१८९५)- मुंशी देवीप्रसाद, पृष्ठ ५१३ एवं 'प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास'- डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, से उद्धृत ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१. शब्दार्थ :

तणअ	= पुत्र	रोस	= क्रोध	थेअ	= क्षणिक
सुत्थ	= सुखी	दुत्थ	= दुखी	पया	= प्रजा
मंडल	= राज्य	रागद्दोस	= राग-द्वेष, ईर्ष्या		
दोण्ह	= भेदभाव	विअड्ढ	= सज्जन	पउर	= नागरिक
अब्भहिअं	= अधिक	थुइ	= स्तुति	गोहण	= गोधन
पण्ण	= पत्ता	पयइ	= सामान्य ज्ञान	विड्ढी	= वृद्धि

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
	गुणेहिं	.....	.....	.....	.....
	जस्स	.....	.....	.....	.....
	मंडले	.....	.....	.....	.....
	पउराणं	.....	.....	.....	.....
	पणईण	.....	.....	.....	.....
	गिरिम्मि	.....	.....	.....	.....
	हेट्ठं	.....	.....	.....	.....
	मेत्ती	.....	.....	.....	.....
	विसमे	.....	.....	.....	.....

(ख)	संधिवाक्य	विच्छेद	संधिकार्य
	णिज्जमलज्ज	..... + ...	.....
	णीलुप्पल	..... + ...	.....

(ग)	समासपद	विग्रह	समासनाम
	णायवज्जिजं	णायेण + वज्जिजं	.....
	धणनिवहं	..... + ...	.....
	गुणथुई	..... + ...	.....
	दलगन्धा	..... + ...	.....

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ)	क्रियारूप	मूलक्रिया	काल	पुरुष	वचन
	णमय	णम	आज्ञा	म०पु०	ए०व०
(ङ)	कृदन्तरूप	अर्थ	पहिचान	मूलक्रिया	प्रत्यय
	उप्पण्णो	उत्पन्न हुआ	भू०कृ०	उप्पण	अ
	जंपिअं	कहा गया	भू०कृ०	जंप	इ+अ
	हसिअं	.....	.....	.....	.....
	संभरिअं	.....	.....	.....	.....
	धरिआ	.....	.....	.....	.....
	पालिओ	पालन किया गया	भू०कृ०	पाल	इ+अ
	णमंतेण	नमस्कार करते हुए	भू०कृ०	णम	न्त
	फुरंतेण	.....	.....	.....	.....

३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए :

१. राजा कक्कुक का क्रोध था —

(क) स्थायी (ख) दुखदायी

(ग) क्षणिक (घ) भयंकर [ ]

२. उस राजा ने जनता में नहीं फैलने दिया —

(क) बीमारी को (ख) निन्दा और निर्लज्जता को

(ग) गरीबी को (घ) शत्रुओं को [ ]

४. लघुत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

१. राजा कक्कुक किसका पुत्र था ?

२. यह शिलालेख कहाँ और कब लिखवाया गया है ?

३. कक्कुक राजा बच्चों, युवकों और वृद्धों के लिए क्या था ?

५. निबन्धात्मक प्रश्न एवं विशदीकरण :

(क) शिलालेख में उल्लिखित राजा के कार्यों को लिखिए।

(ख) गाथा नं० १०, ११ एवं १२ का अर्थ समझाकर लिखिए।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत भाषा एवं साहित्य

[क] प्राकृत भाषा

भारत की प्राचीन भाषाओं में प्राकृत भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषाविदों ने भारत-ईरानी भाषा के परिचय के अन्तर्गत भारतीय आर्य शाखा-परिवार का विवेचन किया है। प्राकृत इसी भाषा-परिवार की एक आर्य-भाषा है। भारतीय भाषाओं के विकासक्रम में भारत की प्रायः सभी भाषाओं के साथ किसी न किसी रूप में प्राकृत का सम्बन्ध बना हुआ है।

वैदिक भाषा प्राचीन आर्य-भाषा है। उसका विकास तत्कालीन लोक भाषाओं से हुआ है। प्राकृत एवं वैदिक भाषा में विद्वान् कई समानताएँ स्वीकार करते हैं। अतः ज्ञात होता है कि वैदिक भाषा और प्राकृत के विकसित होने में कोई एक समान धरातल रहा है। किसी जन-भाषा के समान तत्त्वों पर ही इन दोनों भाषाओं का भवन निर्मित हुआ है। जन-भाषा से विकसित होने के कारण और जनसामान्य की भाषा बने रहने के कारण इसे प्राकृत भाषा कहा गया है।

मातृभाषा :

प्राकृत की आदिम अवस्था का साहित्य या उसका बोलचाल वाला स्वरूप तो हमारे सामने नहीं है, किन्तु वह जन-जन तक पैठी हुई थी। 'महावीर, बुद्ध तथा उनके चारों ओर दूर-दूर तक के विशाल जन-समूह को मातृभाषा के रूप में प्राकृत उपलब्ध हुई। इसीलिए महावीर और बुद्ध ने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का उपयोग अपने उपदेशों में किया। उन्होंने इसी प्राकृत भाषा के माध्यम से तत्कालीन समाज के

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति की ध्वजा लहरायी थी। जिस प्रकार वैदिक भाषा को आर्य संस्कृति की भाषा होने का गौरव प्राप्त है उसी प्रकार प्राकृत भाषा को आगम-भाषा और आर्य-भाषा होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।"*

राज्यभाषा :

प्राकृत जन-भाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे सम्राट अशोक के समय में राज्य-भाषा होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है और उसकी यह प्रतिष्ठा सैकड़ों वर्षों तक आगे बढ़ी है। अशोक के शिलालेखों के अतिरिक्त देश के अन्य नरेशों ने भी प्राकृत में लेख एवं मुद्राएँ अंकित करवायीं। ई० पू० ३०० से लेकर ४०० ई० इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार लेख प्राकृत में लिखे गये हैं। यह सामग्री प्राकृत भाषा के विकासक्रम एवं महत्त्व के लिए ही उपयोगी नहीं है, अपितु भारतीय संस्कृति के इतिहास के लिए भी महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

अभिव्यक्ति का माध्यम :

प्राकृत भाषा क्रमशः विकास को प्राप्त हुई है। वैदिक युग में वह लोक-भाषा थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते-आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि वह अध्यात्म और सदाचार की भाषा बन सकी। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में प्राकृत भाषा गाँवों की झोंपड़ियों से राजमहलों की सभाओं तक आदर प्राप्त करने लगी थी। वह समाज में अभिव्यक्ति का

---

* द्रष्टव्य— 'प्राकृत-शिक्षण की दिशाएँ' - डॉ० कमलचन्द सोगाणी एवं डॉ० प्रेम सुमन जैन का लेख (प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा १९८१ में आयोजित यू० जी० सी० सेमिनार में पठित)।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सशक्त माध्यम चुन ली गयी थी। महाकवि हाल ने अपनी गाथासप्तशती द्वारा प्राकृत को ग्रामीण जीवन और सौन्दर्य-चेतना की प्रतिनिधि भाषा बना दिया था।

प्राकृत भाषा के प्रति इस जनाकर्षण के कारण कालिदास आदि महाकवियों ने अपने नाटक ग्रन्थों में प्राकृत भाषा बोलने वाले पात्रों को प्रमुख स्थान दिया है। अभिज्ञानशाकुन्तलं की ऋषिकन्या शकुन्तला, नाटककार भास की राजकुमारी वासवदत्ता, शूद्रक की नगरवधू बसन्तसेना, भवभूति की महासती सीता, राजा के मित्र, कर्मचारी आदि प्रायः अधिकांश नाटक के पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृत जन-सामान्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी। वह लोगों के सामान्य जीवन को अभिव्यक्त करती थी। समाज के सभी वर्गों द्वारा स्वीकृत भाषा प्राकृत थी।

काव्य-भाषा :

लोक-भाषा प्राकृत को काव्य की भाषा बनने का भी सौभाग्य प्राप्त है। प्राकृत में जो आगम-ग्रन्थ, व्याख्या साहित्य, कथा एवं चरित-ग्रन्थ आदि लखे गये हैं, उनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है। इसे प्राकृत ने २३०० वर्षों के जीवनकाल में निरन्तर बनाये रखा है। भारतीय काव्य-शास्त्रियों ने भी सहजता और मधुरता के कारण प्राकृत की सैकड़ों गाथाओं को अपने ग्रन्थों में उद्धरण के रूप में सुरक्षित रखा है।

इस तरह प्राकृत ने देश की चिन्तनधारा, सदाचार और काव्य जगत् को निरन्तर अनुप्राणित किया है। अतः प्राकृत भारतीय संस्कृति की संवाहक भाषा है। प्राकृत ने अपने को किसी घेरे में कैद नहीं किया। इसके पास जो था उसे वह जन-जन तक बिखेरती रही, और जन समुदाय में जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुछ था उसे ग्रहण करती रही। इस तरह प्राकृत भाषा सर्वग्राह्य और सार्वभौमिक भाषा है।

विकास के चरण :

प्राकृत भाषा के स्वरूप को प्रमुख रूप से तीन अवस्थाओं में देखा जा सकता है। वैदिक युग से महावीर युग के पूर्व तक के समय में जनभाषा के रूप में जो भाषा प्रचलित थी उसे प्रथम स्तरीय प्राकृत कहा जा सकता है, जिसके कुछ तत्त्व वैदिक भाषा में प्राप्त होते हैं। महावीर युग से ईसा की द्वितीय शताब्दी तक आगम ग्रन्थों, शिलालेखों एवं नाटकों आदि में प्रयुक्त प्राकृत भाषा को द्वितीय स्तरीय प्राकृत नाम दिया जा सकता है। और तीसरी शताब्दी के बाद ईसा की छठी शताब्दी तक प्रचलित एवं साहित्य में प्रयुक्त प्राकृत को तृतीय स्तरीय प्राकृत कह सकते हैं। उसके बाद देश की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ प्राकृत का विकास होता रहा है।

आदि युग :

द्वितीय स्तरीय प्राकृत के प्रयोग एवं काल की दृष्टि से तीन भेद किये जा सकते हैं— (क) आदि युग (ख) मध्य युग एवं (ग) अपभ्रंश युग।

प्रथम युग की प्राकृत के प्रमुख पांच रूप प्राप्त होते हैं —

१. **आर्ष प्राकृत** — महावीर और बुद्ध के उपदेशों की भाषाएँ-अर्धमागधी, शौरसेनी तथा पालि।

२. **शिलालेखी प्राकृत**-अशोक, खारवेल एवं अन्य राजाओं के लेखों की प्राकृत भाषा।

३. **निया प्राकृत** — निया प्रदेश (चीनी तुर्किस्तान) से प्राप्त लेखों की भाषा, जो प्राकृत से मिलती-जुलती है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

४. **धम्मपद** — प्राकृत भाषा में लिखा हुआ धम्मपद प्राकृत भाषा के एक नये रूप को प्रकट करता है।

५. **अश्वघोष** — नाटककार अश्वघोष ने अपने नाटकों में जिस प्राकृत का प्रयोग किया है, वह अर्धमागधी, शौरसेनी, मागधी आदि का मिला-जुला रूप है।

मध्य युग :

ईसा की दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक प्राकृत भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता रहा। अतः इसे प्राकृत भाषा और साहित्य का समृद्ध युग कहा गया है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इस समय प्राकृत भाषा का प्रयोग हुआ है। काव्य-लेखन की भाषा को सामान्य प्राकृत कहा गया है। क्योंकि इसमें प्राकृत भाषा के प्रयोग में प्रायः एकरूपता प्राप्त होती है। इस सामान्य प्राकृत को **महाराष्ट्री प्राकृत** कहा गया है। इस समय में **मागधी** और **पैशाची** प्राकृतों का प्रयोग भी साहित्य में हुआ। प्राकृत वैयाकरणों ने इन तीनों प्राकृतों के लक्षण अपने ग्रन्थों में स्पष्ट किये हैं।

महाराष्ट्री प्राकृत :

मध्य युग में प्राकृत का जितना अधिक विकास हुआ, उतनी ही उसमें विविधता आयी। किन्तु साहित्य में प्रयोग बढ़ जाने के कारण विभिन्न प्राकृतें महाराष्ट्री प्राकृत के रूप में एकरूपता को ग्रहण करने लगीं। महाराष्ट्री प्राकृत के कुछ नियम निश्चित हो गये। उन्हीं के अनुसार कवियों ने अपने ग्रन्थों में महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग किया है। प्राकृत के अधिकांश काव्य-ग्रन्थ महाराष्ट्री प्राकृत में लिखे गये हैं। पहली शताब्दी से वर्तमान युग तक इन दो हजार वर्षों में कई ग्रन्थ लिखे गये हैं, जो कई विषयों पर हैं। प्रस्तुत पुस्तक में भी इसी महाराष्ट्री प्राकृत की सामान्य व्याकरण एवं प्राकृत के

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ दिये गये हैं। महाराष्ट्र प्रान्त की जन-बोली से विकसित होने के कारण इस प्राकृत को महाराष्ट्री प्राकृत कहा जाता है। मराठी भाषा से इसका सम्बन्ध है।

अपभ्रंश युग :

साहित्य के लिए एक महाराष्ट्री प्राकृत भाषा तय हो जाने से प्राकृत भाषा में स्थिरता तो आयी, किन्तु उसका जन-जीवन से सम्बन्ध दिनों दिन घटता चला गया। वह साहित्य की भाषा बनकर रह गयी। अतः जन-बोली का स्वरूप इस प्राकृत से कुछ भिन्नता लिए हुए प्रचलित होने लगा, जिसे विद्वानों ने अपभ्रंश भाषा नाम दिया है। यह प्रवृत्ति लगभग ६-७ वीं शताब्दी में गतिशील हुई। यहाँ से प्राकृत भाषा के विकास की तीसरी अवस्था प्रारम्भ हुई। उसे अपभ्रंश युग कहा गया है। अपभ्रंश भाषा प्राकृत और हिन्दी भाषा को परस्पर जोड़ने वाली कड़ी है। वह आधुनिक आर्य भाषाओं (राजस्थानी, गुजराती, मराठी आदि) की पूर्ववर्ती अवस्था है। अपभ्रंश भाषा का महत्त्व प्राकृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के आपसी सम्बन्ध को जानने के लिए आवश्यक है।

आधुनिक भाषाएँ :

भारतीय आधुनिक भाषाओं का जन्म उन विभिन्न लोक भाषाओं से हुआ है, जो प्राकृत व अपभ्रंश से प्रभावित थीं। इन भाषाओं की व्याकरणात्मक संरचना और काव्यात्मक विधाओं का अधिकांश भाग प्राकृत की प्रवृत्तियों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त शब्द-समूह की समानता भी ध्यान देने योग्य है। जन-भाषा हिन्दी भी प्राचीन जन-प्राकृत से कई अर्थों में सम्बन्ध रखती है। शब्द एवं क्रियारूपों की दोनों में समानता के साथ-२ सहजता और मधुरता के गुण भी देखने को मिलते हैं। यथा —

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत और हिन्दी :

प्राकृत	हिन्दी	प्राकृत	हिन्दी
उक्खल	ओखली	उल्लुट्ट	उलटा
कहारो	कहार	कोइला	कोयला
खड्डा	खड्डा	चाउल	चाँवल
चोक्खं	चोखा	डोरो	डोरा
डाली	डाली	भल्ल	भला
पोट्टली	पोटली	पत्तल	पतला
सलोणा	सलोना	बड्डा	बड़ा
कड्ढ	काढ़ना	कुद्द	कूदना
चुक्क	चूकना	छुट्ट	छूटना
देक्ख	देखना	भुल्ल	भूलना
उड्ड	उड़ना	कुट्ट	कूटना
बुज्झ	बूझना	डंस	डसना
चमक्क	चमकना	लुक्क	लुकना

इस प्रकार प्राकृत भाषा का विकास किसी क्षेत्र या काल विशेष में आकर रुका नहीं है। अपितु प्राकृत ने प्रत्येक समय की बहुप्रचलित जन-भाषा के अनुरूप अपने स्वरूप को ढाल लिया है। हर युग की भाषा और उसके साहित्य के विकास में प्राकृत ने अपना योगदान किया है। यही कारण है कि प्राकृत देश की इन सभी भाषाओं के साथ अपना सम्बन्ध कायम रख सकी है। अतः प्राकृत भाषा के अध्ययन एवं शिक्षण से देश की विभिन्न भाषाओं के प्रचार-प्रसार को बल मिलता है। देश की अखण्डता और चिन्तन की समन्वयात्मक प्रवृत्ति प्राकृत भाषा के माध्यम दृढ़ की जा सकती है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[ख] प्राकृत काव्य साहित्य की रूपरेखा

प्राकृत भाषा में काव्य-रचना प्राचीन समय से ही होती रही है। आगम-ग्रन्थों एवं शिलालेखों में अनेक काव्य-तत्त्वों का प्रयोग हुआ है। प्राकृत भाषा के कथा-साहित्य एवं चरित ग्रन्थों में भी कई काव्यात्मक रचनाएँ भी उपलब्ध हैं। पादलिप्त की तरंगवतीकथा तथा विमलसूरि के पउमचरियं में कई काव्य-चित्र पाठक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि अलंकारों का प्रयोग इसमें हुआ है। उत्प्रेक्षा का एक दृश्य दृष्टव्य है— संध्याकालीन कृष्ण वर्ण वाले अन्धकार से युक्त गगन सभी दिशाओं को कलुषित कर रहा है। यह तो दुर्जन का स्वभाव है, जो सज्जनों के उज्ज्वल चरित्र पर कालिख पोतता है —

उच्छरइ तमो गयणो मइलन्तो दिसिवहे कसिणवण्णो।
सज्जणचरिउज्जोयं नज्जइ ता दुज्जण सहावो॥

—पउमचरियं २-१००

इसी तरह वसुदेवहिण्डी, समराइच्चकहा, कुवलयमाला, सुरसुन्दरी-चरियं आदि अनेक प्राकृत कथा व चरित-ग्रन्थों में प्राकृत-काव्य के विविध रूप देखने को मिल सकते हैं। इन ग्रन्थों में काव्य का दिग्दर्शन कराना मुख्य उद्देश्य नहीं है, अपितु कथा एवं चरित विशेष को विकसित करना है। किन्तु प्राकृत साहित्य में कुछ इस प्रकार के भी ग्रन्थ हैं, जिन्हें विशुद्ध रूप से काव्य ग्रन्थ कहा जा सकता है। प्राकृत चूंकि ललित एवं सुकुमार भाषा रही है, अतः उसमें काव्यगुण साहित्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित हैं। प्राकृत के प्रसिद्ध कवि हाल, प्रवरसेन, वाक्पतिराज, कोऊहल आदि की काव्य रचनाएँ इस बात की साक्षी हैं।

रसमयी प्राकृत काव्य के जो ग्रन्थ आज उपलब्ध हैं, उन्हें तीन भागों

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

में विभक्त किया जा सकता है : – (१) मुक्तक काव्य (२) खण्ड-काव्य एवं (३) महाकाव्य। प्राकृत काव्य के इन तीनों प्रकार के ग्रन्थों का परिचय एवं मूल्यांकन प्राकृत साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में किया गया है। इन ग्रन्थों के सम्पदकों ने भी उनके महत्त्व आदि पर प्रकाश डाला है। कुछ प्रमुख प्राकृत काव्य ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

मुक्तक काव्य :

मुक्तक काव्य में प्रत्येक पद्य रसानुभूति कराने में समर्थ एवं स्वतन्त्र होता है। इस दृष्टि से मुक्तक काव्य की रचना भारतीय साहित्य में बहुत पहले से होती रही है। प्राकृत साहित्य में यद्यपि सुभाषित के रूप में कई गाथाएँ विभिन्न ग्रन्थों में प्राप्त होती हैं; किन्तु व्यवस्थित मुक्तक काव्य के रूप में प्राकृत के दो ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं -- (१) गाथासप्तशती एवं (२) वज्जालग्गं।

गाथासप्तशती :– प्राकृत का यह सर्व प्रथम मुक्तककोश है। इसमें अनेक कवि और कवयत्रियों की चुनी हुई सात सौ गाथाओं का संकलन है। यह संकलन लगभग प्रथम शताब्दी में कविवत्सल हाल ने लगभग एक करोड़ गाथाओं में से चुनकर तैयार किया है। यथा —

सत्त सत्ताइं कइवच्छलेण कोडीअ मज्झआरम्मि।
हालेण विरइआणि सालंकाराणं गाहाणं॥

— गाथा. १/३

गाथासप्तशती की गाथाओं की प्रशंसा अनेक प्राचीन कवियों ने की है। बाणभट्ट ने इस ग्रन्थ को गाथाकोश कहा है। इस ग्रन्थ का स्वरूप मुक्तक काव्य ग्रन्थों की परम्परा में अपना विशेष स्थान रखता है। इसमें गाथाओं का चयन करके उन्हें सौ-सौ के समूह में गुंफित किया गया है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सात सौ की संख्या के आधार पर इसका नाम गाथासप्तशती रखा गया है। इस ग्रन्थ में किसी एक ही विषय की उक्तियां नहीं हैं। अपितु शृंगार, नीति, प्रकृतिचित्रण, सज्जन-दुर्जन के स्वभाव, सुभाषित आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित गाथाएँ हैं। अधिकतर लोक-जीवन के विविध चित्रों की अभिव्यक्तियाँ इन गाथाओं के द्वारा होती हैं। नायक-नायिकाओं की विशेष भावनाओं और चेष्टाओं का चित्रण भी इस ग्रन्थ की गाथाएँ करती हैं।

वज्जालग्गं :- प्राकृत का दूसरा मुक्तक-काव्य वज्जालग्गं है। कवि जयवल्लभ ने इस ग्रन्थ का संकलन किया है। इसमें अनेक प्राकृत कवियों की सुभाषित गाथाएँ संकलित हैं। कुल गाथाएँ ७९५ हैं, जो ९६ वज्जाओं में विषय की दृष्टि से विभक्त हैं। यहाँ 'वज्जा' शब्द विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वज्जा देशी शब्द है, जिसका अर्थ है– अधिकार या प्रस्ताव। एक विषय से सम्बन्धित गाथाएँ एक वज्जा के अन्तर्गत संकलित की गई है। जैसे वज्जा नं० ४ का नाम है– 'सज्जणवज्जा'। इसमें कुल १७ गाथाएँ एक साथ हैं, जिनमें सज्जन व्यक्ति के सम्बन्ध में ही कुछ कहा गया हैं।

वज्जालग्गं गाथासप्तशती से कई अर्थों में विशिष्ट है। इसमें विषय की विविधता है। शृंगार एवं सौन्दर्य का चित्रण ही जीवन में सब कुछ नहीं है। व्यक्ति की अपेक्षा समाज के हित का चिंतन उदारता का द्योतक है। इस मुक्तक-काव्य में साहस, उत्साह, नीति, प्रेम, सुगृहणी, ऋतु, कर्मवाद आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित गाथाएँ हैं। विभिन्न प्रकार के पशु, पुष्प एवं सरोवर, दीपक, वस्त्र आदि उपयोगी वस्तुओं के गुण-दोषों का विवेचन भी इस ग्रन्थ में हुआ है। अतः यह काव्य मानव को लोक-मङ्गल की ओर प्रेरित करता है। आदर्श गृहणी, अच्छी नागरिकता की जननी होती है। यह काव्य हमें बतलाता है कि गृहस्वामिनी को कैसा होना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चाहिए। वह कब गृह-लक्ष्मी कहलाती है। यथा —

भुंजइ भुंजियसेसं सुप्पइ सुत्तम्मि परियणे सयले।
पढमं चेय विबुज्झइ घरस्स लच्छी न सा घरिणी॥

खण्डकाव्य :

प्राकृत में खण्डकाव्य कम ही लिखे गये हैं। क्योंकि कवियों की मुख्य प्रवृत्ति जीवन को सम्पूर्णता से चित्रित करना रहा है। कथा एवं चरित ग्रन्थों के द्वारा उन्होंने कई बड़े-बड़े ग्रन्थ प्राकृत में लिखे हैं। किन्तु प्राकृत में कुछ खण्डकाव्य भी उपलब्ध हैं, जिनमें मानव जीवन के किसी एक मार्मिक पक्ष की अनुभूति को पूर्णता के साथ व्यक्त किया गया है। १७ वीं शताब्दी के निम्न प्राकृत खण्डकाव्य उपलब्ध हैं।

कंसवहो :- श्रीमद्भागवत के आधार पर मालावर प्रदेश के निवासी श्री रामपाणिवाद ने सन् १६०७ के लगभग इस ग्रन्थ की रचना की थी। कवि प्राकृत, संस्कृत और मलयालम के प्रसिद्ध विद्वान् थे। इनकी कई रचनाएँ इन भाषाओं में प्राप्त हैं।

कंसवहो (कंसवध) में चार सर्ग एवं २३३ पद्य हैं। इस ग्रन्थ के कथानक में उद्धव, श्रीकृष्ण और बलराम को धनुषयज्ञ के बहाने गोकुल से मथुरा ले जाता है। वहाँ श्रीकृष्ण कंस का वध करते हैं, जिसका वर्णन कवि ने बहुत ही प्रभावक ढंग से किया है। यह एक सरस काव्य है, जिसमें लोक-जीवन, वीरता और प्रेमतत्त्व का निरूपण हुआ है।

उसाणिरुद्ध :- यह खण्डकाव्य भी रामपाणिवाद द्वारा रचित है। इसमें बाणासुर की कन्या उषा का श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध के साथ विवाह होने की घटना वर्णित है। प्रेम काव्य के रूप में इसका चित्रण हुआ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

है। अतः इस काव्य में शृंगारिकता अधिक है। राजशेखर की कर्पूर-मंजरी एवं अन्य काव्यों का भी इस पर प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रबन्ध-काव्य की दृष्टि से यह काव्य उपयुक्त है। इसकी कथावस्तु सरस है।

कुम्मापुत्तचरियं :- प्राकृत के चरित ग्रन्थों में कुछ ऐसे काव्य हैं, जिन्हें कथानक की दृष्टि से खण्डकाव्य कहा जा सकता है। कुम्मापुत्तचरियं इसी प्रकार का खण्डकाव्य है। लगभग १६ वीं शताब्दी में जिनमाणिक्य के शिष्य अनंतहंस ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में कुल १९८ गाथाएँ प्राप्त हैं। कुम्मापुत्तचरियं में राजा महेन्द्रसिंह और उनकी रानी कूर्मा के पुत्र धर्मदेव के जीवन की कथा वर्णित है। प्रारम्भ में दुर्लभकुमार नामक राजपुत्र को भद्रमुखी नामक यक्षिणी अपने महल में ले जाती है, और बाद में एक महात्मा के द्वारा उस कुमार के पूर्व-जन्म का वृतान्त कहा जाता है।

इस ग्रन्थ में दान, शील, तप और भाव-शुद्धि के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। इसी प्रसंग में कई छोटे-छोटे उदाहरण भी प्रस्तुत किए गये हैं। मनुष्य-जन्म की सार्थकता बतलाते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार असावधानी से हाथ में रखा हुआ रत्न समुद्र में गिर जाने पर फिर नहीं मिलता है, उसी प्रकार व्यर्थ के कामों में मनुष्य-जन्म को व्यतीत कर देने पर अच्छे कार्य करने के लिए दुबारा मनुष्य-जन्म नहीं मिलता है। इस ग्रन्थ की भाषा बहुत सरल है, और संवाद-शैली में कथा को आगे बढ़ाया गया है।

महाकाव्य :

महाकाव्य में जीवन की सम्पूर्णता को विभिन्न आयामों द्वारा उद्घाटित किया जाता है। प्राकृत में रसात्मक महाकाव्य कम ही लिखे गये हैं। किन्तु जो महाकाव्य उपलब्ध हैं, वे अपनी विशेषताओं के कारण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

महाकाव्य के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। उनकी काव्यात्मकता और प्रौढ़ता के कारण उन्हें प्राकृत के शास्त्रीय महाकाव्य कहा जा सकता है। इस रसमयता के कारण वे प्राकृत के अन्य कथा एवं चरित ग्रन्थों से अपना भिन्न स्थान रखते हैं। ऐसे प्राकृत के उत्कृष्ट महाकाव्य हैं :— (१) सेतुबन्ध, (२) गउडवहो, (३) लीलावईकहा एवं, (४) द्वयाश्रयकाव्य। प्राकृत के ये चारों महाकाव्य ईसा की ४-५ वीं शताब्दी से १२ वीं शताब्दी तक की प्राकृत कविता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सेतुबन्ध (रावणवहो) :- प्राकृत का यह प्रथम शास्त्रीय महाकाव्य है। इसमें राम कथा के एक अंश को प्रौढ़ काव्यात्मक शैली में महाकवि प्रवरसेन ने प्रस्तुत किया है। वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड की कथावस्तु सेतुबन्ध के कथानक का आधार है। इस महाकाव्य में मुख्य रूप से दो घटनाएँ हैं :- सेतुबन्ध और रावणवध। अतः इन दोनों प्रमुख घटनाओं के आधार पर इसका नाम 'सेतुबन्ध' अथवा 'रावणवहो' प्रचलित हुआ है। टीकाकार रामदास भूपति ने इसे 'रामसेतु' भी कहा है। महाकवि ने सेतु-रचना के वर्णन में ही अधिक उत्साह दिखाया है। अतः 'सेतुबन्ध' इसका सार्थक नाम है। 'रावणवध' को इस काव्य का फल कहा जा सकता है।

सेतुबन्ध महाकाव्य में कुल १२९१ गाथाएँ प्राप्त होती हैं, जो १५ आश्वासों में विभक्त हैं। इसकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। आश्वासों के अन्त में 'पवरसेण विरइए' पद प्राप्त होता है। अतः इसके रचयिता महा कवि प्रवरसेन हैं।

गउडवहो :- प्राकृत के महाकाव्यों में 'गउडवहो' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। लगभग ई० सन् ७६० में महाकवि वाक्पतिराज ने गउडवहो की रचना की थी। वाक्पतिराज कन्नौज के राजा यशोवर्मा के आश्रय में रहते थे।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उन्होंने इस काव्य में यशोवर्मा के द्वारा गौड़देश (मगध) के किसी राजा के वध किये जाने का वर्णन किया है। इसीलिए इसका नाम 'गउडवध' रखा है। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक काव्य भी है।

'गउडवहो' में प्रारम्भ में विभिन्न देवी-देवताओं को ६१ गाथाओं से नमस्कार किया गया है और इसके बाद ९८ गाथा तक वाक्पतिराज ने महाकवियों और उनके काव्य के स्वरूप पर प्रकाश डाला है। इस प्रसंग में उन्होंने प्राकृत भाषा और प्राकृत काव्य के महत्त्व को भी स्पष्ट किया है।

इसके बाद कवि ने महाकाव्य के नायक यशोवर्मा के जीवन का वर्णन किया है। प्रसंग के अनुसार इस काव्य में प्रकृति-चित्रण, विजय-यात्रा का वर्णन तथा वस्तुवर्णन आदि किये गये हैं। इन वर्णनों से ज्ञात होता है कि कवि ने लोक को बहुत सूक्ष्मता से देखा था। अतः उनकी अनुभूतियां व्यापक थीं। ग्रन्थ में अनेक अलंकारों का प्रयोग किया गया है। श्यामल शरीर वाले कृष्ण पीताम्बर पहिने हुए दिन और रात्रि के मिलन-स्थल सायंकाल के समान प्रतीत होते हैं, इस दृश्य को कवि ने इस प्रकार कहा है--

तं णमह पीय-वसणं जो वहइ सहाव-सामलं-च्छायं।
दिअस-णिसा-लय-णिग्गम-विहाय-सबलं पिव सरीरं॥

लीलावईकहा :- लगभग ९ वीं शताब्दी में महाकवि कोऊहल ने 'लीलावईकहा' नामक महाकाव्य की रचना की है। यह प्राकृत का महाकाव्य एवं कथा-ग्रन्थ दोनों है। इस ग्रन्थ में प्रतिष्ठान नगर के राजा सातवाहन एवं सिंहलद्वीप की राजकुमारी लीलावई के प्रेम की कथा वर्णित है। बीच में कई अवान्तर कथाएँ हैं। इस महाकाव्य से ज्ञात होता है कि प्रेमी-प्रेमिकाएँ अपने प्रेम में दृढ़ होते थे और हर तरह की परीक्षाओं में खरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उतरते थे। तभी समाज उनके विवाह की स्वीकृति देता था। राजाओं के जीवन-चरित का इसमें काव्यात्मक वर्णन है।

यह महाकाव्य काव्यशास्त्रीय दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। इसमें उपमा उत्प्रेक्षा, रूपक, समासोक्ति आदि अलंकारों का व्यापक प्रयोग है। शृंगार और वीर रस का इसमें मनोहर चित्रण हुआ है।

इन महाकाव्यों के अतिरिक्त प्राकृत में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित 'द्वयाश्रयकाव्य' भी प्रसिद्ध है। इसमें प्राकृत व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया गया है। कुमारपाल राजा का जीवन भी इस काव्य में वर्णित है। इसी तरह श्री कृष्णलीला शुककवि ने 'सिरिचिंधकव्व' नामक महाकाव्य प्राकृत में लिखा है, जिसका प्रत्येक सर्ग 'श्री' शब्द से अंकित है। लगभग १३ वीं शताब्दी में इसे लिखा गया है। इस प्रकार प्राकृत में महाकाव्यों की एक सशक्त परम्परा है।

चरित-काव्य :

प्राकृत काव्य के अन्तर्गत कुछ ऐसे भी काव्य ग्रन्थ हैं; जिनमें महा पुरुषों के जीवन-चरित वर्णित हैं। ये ग्रन्थ पद्य में लिखे गये हैं। इन्हें उपदेशात्मक काव्य–ग्रन्थ कहा जा सकता है। ऐसे चरितकाव्य ईसा की तीसरी शताब्दी से १५-१६ वीं शताब्दी तक लिखे जाते रहे हैं। विमलसूरि का 'पउमचरियं', धनेश्वरसूरि का 'सुरसुन्दरीचरियं', नेमिचन्द्रसूरि का 'महावीर चरियं' तथा देवेन्द्रसूरि का 'सुदंसणाचरियं' आदि प्रमुख चरितकाव्य हैं। इन चरितकाव्यों में कथा एवं चरित के साथ-साथ प्राकृत काव्य का स्वरूप भी प्रकट किया गया है। इनका काव्यात्मक सौन्दर्य मनोहर है।

कथा-काव्य :

प्राकृत में कई कथा-ग्रन्थ लिखे गये हैं। उनमें से कुछ गद्य में एवं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुछ पद्य में हैं। पद्य में लिखे गये प्राकृत के कथा-काव्य काव्यात्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। पादलिप्तसूरि ने 'तरंगवतीकथा', जिनेश्वरसूरि ने 'निर्वाणलीलावतीकथा', सोमप्रभसूरि ने 'कुमारपालप्रतिबोध', आम्रदेव सूरि ने 'आख्यानमणिकोशवृत्ति' तथा रत्नशेखरसूरि ने 'सिरिसिरिवालकहा' आदि कथा-काव्य लिखे हैं। ये कथा-काव्य ईसा की प्रथम शताब्दी से १५ वीं शताब्दी तक लिखे जाते रहे हैं। इन ग्रन्थों में कथातत्त्व एवं काव्यतत्त्व दोनों का समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

इस प्रकार प्राकृत काव्य–साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियाँ हैं। मुक्तक काव्य जीवन के विभिन्न अनुभवों से परिचित कराते हैं। खण्डकाव्य चरित नायकों के विशिष्ट जीवन का चित्र प्रस्तुत करते हैं। महाकाव्यों में जीवन के विभिन्न अनुभवों और वस्तुजगत् का काव्यात्मक वर्णन प्राप्त होता है। चरितकाव्य महापुरुषों के प्रेरणादायक चरितों की काव्यात्मक अनुभूति देते हैं। कथा-काव्य कल्पना और सौन्दर्य का समन्वित आनन्द प्रदान करते हैं। प्राकृत काव्य–साहित्य की ये सब विधाएँ भारतीय साहित्य के भण्डार को समृद्ध करती हैं।

ooo

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सर्वनाम चार्ट

एकवचन : पु० स्त्री०			पुंल्लिग		स्त्रीलिंग		नपुंसकलिंग	
शब्द	अम्ह	तुम्ह	त	इम	ता	इमा	त	इम
प्र०	अहं	तुमं	सो	इमो	सा	इमा	तं	इमं
द्वि०	ममं	तुमं	तं	इमं	तं	इमं	तं	इमं
तृ०	मए	तुमए	तेण	इमेण	ताए	इमाए	तेण	इमेण
च०	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	ताअ	इमाअ	तस्स	इमस्स
पं०	ममाओ	तुमाओ	ताओ	इमाओ	तत्तो	इमत्तो	ताओ	इमाओ
ष०	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	ताअ	इमाअ	तस्स	इमस्स
स०	अम्हम्मि	तुम्हम्मि	तम्मि	इमम्मि	ताए	इमाए	तम्मि	इमम्मि
बहुवचन :								
प्र०	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	ताओ	इमाओ	ताणि	इमाणि
द्वि०	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	ताओ	इमाओ	ताणि	इमाणि
तृ०	अम्हेहि	तुम्हेहि	तेहि	इमेहिं	ताहि	इमाहि	तेहि	इमेहि
च०	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	ताण	इमाण	ताण	इमाण
पं०	अम्हाहिंतो	तुम्हाहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	ताहिंतो	इमाहित्तो
ष०	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	ताण	इमाण	ताण	इमाण
स०	अम्हेसु	तुम्हेसु	तेसु	इमेसु	तासु	इमासु	तेसु	इमेसु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञाशब्द चार्ट

एकवचन :	पुंल्लिग शब्द			स्त्रीलिंग शब्द				
	अकारान्त	इकारान्त	उकारान्त	आकारान्त	इकारान्त	ईकारान्त	उकारान्त	ऊकारान्त
शब्द	पुरिस	सुधि	साहु	बाला	जुवइ	नई	धेणु	बहू
प्र०	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवई	नई	धेणू	बहू
द्वि०	पुरिसं	सुधिं	साहुं	बालं	जुवइं	नइं	धेणुं	बहुं
तृ०	पुरिसेण	सुधिणा	साहुणा	बालाए	जुवईए	नईए	धेणूए	बहूए
च०	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईआ	नईआ	धेणूए	बहूए
पं०	पुरिसत्तो	सुधित्तो	साहुत्तो	बालत्तो	जुवइत्तो	नइत्तो	धेणुत्तो	बहुत्तो
ष०	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईआ	नईआ	धेणूए	बहूए
स०	पुरिसे	सुधिम्मि	साहुम्मि	बालाए	जुवईए	नईए	धेणुए	बहूए
सं०	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवइ	नइ	धेणु	बहू

बहुवचन :

प्र०	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ
द्वि०	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ
तृ०	पुरिसेहि	सुधीहि	साहूहि	बालाहि	जुवईहि	नईहि	धेणूहि	बहूहि
च०	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण
पं०	पुरिसाहिंतो	सुधीहिंतो	साहूहिंतो	बालाहिंतो	जुवईहिंतो	नईहिंतो	धेणूहिंतो	बहूहिंतो
ष०	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण
स०	पुरिसेसु	सुधीसु	साहूसु	बालासु	जुवईसु	नईसु	धेणूसु	बहूसु
सं०	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रियारूप चार्ट

एकवचन

पुरुष	वर्तमान काल		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध/हेत्वर्थ कृदन्त	
	अ.क्रिया नम	आ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	आ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	आ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	आ.क्रिया दा	अ. क्रिया नम	आ. क्रिया दा
प्रथम	नमामि	दामि	नमीअ	दाही	नमिहिमि	दाहिमि	नममु	दामु	नमिऊण	दाऊण
मध्यम	नमसि	दासि	नमीअ	दाही	नमिहिसि	दाहिसि	नमहि	दाहि	नमिउं	दाउं
अन्य	नमइ	दाइ	नमीअ	दाही	नमिहिइ	दाहिइ	नमउ	दाउ	"	"

बहुवचन

पुरुष	वर्तमान काल		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध/हेत्वर्थ कृदन्त	
प्रथम	नमामो	दामो	नमीअ	दाही	नमिहामो	दाहामो	नममो	दामो	नमिऊण	दाऊण
मध्यम	नमित्था	दाइत्था	नमीअ	दाही	नमिहित्था	दाहित्था	नमह	दाह	नमिउं	दाउं
अन्य	नमन्ति	दान्ति	नमीअ	दाही	नमिहिन्ति	दाहिन्ति	नमन्तु	दान्तु		

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कृदन्त विशेषण चार्ट

		एकवचन	प्रथमा विभक्ति		बहुवचन		
काल	भू.क्रि. व प्रत्यय	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
व० का०	पढ+अन्त	पढन्तो	पढन्ती	पढन्तं	पढन्ता	पढन्तीओ	पढन्ताणि
,,	पढ+माण	पढमाणो	पढमाणी	पढमाणं	पढमाणा	पढमाणीओ	पढमाणाणि
भू० का०	पढ+इ+अ	पढिओ	पढिआ	पढिअं	पढिआ	पढिआओ	पढिआणि
भ० का०	पढ+इ+स्सन्त	पढिस्सन्तो	पढिस्सन्ती	पढिस्सन्तं	पढिस्सन्ता	पढिस्सन्तीओ	पढिस्सन्ताणि
यो०सू०[क]	पढ+अणीअ	पढणीओ	पढणीआ	पढणीअं	पढणीआ	पढणीआओ	पढणीआणि
वि.कृ० [ख]	पढ+ए+अव्व	पढेअव्वो	पढेअव्वा	पढेअव्वं	पढेअव्वा	पढेअव्वाओ	पढेअव्वाणि

Jain Educationa International
For Personal and Private Use Only
www.jainelibrary.org

हिन्दी अनुवाद

पाठ ११ : प्राकृत काव्य

१. प्राकृत काव्य के लिए नमस्कार है और (उसके लिए भी), जिसके द्वारा प्राकृत काव्य रचा गया हैं। उनको भी हम नमस्कार करते हैं, जो (प्राकृत काव्य को) पढ़कर (उसे) समझते हैं।

२. (सरल) देशी शब्दों से युक्त, मधुर अक्षरों एवं छन्द से रचित, मनोहर, स्पष्ट, विस्तीर्ण एवं प्रकट अर्थवाला प्राकृत-काव्य (सब लोगों के द्वारा) पढ़ने योग्य है।

३. सुगन्धित एवं शीतल जल से, चतुर व्यक्तियों के वचनों से और उसी तरह प्राकृत काव्य में जो आनन्द (रस) उत्पन्न होता है, (उससे हम कभी) संतोष को प्राप्त नहीं होते हैं (नहीं अघाते हैं)।

४. नये अर्थ की प्राप्ति, अगाध मधुरता, काव्यतत्त्व की समृद्धि, सरलता एवं संसार के प्रारम्भ से अब तक की काव्य-रचना, यह (सब) प्राकृत में (है)।

५. सभी भाषाएँ इसी (जन-बोली प्राकृत) से निकलती हैं और इसी को प्राप्त होती हैं (भाषा से फिर बोली बन जाती हैं)। जैसे- जल (बादल के रूप में) समुद्र से निकलते हैं और समुद्र को ही (नदियों के रूप में) आते हैं।

६. जटिल अर्थ से रहित और देशी (शब्दों वाला), मधुर अक्षरों से रचित, मनोहर प्राकृत काव्य संसार में किसके हृदय को अच्छा नहीं लगता है ?

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १२ : शिक्षा-विवेक

१. उस प्रकार के सुन्दर, स्वस्थ निवासियों वाले किसी सन्निवेस (नगर) में सिद्ध नामक किसी (व्यक्ति) के पिता के लिए प्रिय दो पुत्र (थे)।

२. उस (पिता) के द्वारा उन्हें कुछ सूत्र पढ़ाये गये, किन्तु वह (पिता) विचार करता है कि (यदि) ये कुछ निमित्त (शास्त्र) जान जाते हैं तो (कुछ) धन प्राप्त हो जाता।

३. तब पिता के द्वारा किसी नैमित्तकशास्त्र के जानकार को समर्पित कर दिये गए (वे पुत्र) (उससे) सीखते हैं। किन्तु एक (पुत्र) के लिए (वह) शिक्षा अच्छी तरह प्राप्त होती है।

४. और दूसरे के लिए अविनय-भाव के कारण उस प्रकार नहीं (प्राप्त होती है)। इसके बाद किसी एक दिन वे (दोनों) जंगल में लकड़ी लेने के लिए भेजे गये।

५. मार्ग में जाते हुए उनके द्वारा हाथी के जैसे पैर देखे गये। एक ने (अविनीत शिष्य) कहा-'हे भाई! देखो, यह हाथी गया है।'

६. दूसरे (विनीत शिष्य) ने कहा-'यह हथिनी है, (उसकी) शारीरिक-क्रिया से जानी गयी है और (वह) कानी है, (क्योंकि) एक ही किनारे में चरने (पत्तियाँ खाने) से जानी गयी है।

७. और भी (उस हथिनी के) ऊपर सुन्दर स्त्री है।' यह कैसे जान गया ? 'वृक्षों पर लाल धागों के लगने से यह ज्ञात हुआ है।'

८. उस (कथन) के विश्वास के लिए इच्छुक वे दोनों जब उसी मार्ग से जाते हैं तब जैसा उन्होंने कहा था (वह) सब तालाब के किनारे (पहुँचने पर) देखा गया (सत्य प्रमाणित हो जाता है)।

९. इसी समय में छाया में विश्राम करते हुए उनके पास में सिर पर जल भरे हुए घड़े को रखे हुए एक वृद्धा (बूढ़ी औरत) आयी।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१०-११. पुत्र के समान आयु से युक्त (उनको) देखकर पुत्र के स्नेह की उत्सुकता से विदेश में स्थित अपने पुत्र की जानकारी पूछने वाली (उस वृद्धा) का घड़ा टूट गया। और पानी (सरोवर के) पानी में मिल गया। जब तक वह वृद्धा उससे दुखी मनवाली और चिन्ता से युक्त होती है तभी एक (अविनीत शिष्य) ने कहा —

१२ 'यदि निमित्तशास्त्र का यह वचन- 'उससे उत्पन्न उसी में मिल जाता है, सत्य है तो हे भद्रे, तुम्हारा पुत्र मर गया है। व्यर्थ में दुख करने से क्या (फायदा)?

१३. दूसरे (विनीत शिष्य) ने कहा- 'निमित्तशास्त्र में प्राप्त यह वाणी (सही ढंग से) मिलायी हुई नहीं है। इसलिए हे भद्रे! तुम्हारा पुत्र जीवित है। घर में जाकर देखो।'

१४. उस (पुत्र) को (घर में) देखकर आभूषणों और रुपयों के साथ (वह वृद्धा) एक क्षण में वापस आ गयी। (गहने-रुपये) समर्पित कर संतुष्ट (वह वृद्धा) आनन्दित होकर अपने घर चली गयी।

१५. तब (एक) भाई के द्वारा पूछा गया- 'हे भाई! कहो न, यह (कथन) विपरीत (कैसे) हो गया?' दूसरे ने कहा– 'यह सत्य है– उससे उत्पन्न उसी में (मिलता है)।'

१६. पानी पानी में मिल गया, मिट्टी से बना हुआ घड़ा (उसी में) मिल गया। अतः यह स्पष्ट (सरल) मार्ग है कि माता में पुत्र मिलता है।

१७. इसलिए तुम खेद मत करो और (अपने) गुरु के सम्बन्ध में भी वैर धारण मत करो। गुरु लोग भी जीव (व्यक्ति) में (उसकी) योग्यता के अनुसार ही गुणों की स्थापना करते हैं।

000

पाठ १३ : राजकुमारों की बुद्धि-परीक्षा

१. इसके बाद एक बार कभी रात्रि के अन्तिम पहर में सुखपूर्वक जगा हुआ राजा (प्रसेनजित) इस प्रकार सोचने लगा —

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२. 'मेरे राजकुमारों के बीच में कौन (राजकुमार) चूड़ामणि से सुशोभित फण के अग्रभाग वाले महानाग शेष की तरह पृथ्वी की धुरा को धारण करने में समर्थ होगा ?'

३. ऐसा सोचकर हाथी, घोड़े, शस्त्र, रथ आदि से भरे हुए सम्पूर्ण पुराने शस्त्रागार को उसने चारों दिशाओं से आग लगवा दी।

४. उस अग्नि की भयंकर ज्वाला को देखकर राजा राजकुमारों को कहता है — 'अरे राजकुमारो! (इस आग में से) जो (कुमार) जो कुछ भी प्राप्त करता है वह सब उसे दे दिया जायगा।'

५. राजा के आदेश को सुनकर राजकुमार तड़-तड़ की आवाज करते हुए, जलते हुए बांसों के उस घर में घुसकर हाथी आदि को निकाल लेते हैं।

६. किन्तु राजकुमार श्रेणिक के द्वारा जलते हुए उस मकान के भीतर प्रवेशकर शीघ्र ही चतुरता से बिम्ब नामक जयढक्का (नगाड़ा) प्राप्त कर ली गयी।

७. दूसरे राजकुमार मजाक में उपहास करते हुए हाथ में ली हुई (उस) बिम्ब (नगाड़ा) वाले श्रेणिक को 'बिम्बसार' कहते हैं।

८. इसको देखकर राजा ने सोचा- 'श्रेणिक के द्वारा अच्छा किया गया है जो कि राज्य के इस प्रथम अंग जयढक्का को प्राप्त किया गया।'

९. इसके बाद (कभी) एक बार राजकुमारों के पराक्रम, त्याग की परीक्षा करने के लिए राजा पकवान बनवाकर अपने कुमारों को भोजन करवाता है।

१०. पकवान परोसकर राजा के द्वारा कुत्तों के झुण्ड को (वहाँ) बुलवाया गया। दूसरे (राजकुमार) उनको आता हुआ देखकर भाग गये।

११. किन्तु कुमार श्रेणिक दोनों बगलों में स्थित दूसरे राजकुमारों की थालियों को लेकर कुत्तों के लिए फेंक देता है और भय से रहित मनवाला (वह) स्वयं की थाली जीमता रहता है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१२. उस वृतान्त को देखकर आनन्दित हुआ राजा सोचता हैं- 'यह (श्रेणिक) उदार है और वीर है (तथा) मेरे अन्य राजकुमार कायर हैं।'

१३. किसी दूसरे अवसर पर राजकुमारों की बुद्धि की परीक्षा करने के लिए (राजा) गिने हुए लड्डुओं की टोकरियों और पानी के कलशों को सीलबन्द करा देता हैं।

१४. तब उन (राजकुमारों) को बुलवाकर कहता है- 'हे पुत्र! अपनी बुद्धि के वैभव से सील तोड़कर लड्डुओं को खाओ और पानी को भी पिओ।'

१५. ऐसा कहे गये अपनी बुद्धि के घमण्डी वे (राजकुमार) उपाय को न प्राप्त करते हुए भूख-प्यास से सूखे शरीर वाले (होकर) दीनता को प्राप्त हुए।

१६. किन्तु श्रेणिक कुमार के द्वारा कलशों से झरती हुई बूदों के जल को लेकर और टोकरियों को हिलाकर (उनसे गिरी हुई) लड्डुओं की चूरी से भोजन कर लिया गया।

१७. श्रेणिक की बुद्धि के वैभव को इस प्रकार सुनकर आश्चर्य युक्त महाराजा सोचता है कि राज्याभिषेक के लिए यह (श्रेणिक) योग्य है।

000

पाठ १४ : सज्जन-स्वरूप

१. शुद्ध स्वभाव वाला सज्जन (व्यक्ति) दुर्जन व्यक्ति के द्वारा मलिन किया जाता हुआ भी राख के द्वारा (मले जाते हुए) दर्पण की तरह और अधिक निर्मल (स्वच्छ) होता है।

२. यह सत्कार्य किया गया, जो ब्रह्मा के द्वारा संसार में सज्जन (लोग) बनाये गये। (क्योंकि वे सज्जन) दर्शन किये जाने पर दुख को हरण करते हैं (एवं) बातचीत करते हुए (वे) सभी सुखों को प्रदान करते हैं।

३. न दूसरों पर हँसते हैं, न अपनी प्रशंसा करते हैं (और) सदा प्रिय बोलते हैं, यह सज्जन लोगों का स्वभाव है। उन (सज्जन) पुरुषों को बार-बार नमस्कार।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

४. सज्जन व्यक्ति के अनेक गुणों से क्या? दो(गुण)ही पर्याप्त हैं- बिजली की तरह (उनका क्षणिक) क्रोध एवं पत्थर की लकीर की तरह (उनकी) मित्रता।

५. प्रलय में पर्वत विचलित हो जाते हैं एवं समुद्र भी मर्यादा को त्याग देते हैं (किन्तु) उस (आपत्ति) समय में भी सज्जन व्यक्ति (अपनी) प्रतिज्ञा को शिथिल नहीं करते हैं।

६. यद्यपि ब्रह्मा के द्वारा सज्जन व्यक्ति चन्दन के वृक्ष की तरह फल-रहित (धन-रहित) बनाये गये हैं। फिर भी (वे) अपने शरीर से (भी) लोगों का परोपकार करते हैं।

७. सूर्य कहाँ उगता है? (और) कमल के वन कहाँ विकसित होते हैं? संसार में सज्जन लोगों का स्नेह (उनसे) दूर रहने वालों के लिए भी कम नहीं होता है।

८. सज्जन पुरुषों के हृदय विशाल वृक्षों की शाखाओं की तरह फल-समृद्धि (वैभव) में अच्छी तरह नम्र (और) फल (धन) के अभाव में ऊँचे (स्वाभिमानी) होते हैं।

९. सज्जन पुरुषों का कार्यरूपी वृक्ष (उनके) हृदय में पैदा हुआ, वहाँ पर ही बढ़ा और लोक में प्रकट नहीं हुआ। (वह केवल) फलों (परिणाम) के द्वारा देखा जाता है।

१०. सज्जन लोग स्पष्ट रूप से दूसरों के कार्य में तल्लीन और अपने कार्य के प्रति उदासीन होते हैं। (जैसे) चन्द्रमा पृथ्वी को सफेद करता है, (किन्तु) अपनी कालिमा को नहीं मिटाता है।

११. सत्य बोलने वाले, प्रतिज्ञा को पूरा करने वाले, बड़े कार्यों के भार को वहन करने वाले धैर्यशाली, प्रसन्नमुख सज्जन लोग चिरकाल तक जीवित रहने वाले हों।

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १५ : सफल मनुष्य-जन्म

१. किसी एक श्रेष्ठ नगर में कलाओं में कुशल कोई (एक) व्यापारी था। (वह) गुरुओं के पास में रत्न-परीक्षा ग्रन्थ का अभ्यास करता है।

२. इसके बाद किसी एक दिन वह व्यापारी सोचता है कि अन्य रत्नों से क्या (लाभ) ? मणियों में शिरोमणि, सोचने मात्र से धन देने वाला चिन्तामणि (रत्न) है।

३. तब से वह उसके लिए अनेक स्थानों में खानों को खोदता है। फिर भी विभिन्न उपायों को करने से भी वह चिन्तामणि उसे प्राप्त नहीं होता है।

४. किसी ने (उसे) कहा— 'जहाज पर चढ़कर रत्नद्वीप में जाओ। वहाँ आशापुरी देवी है। (वह) तुम्हें इच्छित (फल) देगी।'

५. वहाँ रत्नद्वीप में इक्कीस दिनों में पहुँचा हुआ वह उस देवी की आराधना करता है। संतुष्ट हुई वह (देवी) इस प्रकार (उसे) कहती है —

६. 'हे भद्र ! तुम्हारे द्वारा आज मैं किस कार्य से पूजी गयी हूँ ?' वह कहता है— 'हे देवि! यह प्रयत्न चिन्तामणि रत्न के लिए है।'

७. तब उस (संतुष्ट) देवी के द्वारा उस रत्न-व्यापारी को चिन्तामणि रत्न दे दिया गया। संतुष्ट हुआ वह (व्यापारी) अपने घर जाने के लिए जहाज पर चढ़ गया।

८. जहाज के एक स्थान पर बैठा हुआ (वह) व्यापारी जब समुद्र के बीच में आया तभी पूर्व दिशा में पूर्णिमा का चाँद निकल आया।

९. उस चाँद को देखकर वह व्यापारी अपने मन में सोचता है— 'चिन्तामणि रत्न का प्रकाश अधिक है अथवा चन्द्रमा का ?'

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१०, ऐसा सोचकर (वह) अपनी हथेली में चिन्तामणि रत्न को लेकर आँख से बार-बार रत्न और चन्द्रमा का निरीक्षण करता है।

११. और उसके दुर्भाग्य से इस प्रकार देखते हुए हथेली-प्रदेश से अत्यन्त छोटा और चमकदार वह रत्न समुद्र में गिर गया।

१२. उस (व्यापारी) के द्वारा बार-बार खोजे जाने पर भी समुद्र के बीच में गिरा हुआ समस्त रत्नों का शिरोमणि (वह) चिन्तामणि क्या किसी प्रकार प्राप्त हो सकता है? (नहीं)।

१३ उसी प्रकार बहुत प्रकार के सैकड़ों जन्मों में भ्रमण के द्वारा किसी-किसी प्रकार से प्राप्त मनुष्य-जन्म को जीव असावधानी (प्रमाद) से परवश होकर क्षणमात्र में खो देता है।

000

पाठ १६ : मनुष्य की कृतघ्नता

१. एक आदमी था। (एक बार) वह लकड़ी के लिए जंगल को गया और उसके द्वारा (वहाँ) सिंह देखा गया। उस (शेर) के भय से (वह आदमी) वृक्ष पर चढ़ गया।

२-३. उस ऊँचे वृक्ष पर (पहले से) चढी हुई एक बन्दरिया को देखकर भय को प्राप्त शरीर वाला वह (आदमी) सोचता है— 'दोनों के बीच में (मैं) घिर गया (हूँ)। 'यह एक तरफ व्याघ्र एवं दूसरी तरफ भरी हुई नदी' नामक विकट न्याय हो गया है।' तभी बन्दरिया के द्वारा वह कहा गया— 'हे पुत्र! डरो मत और काँपो मत।'

४. (इससे) वह आश्वस्त हो गया। वृक्ष के नीचे (वह) सिंह ठहर जाता है। रात्रि हुई। तब (वह) आदमी और (वह) बन्दरिया नींद लेने लगते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

५. बन्दरिया ने उसे कहा— 'मेरी गोद में सिर रखकर सो जाओ।' उस (आदमी) के द्वारा यही किया गया। (तब) सिंह उस बन्दरिया से कहता है।

६-७. 'मैं अत्यन्त भूख से युक्त हूँ। मनुष्य को (नीचे) छोड़ दो। मैं तुम्हारा अच्छा मित्र हो जाऊँगा और कभी तुम्हें उपकृत कर दूँगा। तुम एक कृतज्ञता-रहित खराब आदमी की क्यों रक्षा कर रही हो?' तब बन्दरिया ने कहा- 'मैं शरणागत को नहीं देती हूँ।'

८. (तब) बहुत से प्रतिकूल बचन कहकर (वहाँ पर) स्थित (वह) सिंह भी दुखी हो गया। और (तभी) जगा हुआ वह वनचर (आदमी) कहता है-- 'हे अम्बे! (बन्दरिया, अब) तुम सो जाओ।'

९-१०. उसकी गोद में सिर रखकर वह बन्दरिया भी सो गयी। (तब) सिंह कहता है- 'हे मनुष्य! मुझे यह बन्दरिया दे दो। इसको खाकर मैं चला जाऊँगा। तुम्हारा भी रास्ता (साफ) हो जायेगा।' यह सुनकर उस मनुष्य के द्वारा गोद से वह बन्दरिया (नीचे) फेंक दी गयी।

११. किन्तु वह बन्दरिया (अपनी) चतुरता से एक डाली में लटक गयी। तब वह कहती है- (हे मनुष्य!) 'तुम्हारे मनुष्य-जन्म और मनुष्य की कृतघ्नता के लिए धिक्कार है।'

१२. (प्रातःकाल) उस मार्ग से बहुत बड़ा काफला (यात्रिओं का समूह) निकला। उसकी आवाज से सिंह वहाँ से भाग गया और वह वनचर (आदमी) घर को चला गया।

000

पाठ १७ : नगर-वर्णन

१. (वह नगर) शत्रुओं को भय पैदा करने वाले विशाल किले से घिरा हुआ, सुन्दर, रमणीक मकर-तोरणों, गोपुरों और दरवाजों से युक्त (था)।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२-३. अत्यन्त हरे-भरे उपवनों से सुशोभित समीप भाग वाले, बरामदों और झरोखों से युक्त, श्रेष्ठ चित्रों से युक्त, अनेक मंजिलों वाले, बर्फ की तरह सफेद, मानों नगरवासियों के यश के खंभों की तरह, भवनों से वह नगर हमेशा अत्यन्त रमणीय (रहता था)।

४-५ वहाँ अन्य-अन्य देशों से आये हुए व्यापार-कला में निपुण व्यापारी लोगों से उस नगर के निवासियों के द्वारा प्रतिदिन किये जाते हुए व्यापार से तथा बहु-मूल्य सैकड़ों किरानों से भरे हुए अन्त-भाग वाले अनेक बाजारों से (वह नगर) सुशोभित था।

६. ऊँचे मकर-तोरणों पर पवन से उड़ती हुई सफेद ध्वजाओं से बढ़ी हुई सुन्दरता वाले देव-मंदिरों से सुशोभित, सुन्दर प्रदेश वाला (वह नगर था)।

७. (वह नगर) श्वेत कमल के समूह से सुशोभित अनेक विशाल सरोवरों से और सीढ़ियों द्वारा सरलता से उतरने योग्य हजारों वापियों से (युक्त था)।

८. (वह नगर) श्रेष्ठ तिराहे, चौराहे, चौक, बगीचे, उद्यान, दीर्घिका आदि के द्वारा पद-पद पर देवताओं के भी मन को हरण करने वाला था।

९. समस्त नगरों में प्रधान एवं नगर के गुणों से युक्त देवताओं के नगर की आशंका उत्पन्न करने वाला (वह) श्री हस्तिनापुर नामक नगर था।

१०. जहाँ पर प्रिय बोलने वाले, धार्मिक क्रियाओं में लीन, चतुरता, त्याग और भोगों से युक्त तथा कलाओं में कुशल लोग रहते थे।

११. जिस नगर में नाना प्रकार के प्रयोजनों से प्रेरित इधर-उधर नित्य घूमते हुए जन-समुदाय से राज-मार्ग कठिनता से चलने वाले हो गये थे।

१२. जहाँ पर करोड़ों पताकाओं से पूरा आकाश-मार्ग ढक जाने से गर्मी के दिनों में भी लोग सूर्य की किरणों के ताप को अनुभव नहीं करते थे।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१३. जिस नगर में घरों की दीवारों पर रखी हुई मणियों की किरणों से हमेशा अंधकार नष्ट हो जाने पर लोग बीती हुई रात्रि को नहीं जानते थे।

१४. जिस नगर की सुन्दरता को देखने के लिए आये हुए देवता कौतूहल से आकर्षित मनवाले होकर निर्निमेष (पलकों को न झुकाने वाले) नयनों वाले हो गए।

१५. धवल-गृहों के शिखरों पर लगी हुई पवन से प्रेरित पताकाएँ मानों सूर्य के सारथी को अत्यन्त ऊँचे जाने के लिए संकेत करती हैं।

१६. जिस नगर में पाद-प्रहार नाट्यभूमि में, दण्ड ध्वज-पताकाओं में और शीर्ष-छेदन ज्वार आदि धान्य में ही दिखायी देता है। (अर्थात् किसी व्यक्ति को लात मारने, दण्ड देने, सिर काटने आदि की सजा नहीं दी जाती थी)।

ooo

पाठ १८ : समुद्र-गमन

१. इसके बाद किसी एक समय में रात्रि व्यतीत होने पर समुद्रदत्त विचार करता है--'जो पिता के द्वारा कमाई हुई लक्ष्मी का उपभोग करता है वह अधम (निम्न) चरित्र वाला है।

२. उसके पढ़ने से क्या, बुद्धि से अथवा उसके गुण-समूह से क्या (लाभ) ?, जो कमाने में समर्थ होता हुआ भी पिता के द्वारा अर्जित धन को खाता है।

३. हाथ जोड़े हुए वह (समुद्रदत्त) माता एवं पिता के चरणों में नमनकर निवेदन करता है— 'मैं जल-मार्ग से बहुत-सा धन कमाकर आऊँगा।'

४. वे भी कहते हैं— 'हे पुत्र! हमारे घर में भी विपुल लक्ष्मी है। अतः हे पुत्र! तुम प्रतिदिन अपनी इच्छा से इसको ही भोगो।

५. तुम सैंकड़ों उपायों से प्राप्त एक मात्र ही हमारे पुत्र हो। सुखों से पालन किये गये तुम्हारे जैसों के लिए समुद्र-मार्ग किला (कठिन) है।'

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६. उसके बाद उत्साह से आनन्दित शरीर वाले समुद्रदत्त ने कहा— 'सरल अथवा कठिन (कार्य) धैर्यशाली पुरुषों के लिए क्या (बाधा) करता है ?'

७. 'पूर्वज व्यक्तियों के द्वारा कमाये हुए धन आदि को कौन (व्यक्ति) इच्छा से खर्च नहीं करता है ? किन्तु जो स्वयं के द्वारा अर्जित (धन का) उपभोग करते हैं वे उत्तम पुरुष कोई (विरले) ही होते हैं।'

८. 'अधिक कहने से क्या, जैसे-तैसे (भी हो) मुझे अवश्य जाना है।' उस प्रकार के निश्चय को जानकर उनके (माता-पिता) द्वारा किसी-किसी प्रकार से (उसे) भेज दिया गया।

९. समुद्र की पूजा करके, माता-पिता के चरणों में नमनकर एवं उनके द्वारा आशीष दिया हुआ (वह) सेठ-पुत्र जहाज में चढ़ गया।

१०. वणिक्-पुत्रों के साथ, अनेक चतुर मित्रों सहित (वह समुद्रदत्त) अनुकूल पवन के द्वारा (किसी) एक द्वीप में पहुँचा।

११. वहीं पर ही बेचने योग्य माल को मन में इच्छित लाभ द्वारा बेचकर (एवं) नये (माल) को लेकर उस समुद्रदत्त द्वारा (घर की ओर) जहाज रवाना कर दिया गया।

१२. जब तक कुछ रास्ते को (वह जहाज) गया तभी कालिया हवा उठी, बादल हो गये एवं दुष्ट व्यक्ति की तरह (तेज) आवाज से मेघ गरजा।

१३. गरीबी से दुखी व्यक्ति के मन की तरह जैसे ही जहाज डोलता है, मल्लाह लोग शीघ्र ही नीचे लंगर डाल देते हैं।

१४. आकुल-व्याकुल हृदयवाला (वह समुद्रदत्त) जब तक विशाल पाल को फैलाता है और जब तक बहुत सी आयुलताओं (मृत्यु से बचने के उपायों) को फैलाता है–

१५, तभी समुद्र के बीच में वह जहाज इच्छित रहस्य की तरह नष्ट हो गया। कोई (वहीं) मर गया तो कोई फलक (लकड़ी के पाटिये) को प्राप्त कर (समुद्र) पार हो गया।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१६. वह सेठ-पुत्र भी फलक को प्राप्त कर प्रियतम (मित्र) की तरह (उसका) सहारा ले लेता है और तैरता हुआ किसी-किसी प्रकार से गिरावर्त नामक पर्वत पर पहुँचता है। (और वह सोचता है—)

१७. 'पुरुषों के लिए आपत्ति ही कसौटी की तुलना को धारण करती हैं। इस (आपत्ति रूपी कसौटी) पर खरा उतरा हुआ जो (व्यक्ति) है, वास्तव में वही स्वर्ण की तरह खरा (शुद्ध) है।

000

पाठ १६ : गुरु-उपदेश

१. हे (मानव)! जीवों को मत मारो, (उन पर) दया करो, सज्जनों को अपमानित मत करो, क्रोधी मत होओ और दुष्टों में मित्रता मत रखो।

२. कुल का घमण्ड मत करो, दूर से ही धन के मद को त्याग दो, पाप में मत डूबो ज्ञान के प्रति वास्तविक रूप से सम्मान करो।

३. दूसरे दुखी लोगों पर मत हँसो, हमेंशा ही दीनों पर दया करो, सदा बड़ों की पूजा करो तथा इष्ट देवताओं की वन्दना करो।

४. परिजनों का सम्मान करो, प्रेमीजनों के प्रति उपेक्षा मत करो, मित्रजनों का अनुमोदन करो, यही सज्जनों का स्पष्ट (सरल) मार्ग है।

५. अनुकम्पा से रहित मत होओ, धूर्त (और) कृपा से रहित मत बनो, किन्तु संतोष करो, घमण्ड में स्थित मत होओ, (अपितु) दान में तत्पर बनो।

६. किसी की भी निन्दा मत करो, अपने गुणों को ग्रहण करने में संयमी होओ, अपनी प्रशंसा मत करो यदि निर्मल यश चाहते हो तो।

७. दूसरे के कार्य की निन्दा मत करो, अपने कार्य में वज्र के बने हुए की तरह (दृढ़) होओ (तथा) सम्पत्ति में नम्र होओ, यदि अपनी शोभा चाहते हो तो।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

८. यदि संसार में अच्छेपन की ध्वजा लेकर (चलना) चाहते हो तो लोगों को कडुआ मत बोलो और (उनके द्वारा) कडुआ बोले जाने पर भी मधुर (वचन) बोलो।

९. मजाक के द्वारा भी मर्म-वेधक और व्यर्थ के वचन मत बोलो। सच कहता हूँ— संसार में इससे (बड़ा कोई) दुर्भाग्य नहीं है।

१०. 'हे राजन्! शास्त्रों में, विद्वानों के वचनों में एवं धर्म में व्यसन (अभ्यास) तथा कलाओं में पुनरुक्त (बार-बार कथन) करो तब सज्जनों के बीच में गिनने के योग्य होओगे।

११. लोगों के दोष मात्र को मत ग्रहण करो, (उनके) विरले गुणों को भी प्रकाशित करो। (क्योंकि) लोक में घोंघों की प्रचुरता वाला समुद्र भी रत्नों की खान (रत्नाकर) कहा जाता है।

१२. जब तक (साहसी) पुरुष (कार्यों की तरफ अपना) हृदय (ध्यान) नहीं देते हैं तभी तक कार्य पूरे नहीं होते हैं। किन्तु (उनके द्वारा कार्यों के प्रति) हृदय लगाने से ही बड़े कार्य भी पूर्ण कर लिये जाते हैं।

१३. बर्फ की तरह शीतल एवं चन्द्रमा की तरह निर्मल सज्जन व्यक्ति पद-पद पर विचलित किये जाने पर भी उसके कारण से कोमल मृणाल के समान (अपने) स्नेहतन्तु को नहीं उखाड़ता है।

१४. निर्मल (चरित्र वाले) सज्जन पुरुषों के हृदय में थोड़ा भी अपमान क्षोभ उत्पन्न करता है। देखो, हवा से हलका धूलि का कण भी आँख को दुखाता है।

ooo

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २० ; शिक्षा-नीति*

१. जैसे एक दीपक से सैंकड़ों दीपक जलते हैं और वह दीपक (भी) जलता है (वैसे ही) दीपक के समान आचार्य (स्वयं ज्ञान से) प्रकाशित होते हैं तथा दूसरे को प्रकाशित करते हैं।

२. जिस की गुरु में भक्ति नहीं (है) तथा (जिसका गुरु के प्रति) अतिशय आदर नहीं (है, और) गौरव-भाव नहीं (है) तथा (जिसको गुरु से) भय नहीं (है), और प्रेम नहीं है, उसका गुरु के सान्निध्य में रहने से क्या लाभ?

३. अविनीत के अनर्थ (होता है) और विनीत के समृद्धि (होती है), जिसके द्वारा यह दोनों प्रकार से जाना हुआ (है), वह विनय को ग्रहण करता है।

४. अच्छा तो, जिन (इन) पाँच कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं की जाती है — अहंकार से, क्रोध से, प्रमाद से, रोग से तथा आलस्य से।

५. आलस्य के साथ सुख नहीं (रहता है), निद्रा के साथ विद्या (संभव) नहीं (होती है), आसक्ति के साथ वैराग्य (घटित) नहीं (होता है, तथा) जीव-हिंसा के साथ दयालुता नहीं (ठहरती है)।

६. हे मनुष्यो! तुम (सब) निरन्तर जागो (कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहो), जागते हुए (व्यक्ति) की प्रतिभा बढ़ती है, जो (व्यक्ति) सोता है (कर्त्तव्य के प्रति उदासीन है) वह सुखी नहीं होता है, जो सदा जागता है, वह सुखी होता है।

७. थोड़ा-सा ऋण, थोड़ा-सा घाव, थोड़ी-सी अग्नि और थोड़ी-सी कषाय (दुष्प्रवृत्ति भी) तुम्हारे द्वारा विश्वास किये जाने योग्य नहीं है, क्योंकि थोड़ा-सा भी वह बहुत ही होता है।

---

* यह अनुवाद 'समणसुत्तं - चयनिका' - डॉ० कमलचन्द सोगाणी की पुस्तक (पाण्डुलिपि) से लिया गया है। यह पुस्तक शीघ्र ही प्रकाश्य है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

८. क्रोध प्रेम को नष्ट करता है, अहंकार विनय का नाशक (होता है), कपट मित्रों को दूर करता है, लोभ सब (गुणों का) विनाशक (होता है)।

९. (व्यक्ति) क्षमा से क्रोध को नष्ट करे, विनय से ज्ञान को जीते, सरलता से कपट को तथा संतोष से लोभ को जीते।

१०. ज्ञानपूर्वक अथवा अज्ञानपूर्वक अनुचित कार्य को करने वाला (व्यक्ति) अपने को तुरन्त रोके (और फिर) वह उसको दुबारा न करे।

११. जो (व्यक्ति) कुटिल (बात) नहीं सोचता है, कुटिल (कार्य) नहीं करता है, कुटिल (वचन) नहीं बोलता है तथा (जो) अपने दोष को नहीं छिपाता है, उसके आर्जव धर्म होता है। (जीवन में सरलता होती है)।

१२. सत्य (बोलने) में तप होता है, सत्य (बोलने) में संयम होता है तथा शेष (अन्य) सद्गुण भी (पालित होते हैं)।

१३ क्रियाहीन ज्ञान निकम्मा (होता है तथा) अज्ञान से (की हुई) क्रिया भी निकम्मी (होती है। प्रसिद्ध है कि) देखता हुआ (भी) लंगड़ा (व्यक्ति) और दौड़ता हुआ (भी) अन्धा व्यक्ति (आपस के बिना सहयोग के आग में) भस्म हुआ।

१४ (आचार्य ऐसा) कहते हैं— (कि ज्ञान और क्रिया का) संयोग सिद्ध होने पर फल (प्राप्त होता है) क्योंकि (ज्ञान अथवा क्रियारूपी) एक पहिए से (कर्त्तव्य रूपी) रथ नहीं चलता है। (समझो) अन्धा और लंगड़ा वे दोनों जंगल में इकट्ठे मिलकर जुड़े हुए (आग से बचकर) नगर में गये।

१५. चरित्रहीन (व्यक्ति) के द्वारा अति अधिक रूप से भी पढ़ा हुआ श्रुत क्या (प्रयोजन) सिद्ध करेगा ? जैसे अन्धे (व्यक्ति) के द्वारा जलाए गए भी लाखों, करोड़ों दीपक (उसके लिए क्या प्रयोजन सिद्ध करेंगे ?)

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २१ : कुशल पुत्र

१. वसन्तपुर नगर में न्यायप्रिय लोगों में गौरव का स्थानरूप, अच्छे व्यवहार वाला नयसार नामक नगर-सेठ रहता था।

२-३. एक बार 'मेरे कुटुम्ब के पद के लिए उपयुक्त (पुत्र) कौन होगा।' इस चिन्ता से वह सेठ (अपने) तीनों पुत्रों की परीक्षा के लिए अपने स्वजन-बन्धुओं को और प्रमुख नागरिक जनों को (अपने) घर में निमन्त्रण देकर (तथा) विधि-पूर्वक भोजन कराकर उनके समक्ष कहता है—

४. 'मेरे इन तीनों पुत्रों में कुटुम्ब-पद के लिए योग्य कौन है?' (उसके द्वारा) ऐसा कहने पर उन्होंने कहा— 'तुम ही विशेष रूप से जानते हो- कौन योग्य है।'

५. 'यदि ऐसा है तो आपके समक्ष ही मैं (इनकी) परीक्षा करता हूँ।' ऐसा कहकर नागरिकों के समक्ष (उसने) उन तीनों पुत्रों को बुलवाया।

६. प्रत्येक-प्रत्येक (पुत्र) को सोने की लाख मुद्राएँ देकर व्यापार (करने) के लिए इनको उनके ही समक्ष विदेशों में भेज दिया।

७-८. तब उन पुत्रों में से एक पुत्र के द्वारा विचार किया गया— 'हमारे यह पिता धर्मप्रिय, अच्छा आचरण करने वाले और प्रायः दूरदर्शी हैं। प्राण-त्याग होने पर भी हमारे ऊपर कभी भी विपरीत नहीं सोचते हैं। अतः निश्चित ही यह (व्यापार को भेजना) किसी भी कारण (उद्देश्य) से होना चाहिए।'

९. इस प्रकार सोचकर उस (पुत्र) के द्वारा अपनी बुद्धि से किसी प्रकार से वैसा व्यापार किया गया कि जिससे वर्ष के अन्त में वह (मूल पूँजी) बढ़ा कर एक करोड़ कर ली गयी।

१०. दूसरे पुत्र के द्वारा यह सोचा गया कि 'मेरे पिता का पर्याप्त धन है। इसलिए कष्टों के जाल में (व्यापार में) अपने को व्यर्थ ही क्यों डालूँ?'

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

११. 'यदि सब कुछ ही मौज (खर्च) करलूँ तो वहाँ जाकर कैसे मुँह दिखाऊँगा ? इसलिए मूलधन को सुरक्षित रखकर शेष (मुनाफा आदि) को खा डालता हूँ। अधिक क्या सोचना ?'

१२. तीसरे अयोग्य पुत्र के द्वारा अपने मन में विचार किया गया कि— 'करोड़ों का स्वामी मेरा पिता बुढ़ापे के दोषों से युक्त हो गया है। जैसे कि—

१३. बुढ़ापे में मनुष्यों के प्रायः तृष्णा, लज्जा का नाश, भय की बहुलता. विपरीत बोलना आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

१४. अन्यथा वैभव (सम्पन्न) होते हुए (हमारे पिता) हम लोगों को विदेश में क्यों भेजते ?' ऐसा सोचकर वर्ष के अन्त तक (उसने) सब धन खा डाला (खर्च कर दिया)।

१५-१६. अपने निश्चित समय पर सभी (स्वजन) और वे वणिक्-पुत्र एकत्र हुए। फिर से उसी प्रकार सेठ के द्वारा भोजन आदि को कराकर स्वजन आदि के सामने प्रथम पुत्र को कुटुम्ब-पद पर, दूसरे (पुत्र) को भाण्डार-पद पर और तीसरे (पुत्र) को खेती आदि कार्यों में लगा दिया गया।

000

पाठ २२ : साहसी अगडदत्त

१. किसी एक दिन घोड़े पर चढ़ा हुआ वह राजपुत्र (अगडदत्त) बाहर के मार्ग से जा रहा था। तभी नगर में कोलाहल हो गया।

२. समुद्र की तरह क्या चला ? अथवा क्या भयंकर अग्नि जल उठी ? क्या शत्रु की सेना आ गयी ? अथवा क्या बिजली का दण्ड (वज्रपात) गिर पड़ा है ?

३. इसी बीच में अचानक आश्चर्य मन वाले कुमार के द्वारा सांकल सहित खम्भे को उखाड़कर आता हुआ पागल मद-हाथी देखा गया।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

४. महावत से रहित, सूँड के सामने आने वालों को मारता हुआ, मुख के सामने चलते हुए काल की तरह, अकारण क्रोधी,

५. पैर में बंधी हुई रस्सी को तोड़ता हुआ, भवनों, बाजारों और मंदिरों को चूर्ण करता हुआ प्रचंड वह हाथी क्षणमात्र में कुमार के सामने पहुँच गया।

६. उस प्रकार के रूप को धारण करने वाले उस हाथी और कुमार को देखकर नागरिक लोगों के द्वारा गंभीर स्वर से कहा गया— 'हाथी के रास्ते से हट जाओ। हट जाओ।'

७. सुन्दर गति से गमन करने वाले अपने घोड़े को छोड़कर कुमार के द्वारा इन्द्र के हाथी ऐरावत के समान वह हाथी ललकारा गया।

८. कुमार के शब्द को सुनकर मद-जल के प्रवाह को झराने वाला, क्रुद्ध यमराज की तरह वह हाथी कुमार की तरफ शीघ्र दौड़ा।

९. किन्तु प्रसन्नचित्त कुमार के द्वारा दुपट्टे को लपेटकर (उसे) दौड़ते हुए हाथी की सूँड़ के सामने फेंका गया।

१०. क्रोध से धम-धमाता हुआ (वह हाथी) दाँत से (कुमार पर) प्रहार करता है और वह कुमार उस हाथी के पिछले भाग पर दृढ़ मुष्टि के प्रहार से चोट करता है।

११, तब (वह हाथी) पलटता है, दौड़ता है, चलता है, लड़खड़ाता है तथा झुक जाता है। क्रोध से धम-धमाता हुआ वह चक्र-भ्रमण की तरह घूमता है।

१२. अति बहुत समय तक उस श्रेष्ठ हाथी को (कई चक्कर) खिलवाकर अपने वश में करके (वह कुमार) तभी उसके कन्धे पर चढ़ गया।

१३. और नगर के सभी लोगों के लिए मनोहर उस गज-क्रीडा को अन्तःपुर (रनिवास) के साथ राजा ने देखा।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१४-१५. वह राजा हाथी के कन्धे पर स्थित इन्द्र की तरह उस कुमार को देखकर अपने परिजनों को पूछता है— 'गुणों का खजाना, तेज से सूर्य एवं सौम्यता से चन्द्रमा की तरह, सभी कलाओं की प्राप्ति में कुशल, बुद्धिमान, वीर एवं रूपवान यह बालक (राजकुमार) कौन है ?' (उसे मेरे पास लाओ)।

६१. मयूर को कौन चित्रित करता है और राजहंसों की गति को कौन बनाता है ? कौन कमलों की सुगन्ध को तथा अच्छे कुल में उत्पन्न व्यक्ति की विनय को (कौन बनाता है)?

१७. गुच्छों के भार से धान्य के पौधे, पानी से मेघ, फलों के भार से वृक्षों के शिखर और विनय से सज्जन पुरुष झुक (नम्र) जाते हैं, किन्तु किसी के भय से नहीं झुकते हैं।

ooo

पाठ २३ : अहिंसा-क्षमा

१. अहिंसा-संयम-तपरूप धर्म सर्वोच्च कल्याण (होता है)। किसका मन सदा धर्म में (लीन है?), उस (व्यक्ति) को देव भी नमस्कार करते हैं।

२, जैसे जगत् में मेरुपर्वत से ऊँचा (कुछ) नहीं (है, और) आकाश से विस्तृत (भी कुछ) नहीं है, वैसे ही अहिंसा के समान (जगत् में श्रेष्ठ एवं व्यापक) धर्म नहीं है, (यह तुम) जानो।

३. सब ही जीव जीने की इच्छा करते हैं मरने की नहीं, इसलिए संयत व्यक्ति उस पीड़ादायक प्राणवध का परित्याग करते हैं।

४. जैसे तुम्हारे (अपने) लिए दुःख प्रिय नहीं है, इसी प्रकार (दूसरे) सब जीवों के लिए जानकर उचित रूप से सब (जीवों) से स्नेह करो (तथा) अपने से तुलना के द्वारा (उनके प्रति) सहानुभूति (रखो)।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

५. जीव का घात खुद का घात (होता है), जीव के लिए दया खुद के लिए होती है उस कारण से आत्म-स्वरूप को चाहने वालों (महापुरुषों) के द्वारा सब जीवों की हिंसा छोड़ी हुई (है)।

६. अहिंसा ही सभी आश्रमों का हृदय और सभी शास्त्रों का उत्पत्ति-स्थान (आधार), सभी व्रतों का सार (तथा) सभी गुणों का समूह (है)।

७. जो महापापी (व्यक्ति) क्षण मात्र के सुख के लिए जीवों को मारते हैं, वे राख (प्राप्ति) के लिए हरिचन्दन के वन-समूह को जलाते हैं।

८. भूसे के समान (सारहीन) उन करोड़ों पदों (शिक्षा-वाक्यों) को पढ़ लेने से क्या लाभ (है), जो इतना (भी) नहीं जाना (कि) दूसरे के लिए पीड़ा नही करनी (पहुँचानी) चाहिए।

९. मरण के भय से डरे हुए जीवों की जो निरन्तर रक्षा की जाती है, उसे सभी दानों में सिरमौर अभयदान जानो।

१०. जो दयायुक्त मनुष्य हमेशा जीवों के लिए अभय-दान देता है उस (व्यक्ति) के लिए इस जीवलोक में कहीं से भी भय उत्पन्न नहीं होता है।

११. क्षमा (गुण) से रहित (अन्य) सभी गुण सौभाग्य को प्राप्त नहीं होते हैं। जैसे-तारक समुदाय से युक्त (भी) रात्रि कलायुक्त चन्द्रमा के बिना (शोभा को प्राप्त नहीं होती है)।

१२. (मैं) सब जीवों को क्षमा करता हूँ, सब जीव मुझको क्षमा करें, मेरी सब प्राणियों से मित्रता [है], किसी से मेरा वैर नहीं है।*

000

* गाथा नं० १ से ५ एवं १२ का अनुवाद 'समणसुत्तं-चयनिका' - डॉ० कमलचन्द सोगाणी की पाण्डुलिपि से लिया गया है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २४ : अहिंसक बाहुबली

१. तक्षशिला में हमेशा से राजा भरत का विरोधी महान् बाहुबली (था)। वह उसकी आज्ञा के अनुसार सदा (उसे) प्रणाम नहीं करता था।

२-३. इसके बाद उसके ऊपर क्रोधी चक्रधर भरत) सम्पूर्ण साधनों से युक्त (तथा) समस्त सेना के साथ शीघ्र गति वाला (वह) नगर से निकला। 'जय' शब्द के उद्घोष की कलकल की आवाज (से युक्त) वह भरत तक्षशिला पुर को पहुँचा। (और) उसी क्षण युद्ध के लिए तैयार हो गया।

४. महान् बाहुबली भी आये हुए भरत राजा को सुनकर सुभटों के बड़े समूह के साथ तक्षशिला से निकला।

५. बल के घमण्ड से गर्वित (तथा) बजते हुए रणवाद्यों वाली दोनों सेनाओं का, नाचते हुए धड़ों से दर्शनीय भीषण मरण प्रारम्भ हुआ।

६. और (तब) बाहुबली के द्वारा भरत (को) कहा गया— 'लोगों के वध से क्या लाभ ? युद्धभूमि के बीच में (हम) दोनों का दृष्टि एवं मुष्टि द्वारा ही युद्ध हो जाय।'

७. तब इस प्रकार कहने मात्र पर (वे) दृष्टि-युद्ध लड़ने लगे। और चक्षु का प्रसार पहले भग्न करने वाला (पलक झपकाने वाला) भरत (बाहुबली के द्वारा) जीत लिया गया।

८-९. फिर अत्यन्त दर्प को धारण करने वाले, एक दूसरे की भुजाओं में गुथे हुए, चंचल पैरों की तीव्र गति से और हथेलियों को चतुराई से लड़ाने वाले, आधी (चमकी हुई) बिजली की जोत के बन्धन की तरह मारने के लिए उठे हुए हाथों के विपरीत दाँव-पेंच को बनाने वाले, न टूटने (झुकने) वाले (वे दोनों) महापुरुष आमने-सामने होकर [मुष्टि] युद्ध करते हैं।

१०. इस प्रकार (दूसरे) युद्ध में भी भुजाओं के बली (बाहुबली) द्वारा राजा भरत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीत लिये गये। तब अत्यन्त क्रोधी (भरत) उस (बाहुबली) के वध के लिए (उसके ऊपर) चक्र-रत्न को छोड़ता है।

११. जाकर (बाहुबली को) मारने में असमर्थ सुदर्शन (चक्र भरत के पास) वापस लौट गया। उसी क्षण बाहुबली को वैराग्य उत्पन्न हो गया।

१२. (बाहुबली) कहता है— 'आश्चर्य है, जो विषयों में लोभी (और) कषायों (दुष्प्रवृत्तियों) के वशीभूत पुरुष बिना विरोध (वैर) के भी एक दूसरे का अकाज (अनिष्ट) करते हैं।

१३. (जैसे व्यक्ति) राख के लिए चन्दन और डोरे के लिए मोती को नष्ट करते हैं, वैसे ही मानव-भोगों में मूढ मनुष्य (जीवन की) श्रेष्ठ उपलब्धियों को (तुच्छ वस्तुओं के लिए) नाश करते हैं।

000

पाठ २५ : कथा-वर्णन

१. वे चिन्तनशील सज्जनरूपी सूर्य सदा उत्कर्ष को प्राप्त करते हैं, जिनके संसर्ग में अच्छे अक्षर-समूह वाले (एवं) दोष से रहित कथा-काव्य कमल-समूह की तरह विकसित होते हैं।

दूसरा अर्थ : आकाश में विचरण करने वाले वे सूर्य सदा विजयी होते हैं, जिनके संसर्ग में अच्छे पत्तों के समूह वाले, रात्रि को न देखने वाले कमलवन विकसित होते हैं।

२. वह विजयी हो, जिसके द्वारा सज्जनों की तरह दुर्जन भी इस लोक में बनाये गये हैं; (क्योंकि) अंधकार के बिना चन्द्रमा की किरणें भी गुणोत्कर्ष को नहीं पाती हैं।

३. सज्जन की संगति से भी निश्चय ही दुर्जन की कालिमा (दुष्टता) दूर नहीं होती है। (क्योंकि) चन्द्रमण्डल के बीच में रहने वाला मृग भी काला ही (है)।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

४, उस (भूषण भट्ट) के तुच्छ बुद्धिवाले भी पुत्र कोऊहल के द्वारा यह लीलावई नामक (काव्य) रचा गया है। (उस) कथा-रत्न को सुनो —

५. चन्द्ररूपी सिंह के किरणरूपी अस्त्र (पंजे) से विदारित अंधकार रूपी हाथी के कुम्भस्थल पर फैले हुए नक्षत्ररूपी मुक्ताफल के प्रकाश वाली शरद ऋतु की रात्रि में (उस कथारत्न को सुनो—)

६. इस शरद से चन्द्रमा, चन्द्रमा से भी रात्रि, रात्रि से कुमुदवन, कुमुदवन से भी नदी-तट और नदी-तट से हंस-समूह शोभित होता है।

७ नये कमलनाल के कषैलेपन से विशोधित कंठ से निकले हुए मनोहर (स्वरवाले एवं) शरदरूपी लक्ष्मी के चरणों के नूपरों की आवाज की तरह हंसों का कलरव सुनो।

८, शीतलता से युक्त जल की तरंग के सम्पर्क से ठण्डा किया गया, (और) अर्द्ध विकसित मालती (पुष्प) की सुन्दर कली की सुगन्ध से उत्कृष्ट पवन बह रहा है।

९. दश दिशारूपी बन्धुओं के मुख पर तिलक-पंक्ति की तरह सरोवर के जल में स्वच्छ तरंगों में हिलते हुए वृक्षों वाली यह वनराजि भी शोभित हो रही है।

१०, पुण्य (पवित्र आचरण) के शासन की तरह, सुख-समूहों की जन्म-उत्पत्ति की तरह, आचारों का आदर्श (तथा) सदा गुणों के लिए अच्छे क्षेत्र की तरह (वह देश था)।

११. इस प्रकार के उस (प्रतिष्ठान) नगर में समस्त गुणों से व्याप्त शरीरवाला (एवं) संसार में अच्छी तरह विस्तृत यशवाला सातवाहन राजा (था)।

१२. जो वह (राजा) शरीर से रहित होते हुए भी समस्त अंगों व अवयवों से सुन्दर, सुभग (था) अर्थात् युद्धरहित होते हुए भी अमात्य आदि सभी राज्यागों से युक्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सौभाग्यशाली था)। कुरूप (दुर्लभ दर्शन वाला) होते हुए भी (वह) लोगों नयनों के लिए आनन्द उत्पन्न करने वाला था।

१३ कुपति (पृथ्वीपति) होते हुए भी (वह राजा) प्रियाओं के लिए प्रिय था तथा दूसरों के सामने झुका हुआ (नीति युक्त होता हुआ) भी (वह) साहसी था। तथा शत्रुओं से डरा हुआ (परलोक से भयभीत) भी वीर रस से युक्त (धर्म, दान आदि में वीर) था।

१४. सूर्य (वीर) होते हुए भी सात अश्वों वाला (भययुक्त) नहीं (था)। चन्द्रमा (कीर्ति युक्त) होते हुए भी नित्य कलंक से रहित (था)। सर्प (भोगी) होते हुए भी दो जीभवाला (दुर्जन) नहीं (था)। ऊँचा (स्वाभिमानी) होते हुए भी समीप से (सेवकों को) फल देने वाला था।

१५. जगत् में अपने तेज से संसार को आक्रान्त करने वाले एवं सुशोभित मंडलवाले चन्द्रमा की तरह जिस राजा की शत्रु लोगों के द्वारा पीठ (कभी) नहीं देखी गयी।

१६. जिस राजा के बिना अच्छे कवियों की चिरकाल से सोची गयी काव्य-कल्पनाएँ दुखी-जनों के मनोरथों की तरह हृदय में ही स्थिर रहती हैं (अर्थात् पूरी नहीं होती हैं)।

000

पाठ २६ : जीवन-मूल्य*

१. वह मित्र बनाए जाने योग्य होता है, जो निश्चय ही (किसी भी) स्थान पर (तथा किसी भी) समय में विपत्ति पड़ने पर दीवाल पर चित्रित पुतले की तरह विमुख नहीं रहता है।

---

* यह अनुवाद 'वज्जालग्गं में जीवन-मूल्य भाग १' – डॉ० कमलचन्द सोगाणी की पुस्तक (पाण्डुलिपि) से लिया गया है। उनकी यह पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२. स्नेह के लिए (इस जगत् में कुछ भी) अलंघनीय (कठिन) नहीं हैं; समुद्र पार किया जाता है, प्रज्वलित अग्नि में (भी) प्रवेश किया जाता है (तथा मरण) (भी) दिया जाता है (स्वीकार किया जाता है)।

३. तीनों लोकों में केवल अकेले चन्द्र-प्रकाश के द्वारा स्नेह व्यक्त किया जाता है (क्योंकि) जो (वह प्रकाश) क्षीण चन्द्रमा में क्षीण होता है (और) बढ़ते हुए (चन्द्रमा) में बढ़ता है।

४. किसी तरह किसी भी (स्नेही) के लिए किसी भी (स्नेही) के द्वारा देख लिये जाने से परितोष (आनन्द) होता है। इसी प्रकार सूर्य से कमल-समूहों का (स्नेह के अतिरिक्त और) क्या प्रयोजन, जिससे (वे) खिलते हैं ?

५. कुल से शील (चरित्र) श्रेष्ठतर है; तथा रोग से निर्धनता (अधिक) अच्छी है; राज्य से विद्या श्रेस्ठतर है; तथा अच्छे (श्रेष्ठ) तप से क्षमा श्रेष्ठतर है।

६. (उच्च) कुल से शील (चरित्र) उत्तम होता है, विनष्टशील के होने पर (उच्च) कुल के द्वारा क्या लाभ होता है ? कमल कीचड़ में पैदा होते हैं, किन्तु मलिन नहीं होते हैं।

७. जो (योग्य व्यक्ति की) इच्छा का अनुसरण करता है, (उसके) मर्म (गुप्त बात) का रक्षण करता है, (उसके) गुणों को प्रकाशित करता है, वह न केवल मनुष्यों का, (किन्तु) देवताओं का भी प्रिय होता है।

८. लवण के समान रस नहीं है, ज्ञान के समान बन्धु नहीं है, धर्म के समान निधि नहीं है. और क्रोध के समान वैरी नहीं है।

९. कार्य तेजी से करो, प्रारम्भ किये गए कार्य को किसी तरह भी शिथिल मत करो (क्योंकि) प्रारम्भ किये गए (तथा) फिर शिथिल किये गए कार्य सिद्ध (पूरे) नहीं होते हैं।

१०. खल-चरण में झुककर जो त्रिभुवन भी उपार्जित किया जाता है, उससे क्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाभ ? सम्मान से जो तृण भी उपार्जित किया जाता हैं, वह सुख उत्पन्न करता है।

११. यदि हंस मसाण (मरघट) के मध्य में रहता है (और) कौआ कमल-समूह में रहता है, तो भी निश्चित ही हंस, हंस है और बेचारा कौआ, कौआ ही (है)।

१२. जहाँ जय-लक्ष्मी रहती है, उस पुरुष की पूर्ण आदर से रक्षा करो। (क्योंकि) चन्द्र-बिंब के अस्त होने पर तारों द्वारा प्रकाश नहीं किया जाता है।

१३. जिस तरह राजा के आँगन में स्थित हाथी की महिमा (होती है, किन्तु) विन्ध्य पर्वत के शिखर पर (स्थित हाथी की महिमा) नहीं (होती है), उसी तरह (उचित) स्थानों पर गुण खिलते हैं।

१४. जो पुरुष गुणहीन हैं, वे मूढ़ (ही) कुल के कारण गर्व धारण करते हैं। (ठीक ही है) बाँस से उत्पन्न धनुष भी रस्सी (गुण) से रहित होने पर टंकार वाला नहीं (होता है)।

१५. बहुत बड़े वृक्षों के बीच में सर्प-दोष के कारण चन्दन की शाखा काट दी जाती है, जैसे अपराध रहित भद्र पुरुष दुष्ट-संग के कारण (कष्ट दिया जाता है)।

000

पाठ २७ : गाथा-माधुरी

१. वे सज्जन पुरुष विरले (दुर्लभ) हैं, जिनका स्नेह मुख की प्रसन्नता को नष्ट न करता हुआ (एवं) ऋण की तरह दिनों-दिन बढ़ता हुआ पुत्रों में संक्रान्त (प्राप्त) होता है।

२. स्नेह प्रदान के द्वारा पोषण किया जाता हुआ (भी) दुष्ट व्यक्ति जहाँ पर ही रहता है उस ही (आधार) स्थान को शीघ्रता से मलिन कर देता है, जैसे तेल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

से जलाया जाता हुआ (भी) दीपक अपने आधार (स्थान) को काला कर देता है।

३. गरमी की धूप से तपे हुए राहगीर के लिए अपनी छाया के समान, कंजूस आदमी की धन-समृद्धि होती हुई भी निष्फल ही (न होने के बराबर) होती है।

४. दुष्ट व्यक्ति में की जाती हुई ही मैत्री पानी में (खींची जाती हुई) लकीर की तरह नष्ट हो जाती है। किन्तु सज्जन (व्यक्ति) में की हुई वह (मैत्री) पत्थर की लकीर की तरह अमिट (हो जाती है)।

५. सज्जन (प्रथम तो) क्रोधित ही नही होता है, यदि क्रोधित होता है (तो) बुरा नहीं सोचता है। यदि (बुरा) सोचता है (तो बुरा) कहता नहीं हैं (और) यदि कहता है (तो उसके लिए) लज्जित होता है।

६. धन वह, जो हाथ में (हो), मित्र वह जो आपत्ति में (भी) अन्तर न लाये, वह सौन्दर्य (है), जहाँ गुण (हों और) वह विवेकपूर्वक ज्ञान है, जहाँ चरित्र हो।

७. अन्तिम अवस्थाओं (संकट की घड़ियों) में भी स्वाभिमानी (व्यक्ति) का हृदय ऊँचा ही रहता है। अस्त होने के समय में भी सूरज की किरणें ऊपर की ओर ही चमकती हैं।

८. हे माता! पक्षी भी परेशान हुए बिना अपना पेट भर लेते हैं। किन्तु आपत्तिग्रस्त (लोगों) का उद्धार करने वाले सज्जन व्यक्ति कोई-कोई ही होते हैं।

९. अधिक क्रोध से कलुषित भी सज्जन के मुखों से (बातों से) अप्रिय (वचन) कहाँ से (निकलेंगे)? राहु के मुख में भी चन्द्रमा की किरणें अमृत को छोड़ती हैं।

१०. वैभव से हीन सज्जन (व्यक्ति) अपमानित हुआ भी उस प्रकार से खिन्न नहीं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होता है, जिस प्रकार कि दूसरे से सम्मानित किया जाता हुआ भी (सम्मान का) बदला चुकाने के लिए असमर्थ होने से (दुःखी होता है)।

११. सज्जन पुरुष आपत्ति में घबराहट-रहित, सम्पत्ति में गर्व-रहित, भय में धैर्यशाली (और) अनुकूल (तथा) प्रतिकूल (परिस्थितियों) में एक समान स्वभाव वाले होते हैं।

१२. ईख और कुलीन व्यक्ति पीड़ित किये जाने पर (दबाने पर) भी रस (आनन्द) उत्पन्न करते हैं। (वे) जिह्वा में प्रिय (स्वाद, वचन) करते हैं (तथा) हृदय में शान्ति (शीतलता) करने के लिए होते हैं।

१३ शरद ऋतु में बड़े तालाबों के जल क्रोधित सज्जनों के हृदयों के समान बाहर से गरम और अन्दर से शीतल हो गये हैं।

१४. (गर्मी से) संतप्त भैंसा सांप को पहाड़ी झरना है, ऐसा (समझकर) जीभ से चांट रहा है (और) साँप भैंसे की लार को काले पत्थर का झरना है, ऐसा (समझता हुआ) पी रहा है।

१५. हे पथिक! देखो दोपहर में छाया भी धूप के भय से शरीर के नीचे छिपी हुई (है और) तनिक भी (बाहर) नहीं निकल रही है, तो (तुम भी) विश्राम क्यों नहीं कर लेते हो।

१६. उतना ही प्रेम दो (करो), जितना मात्र निभाना संभव हो। सभी व्यक्ति प्रेम या कृपा (प्रसाद) के कम होने से (उत्पन्न) दुःख को सहन करने में समर्थ नहीं (हैं)।

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २८ : बुद्धिमान रोहत

१. वहाँ (उज्जैनी) में अपने रूप से इन्द्र को जीतने वाला, घमण्डी राजाओं का दलन करने वाला, युद्ध में शत्रुओं को जीतने वाला जितशत्रु नामक राजा (है)।

२. और उस श्रेष्ठ नगरी के समीप में फैला हुआ, धन-धान्य से युक्त शिलाग्राम नामक (एक) गाँव है।

३. वहाँ नाटकों में कुशल, बुद्धिमान भरत नामक नट है। उसके अपनी बुद्धि से प्राप्त शोभा वाला रोहत नामक पुत्र है।

४. तब भरत सोचता है- देखो, बालकों की कैसी बातचीत (होती है)? और उसके बाद एक दिन पुत्र के साथ भरत उस उज्जैनी को गया।

५-६. वहाँ क्रय-विक्रय आदि करके अपने गाँव की तरफ आता हुआ वह (भरत) जब क्षिप्रा नदी के पास में पहुँचा तब उसने कहा— 'हे रोहत! बाजार के बीच में मेरी (एक सामान की) पुड़िया भूल गयी है। तुम ठहरो, जब तक मैं (उसे) लेकर वापिस लौटता हूँ।

७. ऐसा कहकर भरत के चले जाने पर तब बालकपने से उस रोहत के द्वारा क्षिप्रा नदी की रेत पर उज्जैनी (चित्र में) बना दी गयी।

८. इसी समय में सेना की धूलि के भय से आगे होकर घोड़े पर चढ़ा हुआ राजा जैसे ही वहाँ (चित्र के पास) आता है, तब रोहत के द्वारा वह रोका गया।

९. 'हे घुड़सवार! उज्जैनी के बाजार-मार्ग के बीच से जितशत्रु राजा के राजकुल को लांघकर आगे कैसे जा रहे हो?'

१०. तब आश्चर्यचकित राजा उससे पूछता है— 'हे भद्र! कहाँ है (यहाँ) उज्जैनी?' तब रोहत रेत पर बनी हुई (उज्जैनी) उसे दिखाता है —

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

११-१२. यहाँ बाजार-मार्ग, यहाँ राजकुल, यहाँ हस्तिशाला, यहाँ महल, यहाँ अश्व-शाला (है)। तब उसे देखकर उसके बुद्धि-वैभव से प्रसन्न हृदयवाला राजा मन में सोचता है— 'यह (रोहत) मेरे मन्त्रिमण्डल के शिरोमणि पद के (महा मन्त्री) योग्य है। ऐसा –

१३. सोचकर उसको इस प्रकार पूछता है— 'हे पुत्र! कहाँ के रहने वाले, किसके पुत्र हो?' (वह) कहता है— 'मैं शिलाग्राम में भरत का पुत्र हूँ।'

१४. उसकी श्रेष्ठ बुद्धि के वैभव को जानते हुए राजा नगर को गया। वह (रोहत) भी (वापिस) आये हुए पिता के द्वारा अपने गाँव में ले जाया गया।

१५. उसकी बुद्धि की श्रेष्ठता द्वारा आनन्द से भरा हुआ राजा एक बार क्षुद्र (बनावटी) आदेश के द्वारा (रोहत के पास, एक) मुर्गे को भेजकर कहता है—

१६, 'कि इस अकेले (मुर्गे) का लड़वाओ।' तब रोहत ने कहा— (उपाय बताया) कि उस मुर्गे को दर्पण में (उसके) प्रतिबिम्ब से लड़वाओ।

१७. राजा आदेश देता है कि— 'रेत की रस्सी बंटकर भेजो।' रोहत कहता है— 'नमूने के लिए पुरानी (रेत की) रस्सी को भेज दो।'

१८. इसके बाद राजा लगभग मरे हुए हाथी को भेजता है और कहलवाता है कि— (इसकी) मृत्यु के समाचार के अतिरिक्त प्रतिदिन ही (मुझे) हाथी का समाचार कहा जाना चाहिए।'

१९. वे (गाँव वाले) भी प्रतिदिन ही राजा को हाथी का वृतान्त कहते हैं। किन्तु एक दिन हाथी के मर जाने पर भरतपुत्र (रोहत) कहलवाता है—

२०. 'हे राजन! हाथी न चरता है, न चलता है, न साँस लेता है और न निश्वाँस लेता है, न पीता है, न देखता है, केवल (उसका) निश्चेष्ट शरीर स्थित है।'

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२१. तो राजा कहता हैं— 'अरे! क्या हाथी मर गया?' तब वे कहते हैं कि— 'स्वामी, (आप) ऐसा कह रहे हैं, हम नहीं।'

२२-२३. राजा ने कहा— 'अपने मीठे पानी के कुँए को भिजवाओ।' (उन्होंने कहा) 'हे देव! आपके समक्ष हमारा कुँआ अज्ञानी है। अतः आप अपने नगर के (चतुर) कुँए को भेजें, जिससे हे स्वामी! जिज्ञासु (हमारा कुँआ) उसके मार्ग के पीछे लगा हुआ (आपके पास) आ जायेगा।'

२४. किसी अन्य समय में— 'यहाँ जो (गाँव के पश्चिम में) वन-खण्ड है उसे पश्चिम से पूर्व दिशा में कर देना चाहिये।' (राजा के द्वारा ऐसा कहे जाने पर) उस रोहत के द्वारा गाँव को उजाड़कर (वन के पश्चिम में वसाकर) वह भी कर दिया गया।

२५. 'अग्नि एवं सूर्य के बिना भी खीर पकवाओ।' ऐसा क्षुद्र आदेश भेजे जाने पर (उस रोहत द्वारा) घूरे (की गर्मी) से खीर बनायी गयी।

२६. 'यह सब कुछ किसके द्वारा किया गया।' ऐसा पूछने पर 'रोहत ने किया' ऐसा उत्तर में कहे जाने पर प्रसन्न मनवाले राजा ने एक दिन बुलवाया (कि वह) मेरे पास आए।

२७. उस समय से राजा को उस रोहत में बहुत पक्षपात (प्रेम) हो गया। और बुद्धिगुण के द्वारा सबके ऊपर (उसे) मन्त्री स्थापित कर दिया गया।

ooo

पाठ २६ : जीवन-व्यवहार

१. ज्ञान का प्रकाश (ही सच्चा) प्रकाश (है। क्योंकि) ज्ञान के प्रकाश की (कोई) रुकावट नहीं है। सूरज थोड़े क्षेत्र को प्रकाशित करता है, (किन्तु) ज्ञान पूरे संसार को।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२. यदि अधिक न कर सको तो थोड़ा-थोड़ा ही धर्म करो। बूँद-बूँद से समुद्र बन जाने वाली महानदियों को देखो।

३. विनय से रहित व्यक्ति की सारी शिक्षा निरर्थक हो जाती है। विनय शिक्षा का फल है (और) विनय का फल सबका कल्याण है।

४. जल, चन्दन, चन्द्रमा, मुक्ताफल, चन्द्रमणि (आदि) मनुष्य को उस प्रकार सुखी नहीं करते हैं, जिस प्रकार अर्थयुक्त, हितकारी, मधुर और संयत वचन (सुखी करते हैं)।

५. जिस प्रकार गंधरहित पुष्प भी देवता का प्रसाद है, ऐसा मानकर सिर पर रख लिया जाता है उसी प्रकार सज्जन लोगों के बीच रहने वाला दुर्जन भी पूज्यनीय हो जाता है।

६. दुर्जन की संगति से सज्जन भी निश्चय ही अपने गुण को छोड़ देता है। जैसे जल अग्नि के संयोग से (अपने) शीतल-स्वभाव को छोड़ देता है।

७. सज्जन लोग (अपने गुणों को) वाणी से न कहते हुए कार्यों से प्रकट करने वाले होते हैं और अपने गुणों को न कहते हुए वे मनुष्य-लोक में ऊपर उठे हुए हैं।

८. नहीं कहने वाले भी मनुष्य के विद्यमान गुण नष्ट नहीं होते हैं। जैसे (अपने तेज का) बखान न करने वाले सूरज का तेज संसार में प्रसिद्ध है।

९. आत्म-प्रशंसा को हमेशा (के लिए) छोड़ दो, (अपने) यश के विनाश करने वाले मत बनो। क्योंकि अपनी प्रशंसा करता हुआ मनुष्य लोगों में तिनके के समान हल्का हो जाता है।

१०. वचन से (अपने) गुणों को जो कहना है, वह उन गुणों का नाश करना होता है और आचरण से गुणों का प्रकट करना उनका विकास करना होता है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

११. जो (व्यक्ति) दूसरे की निन्दाकर अपने को (गुणवानों में) स्थापित करने की इच्छा करता है, वह दूसरों के द्वारा कड़वी औषधि पी लेने पर (स्वयं) आरोग्य चाहता है।

१२ क्रोध से मनुष्य का अत्यन्त प्यारा व्यक्ति भी मुहूर्त (क्षण) भर में शत्रु हो जाता है। क्रोधी व्यक्ति के अनुचित आचरण से अत्यन्त प्रसिद्ध उसका यश भी नष्ट हो जाता है।

१३. घमण्डी व्यक्ति सबका वैरी हो जाता है। मानी व्यक्ति इस लोक और परलोक में कलह, भय, वैर, दुःख और अपमान को अवश्य ही प्राप्त करता है।

१४. अभिमान से रहित मनुष्य संसार में स्वजन और जन-सामान्य (सभी) को सदा प्रिय होता है और ज्ञान, यश, धन (आदि) को प्राप्त करता है तथा अपने कार्य को सिद्ध कर लेता

ooo

पाठ ३० : कवि-अनुभूति*

१. इस लोक में वे कवि जीतते हैं (सफल होते हैं), जिनकी वाणियों (काव्यों) में सफल अभिव्यक्ति विद्यमान (है। और इसलिए) यह जगत् या तो हर्ष से पूर्ण या तिरस्कार योग्य देखा जाता है।

२. स्वकीय वाणी के द्वारा ही निज के गौरव को स्थापित करते हुए जो निश्चय ही प्रशंसा प्राप्त करते हैं, वे महाकवि इस लोक में जीतते हैं (सफल होते हैं)।

---

* यह अनुवाद 'वाक्पतिराज की लोकानुभूति' - डॉ० कमलचन्द सोगाणी की पुस्तक (पाण्डुलिपि) से लिया गया है। उनकी यह पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

३. जिनके हृदय काव्यतत्त्व के रसिक होते हैं, उन (व्यक्तियों) के लिए निर्धनता में भी (कई प्रकार के) सुख होते हैं (तथा) वैभव में भी (कई प्रकार के) दुःख होते हैं।

४. लक्ष्मी की थोड़ी मात्रा भी उपभोग की जाती हुई शोभती है तथा सुखी करती है, किन्तु किंचित् भी अपूर्ण देवी सरस्वती (अधूरी विद्या) उपहास करती है।

५. दुर्जनों द्वारा कही हुई निन्दा सज्जनों को लगेगी अथवा नहीं लगेगी (कहा नहीं जा सकता), किन्तु वह (निन्दा) सज्जनों की निन्दा (से उत्पन्न) दोष के कारण उन (दुर्जनों) को (ही) घटित हो जाती है।

६. जिनके लिए असमान (व्यक्तियों) के द्वारा की गई प्रशंसा भी निन्दा के समान होती है, उनके मन को उन (असमान व्यक्तियों) के द्वारा की गई निन्दा भी खिन्न नहीं करती है।

७. अत्यधिक लोग सामान्य मतित्व के कारण उन (सामान्य कवियों) के ग्रहण (सम्मान) में प्रसन्नता पूर्वक (तत्पर रहते हैं)। इसलिए ही सामान्य कवि प्रसिद्धि को प्राप्त हुए।

८. दूसरे का छोटा गुण भी (महान् व्यक्ति को) प्रसन्न करता है, (किन्तु) उसे अपने बड़े गुण में भी संतोष नहीं (होता है)। शील और विवेक का यह, इतना ही सार है।

९. महापुरुषों के गुण सामान्य (व्यक्तियों) में भी प्रकट होते हैं, (किन्तु उनके गुणों द्वारा) सर्व प्रथम उत्तम आत्माएँ ग्रहण की गयी (हैं), जैसे चन्द्रमा की किरणें पहले पर्वत के ऊपर के भाग पर रुकी, (फिर) धरती पर।

१०. (स्व- पर के) कल्याण को सिद्ध करते हुए (मनुष्यों) के लिए समग्र (लोक) ही अधिक कल्याणकारी (हो जाता है)। उनके लिए कुछ इस प्रकार सिद्ध होता है, जिससे वे स्वयं भी आश्चर्य को प्राप्त करते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

११. (वास्तव में) महिमा में (और) गुणों के फल में (सम्बन्ध है, किन्तु) दुष्ट पुरुष (जो सोचते हैं कि) अगुणों के फल के द्वारा महिमाएँ बन्धी हुई (हैं; वे) गुणों (के अन्दर) से विपरीत उत्पत्ति को चाहते हैं।

१२. जैसे-जैसे इस समय गुण शोभायमान नहीं होंगे तथा जैसे-जैसे (इस समय) दोष फलेंगे, वैसे-वैसे जगत् भी अगुणों के आदर से गुण-शून्य हो जायगा।

१३. आश्चर्य! दुष्ट पुरुष नीच संगति में ही प्रसन्न होते हैं, (यद्यपि) सज्जन (उनके) निकट (होते हैं), वह निश्चय ही (दुर्जनों की) स्वेच्छाचारिता है कि रत्नों के सुलभ होने पर (भी उनके द्वारा) काँच ग्रहण किया जाता है।

१४. व्यवहार से ही मनुष्य के स्वाभाविक रंगरूप को देखो, (उसके) हृदय से क्या? मणियों के भी प्रकाश का उद्भव जो बाहर की ओर से (होता है) वह (उनके) टूटने पर (भीतर से) नहीं (होता है)।

ooo

पाठ ३१ : प्राकृत अभिलेख

६. इस श्रीभिल्लुक (राजा का) और दुर्लभ देवी (रानी) का महान् गुणों से गौरवशाली, शोभायुक्त कक्कुक नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

७. मन्द विकसित मुस्कान वाले, मधुर बोलने वाले, देखने में सौम्य, विनम्र (और) दीनतारहित जिस (कक्कुक) का क्रोध क्षणिक (और) मैत्री स्थिर (रहने वाली थी)।

८. जनता के कार्य (लोकहित) के अलावा (अन्य व्यर्थ के कार्यों में) जिस (राजा) के द्वारा (कभी) न बोला गया, न (कुछ) किया गया, न देखा गया, न याद किया गया, न (कहीं) ठहरा गया (और) न (कहीं) भ्रमण किया गया।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

९. माता की तरह जिस (राजा) के द्वारा अपने राज्य में सुखी, दुखी, निम्न वर्ग तथा श्रेष्ठवर्ग वाली सभी प्रजा सदा सुखपूर्वक धारण (पालन) की गयी।

१०. जिस (राजा) के द्वारा न्यायवर्जित विरोध, विघ्न, रागद्वेष, ईर्ष्या, लोभ आदि के द्वारा कभी भी न्याय निपटाने में भेद-भाव विशेष नहीं किया गया।

११. जिस (राजा) के द्वारा सज्जन लोगों को आदर (देकर) तथा समस्त जनता को संतुष्ट कर अपनी ईर्ष्या से उत्पन्न दुष्ट लोगों के लिए कठोर दण्ड (की व्यवस्था की गयी।

१२ जिस (राजा) के द्वारा धन-ऋद्धि से समृद्ध नागरिकों के लिए भी अपने राजस्व की (आय से) अधिक सैंकड़ों, लाखों (रुपये) बांटे जाते हुए देखा गया है।

१३, नव-यौवन, रूप-प्रसाधन और शृंगार-गुण की अधिकता से युक्त भी जिस (राजा) के द्वारा जनपद के लोगों में (अपने प्रति) निन्दा और निर्लज्जता को नहीं फैलने दिया गया।

१४. (वह कक्कुक राजा) बच्चों के लिए गुरु, युवकों के लिए मित्र तथा वयोवृद्धों के लिए पुत्र के समान (था)। जिसके द्वारा इस प्रकार के सुचरितों से हमेशा सभी जनता का पालन किया गया।

१५. जिस (राजा) के द्वारा नमन करते हुए, सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए और मधुर वाणी बोलते हुए (आश्रित) प्रणयीजनों को सदा धन-समूह और सम्मान दिया गया।

१६. मारवाड़, बल्लतमणी से घिरे हुए मध्य गुजरात आदि (देशों) में जिस (कक्कुक राजा) के द्वारा अपने सच्चरित गुणों से जनता के लिए अनुराग उत्पन्न कर दिया गया था।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ पर्वत में आग लगाकर और पल्लियों (बस्तियों) से गोधन लेकर जिसके द्वारा दुर्गम वट नामक मण्डल (प्रदेश) में आतंक उत्पन्न करा दिया गया था।

१८. तथा जिसके द्वारा श्रेष्ठ इच्छुओं (ईख) के पत्तों से आच्छादित यह भूमि नीलकमलों से सुगन्धित और माकन्द एवं मधूक वृक्षों से रमणीक कर दी गयी थी।

१९-२०. वि० सं० ९१८ चैत्र शुक्ला द्वितीया बुधवार को हस्त नक्षत्र में श्री कक्कुक ने अपनी कीर्ति की वृद्धि के लिए रोहन्सकूप नामक ग्राम में महाजनों, विप्र, व्यापारियों आदि सामान्य जनों से व्याप्त बाजार स्थापित किया।

000

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अपठित प्राकृत गाथाएँ

१. वीरभडपसंसा

णिव्वुब्भइ सोडीरं अप्पडिहत्थलहुओ हसिज्जइ पहरो।
वड्ढइ वेराबंधो अइसंधिज्जन्ति साहसेसु समत्था ॥१॥

ण पडइ पडिए वि सिरे सूलविहिन्ने पि णेअ भिज्जइ हिअअं।
दुप्परिइअं ण लग्गइ लाविज्जन्तं पि पडिभडाण रणभअं ॥२॥

अवहीरणा ण किज्जइ सुमरिज्जइ संसए वि सामिअसुकअं।
ण गणिज्जइ विणिवाओ दट्ठे वि भअम्मि संभरिज्जइ लज्जा ॥३॥

सीडोरेण पआवो छाआ पहरेहि विक्कमेहि परिअणो।
जीएण अ अहिमाणो रक्खिज्जइ अ गरुओ सरीरेण जसो ॥४॥

भिज्जइ उरो ण हिअअं गिरिणा भज्जइ रहो ण उण उच्छाहो।
छिज्जन्ति सिरणिहाआ तुंगा ण उण रणदोहला सुहडाणं ॥५॥

देंइ रसं रिउपहरो वहइ धुरं विक्कमस्स वेराबंधो।
आअड्ढिअरणरहसो दप्पं वड्ढइ आअओ अइभारो ॥६॥

साहेइ रिउं व जसं ण सहइ आआरिअं व कालक्खेवं।
लहइ सुहं मिव णासं जीअं मुअइ समुहं पहरणं व भडो ॥७॥

धारेन्ति जसस्स धुरं एन्तं ण सहन्ति विक्कमस्स पिहवं।
रोसस्स करेन्ति धिइं माणं वड्ढेन्ति साहसस्स समत्था ॥८॥*

---

* रावणवहो (सेतुबन्ध) – प्रवरसेन, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९३५ से उद्धृत। गाथानुक्रम आश्वास १३ की गाथा सं० १२, १३,१६, ३५, ३६, ४१, ४२ एवं ४६।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२. अणहिलवाडयपुर-वण्णणं

अत्थि मही-महिलाए मुहं महंतं मयंक-पडिबिम्बं ।
जंबुद्दीव-छलेण नहलच्छिं दट्ठुमुन्नमियं ॥१॥

तुंगो नासा-वंसो व्व सोहए तियस-पव्वओ जत्थ ।
सीया-सीयोयाओ दीहा दिट्ठीओ व सहन्ति ॥२॥

तत्थारोविय-गुण-धणु-निभं नलाडं व भारहं अत्थि ।
जत्थ विरायइ विउलो वेयड्ढो रयय-पट्टो व्व ॥३॥

जं गंग-सिंधु-सरिया-मुत्तिय-सरियाहि संगयं सहइ ।
तीर-वण-पन्ति-कुन्तल-कुलाव-रेहन्त-पेरन्तं ॥४॥

तत्थत्थि तिलय-तुल्लं अणहिलवाडय-पुरं धण-सुवण्णं ।
पेरन्त-मुत्तयावलिसमो सहइ जत्थ सिय-सालो ॥५॥

गरुओ गुज्जर-देसो नगरागर-गाम-गोउलाइण्णो ।
सुर-लोय-रिद्धि-मय-विजय-पंडिओ मंडिओ जेण ॥६॥

जम्मि निरंतर-सुर-भवण-पडिम-ण्हवणंबु-पूर-सित्त व्व ।
सहला मणोरह-दुमा धम्मिय-लोयस्स जायन्ति ॥७॥

अब्भंलिह-सुर-मंदिर-सिर-विलसिर-कणय-केयण-भुएहिं ।
नच्चइ व जत्थ लच्छी सुट्ठाण-निवेस-हरिस-वसा ॥८॥

जम्मि महापुरिसाणं धण-दाणं निरुवमं निएऊण ।
अजहत्थ-नामओ लज्जिओ व्व दूरं गओ धणओ ॥९॥*

---

* कुमारपालप्रतिबोध (सोमप्रभाचार्य) - प्र० सेन्ट्रल लायब्रेरी, बड़ौदा, १९२०, से उद्धृत । गाथानुक्रम-सर्ग-१ गाथा ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ४० एवं ४२ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

३. गोविया-विलावो

अहो समाअण्णिअ कण्ण-दूसहं पवास-वत्तं पदएस-केउणो।
गलुग्गलंतस्सु-जलुक्खदक्खरं विओअ-भीआ विलवन्ति गोविआ ॥१॥

अमुद्धअंदम्मि व संभु-मत्थए अकोत्थुहम्मि व्विव विण्हु-वच्छए।
अणंदए णंद-घरम्मि का सिरि हआ हआ हंत वअं व अंगणा ॥२॥

अणन्नणाहा अवि हा विहाअ णे घिणं विणा भत्ति गए विदालुणे।
तहिं जणे लग्गइ संपअं पि जं तमम्मकाणं खु मणं विणिदिअं ॥३॥

किमेत्थ अम्हे कुणिमो गुणुत्तरे जणे पिणद्धं जुवईण माणसं।
ण तीरए चारु-पसूण-सोरहे महीरुहे भिगउलं च कड्ढउं ॥४॥

पहाण-पाणाणि खु णो जणद्दणो स जेण दूरं गमिओ दुरप्पणा।
कअंत-दूओ च्चिअ सो समागओ ण कंस-दूओ त्ति मुणेह गोविआ ॥५॥

गओ स कालो गअ-गामिणी-अणा मणोरहाणं कुणिमो तिलंजलिं।
सुहस्स सव्वस्स वि मूल-कालणं जणो गओ जं जण-लोअणंजणो ॥६॥

इअ-प्पलावं पिअ-विप्पवासअ-प्पआम-सोआउरमंगणा-अणं।
मुउंद-वाआउ स गंदिणी-सुओ समागओ जंपइ किं पि साअरं ॥७॥

अहीरमाहीर-णिअंबिणी-अणा मुहा खु तुम्हे विलवेह वीहलं।
कहं णु वो मुंचइ चंचलेक्खणा खणं पि सो तुम्ह वसंवओ हरी ॥८॥

उसम्मि संमज्जइ साअरम्मि जो स साअमुम्मज्जइ किं ण चंदमो।
अलं विसाएण विलासिणीण वो गअस्स पच्चाअमणं ण दुल्लहं ॥९॥*

---

* कंसवहो (रामपाणिवाद) सं० - ए० एन० उपाध्ये, से उद्धृत। गाथानुक्रम-सर्ग १ गाथा ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ५१, ५५, ५६ एवं ५८।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

१. हेमशब्दानुशासन : आचार्य हेमचन्द्र, बाम्बे संस्कृत एण्ड प्राकृत सीरीज ६०, १९३६।

२. प्राकृतमार्गोपदेशिका : पं० बेचरदास दोशी, दिल्ली

३. पाइयसद्दमहाण्णव : प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, वाराणसी, १९६३

४. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन वाराणसी, १९६६

५. आख्यानमणिकोश : सं० - मुनि श्री पुण्यविजय, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, वाराणसी, १९६२

६. अभयक्खाणयं : सं०- डॉ० के० आर० चन्द्रा, सरस्वती पुस्तक भण्डार अहमदाबाद

७. वज्जलग्गं : सं० - प्रो० एम० वी० पटवर्धन, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, अहमदाबाद १९६९

८. कुम्मापुत्तचरियं : सं० - के० बी० अभ्यंकर

९. मुणिपइचरियं : सं० - आर० विलियम्स, रॉयल एशियातिक सोसायटी लन्दन, १९५९

१०. प्राकृत गद्य-पद्य-संग्रह भाग-११ : प्र० - गुजरातराज्य शाला पाठ्यपुस्तक मण्डल, अहमदाबाद, १९७९

११. सुरसुन्दरीचरियं : सं० - श्री राजविजय, जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला, वाराणसी, १९३६

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१२. पाइयकहासंगहो : सं० - पं० मानविजय, पं० श्रीकान्तविजय, जैनग्रन्थमाला, सूरत, १९५२

१३. कुवलयमालाकहा : सं० - डॉ० ए० एन० उपाध्ये, सिंघी जैन ग्रन्थमाला बम्बई, १९५९

१४. समणसुत्तं-चयनिका : सं० - डॉ० के० सी० सोगाणी (पाण्डुलिपि), १९८२

१५. प्राकृत कथा संग्रह : सं० - मुनि जिनविजय, गुजरात पुरातत्त्व मंदिर अहमदाबाद, वि० सं० १९७८

१६. पउमचरियं : सं० - हर्मन जैकोबी, मुनि पुण्यविजय, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, वाराणसी, १९६२

१७. लीलावइकहा : सं० - डॉ० ए० एन० उपाध्ये, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, बम्बई, १९६६

१८. वज्जालग्गं में जीवनमूल्य भाग-१ : सं० - डॉ० के० सी० सोगाणी (पाण्डुलिपि), १९८२ प्राकृत भारती जयपुर से प्रकाश्य

१९. गाहासत्तसई : सं० - डॉ० परमानन्द शास्त्री, प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ, १९६५

२०. अर्हत्प्रवचन : सं० - पं० चैनसुखदास, आत्मोदय ग्रन्थमाला, जयपुर १९७६

२१. वाक्पतिराज की लोकानुभूति : सं० - डॉ० के० सी० सोगाणी (पाण्डुलिपि), १९८२

२२. रावणवहो : सं० - पं० शिवदत्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९३५

२३. कुमारपालप्रतिबोध : प्र० - सेन्ट्रल लायब्रेरी, बड़ौदा, १९२०

२४. कंसवहो : सं० - डॉ० ए० एन० उपाध्ये, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, १९६६

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर

अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थ

१.	कल्पसूत्र सचित्र	: (मूल, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद तथा ३६ बहुरंगी चित्रों सहित) सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक: **महोपाध्याय विनयसागर**; अंग्रेजी अनुवादक: **डॉ० मुकुन्द लाठ**	२००-००
२.	राजस्थान का जैन साहित्य	: (राजस्थानी विद्वानों द्वारा रचित प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी भाषा के ग्रन्थों पर विविध विद्वानों के वैशिष्ट्य पूर्ण एवं सारगर्भित ३६ लेखों का संग्रह)	३०-००
३.	प्राकृत स्वयं-शिक्षक	: ले० - **डॉ० प्रेमसुमन जैन**	१५-००
४.	आगम-तीर्थ	: (आगमिक प्राकृत गाथाओं का हिन्दी पद्यानुवाद) अनु० - **डॉ० हरिराम आचार्य**	१०-००
५.	स्मरण-कला	: (अवधान कला सम्बन्धित पं० धीरजलाल टो० शाह लिखित गुजराती पुस्तक का हिन्दी अनुवाद) अनु०- **मोहन मुनि शार्दूल**	१५-००
६.	जैनागम दिग्दर्शन	: (४५ जैनागमों का संक्षिप्त परिचय) ले० - **डॉ० मुनि श्री नगराज**	सजिल्द २०-०० सामान्य १६-००
७.	जैन कहानियाँ	: ले०- **उपाध्याय महेन्द्र मुनि**	४-००
८.	जाति-स्मरण ज्ञान	: ले०- **उपाध्याय महेन्द्र मुनि**	३-००
९.	हाफ ए टैल (अर्धकथानक)	: (कवि बनारसीदास रचित स्वात्मकथा अर्धकथानक का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद, आलोचनात्मक अध्ययन एवं रेखा चित्रों सहित) सम्पादक एवं अनुवादक: **डॉ० मुकुन्द लाठ**	१५०-००

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१०. गणधरवाद	: (पं० दलसुखभाई मालवणिया लिखित गुजराती गणधरवाद का हिन्दी अनुवाद) अनु० प्रो० पृथ्वीराज जैन सम्पादक महोपाध्याय विनयसागर	५०-००
११. जैन इन्सक्रिप्सन ग्रॉफ राजस्थान	: (राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक एवं वैशिष्ट्य पूर्ण जैन शिलालेखों, मूर्तिलेखों का परिचयात्मक वर्णन) रामवल्लभ सोमानी	७०-००
१२. एग्जेक्ट सायन्स फ्रोम जैन सोर्सेज पार्ट । बेसिक मेथेमेटिक्स	: प्रो० लक्ष्मीचन्द जैन	१५-००
१३. प्राकृत काव्य-मंजरी	: डॉ० प्रेमसुमन जैन	१६-००
१४. महावीर का जीवन सन्देश-युग के सन्दर्भ में	: आचार्य काका कालेलकर	२०-००
१५. जैन पोलिटिकल थोट	: डॉ० जी० सी० पाण्डे	२५-००
१६. स्टडीज् ग्रॉफ जैनिज्म:	डॉ० टी० जी० कलघटगी	३५-००

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org